समर्पणता और सम्पूर्णता

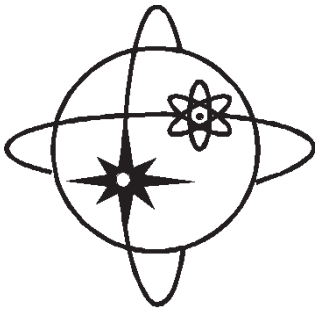

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप एवं बी.के महेश भाई, अकाउण्टस् आफिस, पाण्डव भवन, साकार एवं अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहे है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 85 से अधिक विषयों पर साकार एवं अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'समर्पणता और सम्पूर्णता'** एक है।

प्रस्तावना

सम्पूर्णता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है क्योंकि सम्पूर्णता, सम्पन्नता का आधार है और सम्पन्नता, सन्तुष्टता का आधार है तथा सन्तुष्टता, प्रसन्नता की जननी है। आत्मा की सम्पूर्णता ही पवित्रता है, जिसके लिए सभी आत्मायें पतित-पावन परमात्मा को याद करती हैं। सम्पूर्णता के लिए परमात्मा के प्रति समर्पणता अति आवश्यक है।

परमात्मा जब साकार में आते हैं तो जो भी आत्मायें आत्मायें उनको पहचान कर, उनके द्वारा दिये गये ज्ञान को समझकर अपने आत्म-कल्याण के लिए पुरानी देह और पुरानी दुनिया को भूलकर अर्थात् नष्टोमोहा बनकर उनके बनते हैं, वे सभी परमात्मा को समर्पित हैं अर्थात् समर्पण हैं परन्तु उन सबमें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होते ही हैं और जो जितना तन-मन-धन-जन, समय-संकल्प से समर्पण होता है, वह उतना ही उनसे अतीन्द्रिय सुख, पवित्रता, सुख-शान्ति का वर्सा पाता है और उसके आधार पर भविष्य में भी स्थूल सुख-साधनों को प्राप्त करता है। उस परमात्म-समर्पणता का ही फिर भक्ति मार्ग में यादगार चलता है, जिसके लिए भक्त सन्यास करते हैं, काशी-कलवट आदि खाते हैं। हम अपनी समर्पणता का पूरा लाभ उठायें, उसके लिए ही यहाँ कुछ विचार किया गया है, जिसके लिए परमात्मा ने भी मुरलियों में महावाक्य उच्चारे हैं। जब हमारी बुद्धि में वे सब महावाक्य और समर्पणता का महत्व होगा, तब ही हम अपने इस समर्पित जीवन को सफल बना सकेंगे।

समर्पणता और सम्पूर्णता

विषय-सूची

समर्पणता और सम्पूर्णता 10
समर्पणता और सम्पूर्णता का प्रतिरूप - ब्रह्मा बाबा
समर्पणता एवं परमात्म-समर्पणता
समर्पित जीवन
समर्पणता की परिभाषा और गुण-धर्म और विशेषतायें
समर्पणता के विभिन्न प्रकार 18
1. आध्यात्मिक जगत की समर्पणता
2. भौतिक जगत की समर्पणता
समर्पणता, आध्यात्मिकता और कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधन
1. आध्यात्मिक जगत की समर्पणता
अ. ज्ञान मार्ग की समर्पणता
ब. भक्ति मार्ग की समर्पणता
अ. ज्ञान मार्ग की समर्पणता 19
A. तन, मन, धन, जन के आधार पर समर्पणता,
B. स्थान,
C. कर्तव्य के आधार पर समर्पणता
D. स्थिति के आधार पर समर्पणता
A. तन, मन, धन, जन के आधार पर समर्पणता। इसमें 20
1. तन से समर्पण
2. मन से समर्पण
3. धन से समर्पण
4. जन से समर्पण और
5. तन-मन-धन-जन चारो से समर्पणता।
तन से समर्पणता 20
तन से समर्पण और कुमार-कुमारी जीवन
समर्पित जीवन और सौंदर्य प्रसाधन, सौंदर्य प्रदर्शन एवं फैशन
समर्पित जीवन और अंग-प्रदर्शन प्रवृत्ति
तन से समर्पित आत्माओं भी दो प्रकार के हो जाते हैं -
एक फुल कास्ट ब्राह्मण अर्थात् पूरे मरजीवा और
दूसरे हॉफ कास्ट ब्राह्मण अर्थात् आधे मरजीवा अर्थात् जो अभी तक पुराने सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मर रहे हैं।

पूरे मरजीवा में भी दो प्रकार के हो जाते हैं - 25
एक जो दैहिक सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मरजीवा और
दूसरे सम्बन्धियों के साथ-साथ पुराने स्वभाव-संस्कार से भी मरजीवा।
2. मन से समर्पण 26
3. धन से समर्पण
धन की सेवा
4. जन से समर्पित
5. तन-मन-धन-जन चारो से समर्पित।
B. स्थान के आधार पर समर्पणता में - 33
1. मधुवन निवासी,
मधुवन अर्थात पाण्डव भवन निवासी समर्पित
2. सेन्टर्स पर टीचर्स,
3. मधुवन में या सेवाकेन्द्रों पर समर्पित अन्य भाई-बहनें,
अ. यज्ञ की स्थूल सेवा के लिए समर्पित
ब. सेवाकेन्द्र पर रहते लौकिक सर्विस करते हुए समर्पित
स. यज्ञ में रहते, सेवा करते हुए यज्ञ से पैसा लेते
4. घर-गृहस्थ में रहने वाले ट्रस्टी भाई-बहनें
स्थान के आधार पर या तन से समर्पित होने के सम्बन्ध में नियम-संयम 48
Q. यज्ञ अर्थात् मधुवन में या सेवाकेन्द्र पर किसी घटना या व्यवहार के कारण कोई आत्मा कर्तव्य-विमुख, पथ-भ्रष्ट हो जाती है, यज्ञ की मर्यादा-विधि-विधान के विपरीत कोई अनैतिक कर्म करती है तो दोषी कौन? अर्थात् जो निमित्त बना या जो पथ-भ्रष्ट हुआ?
C. कर्तव्य के आधार पर समर्पणता 50
I. तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से समर्पित होकर एक परमात्मा और उसके कार्य में संलग्न
II. बाबा का बनकर या यज्ञ में समर्पित होकर तन-मन-धन, मन-बुद्धि से लौकिक सम्बन्धियों के हितार्थ कार्य करना।
III. गृहस्थ व्यवहार में रहते तन-मन-धन से बाप के साथ विश्व-कल्याण के कार्य में तत्पर।
IV. गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन अर्थात् ट्रस्टी जीवन
V. घर-गृहस्थ में लौकिक सम्बन्धियों के साथ रहते समर्पित जीवन, ?
VI. घर-गृहस्थ में लौकिक अर्थात् अज्ञानी सम्बन्धियों के साथ रहते समर्पित जीवन
D. स्थिति के आधार पर समर्पणता 61
1. समर्पित अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई
2. सेवाकेन्द्र पर रहते लौकिक सर्विस करते हुए समर्पित
3. यज्ञ में रहते, सेवा करते हुए यज्ञ से पैसा लेते हुए समर्पित
4. यज्ञ में समर्पित होते हुए भी धन्धा आदि करते हुए समर्पित
5. गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन अर्थात् ट्रस्टी जीवन
समर्पणता के प्रकार में ये विचार भी महत्वपूर्ण हैं

भय से समर्पित
स्वेच्छा से समर्पित
ब - भक्ति मार्ग की समर्पणता 64
A. देवताओं या परमात्मा के प्रति भक्ति-भावना से समर्पणता
B. सन्यास धर्म की समर्पणता
C. अन्य धर्म-सम्प्रदायों में समर्पणता - बौद्ध भिक्षु, नन्स, जैन साध्वी आदि
भक्ति-मार्ग की समर्पणता और ज्ञान मार्ग की समर्पणता मे अन्तर
समर्पणता का तुलनात्मक अध्ययन 66
समर्पणता और श्रीमत 68
समर्पित जीवन और निश्चयबुद्धि
निश्चय और समर्पित जीवन
समर्पणता और परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार
समर्पित जीवन के अधिकार और कर्तव्य 71
समर्पित जीवन और अन्धकारमय भविष्य की परिकल्पना
समर्पित जीवन और भविष्य की चिन्ता
समर्पित होने वाली आत्मा के गुण-धर्म और शक्तियाँ
समर्पित करने वाले के गुण-धर्म, शक्तियाँ और विशेषतायें
समर्पित जीवन के नियम-संयम और मर्यादायें 77
समर्पणता और टी.वी., बाइसकोप देखना, वाह्य पठन-पाठन आदि
ब्रह्मचर्य व्रत का पालन
खान-पान की शुद्धि
नित्य ज्ञान-स्नान और योग स्नान
समर्पणता और भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति
समर्पणता और संग्रह-वृत्ति
समर्पणता का परिणाम अर्थात् फल
संगमयुग की समर्पणता और सतयुगी जीवन का सम्बन्ध
Q. शाही परिवार और प्रजा-परिवार में मूलभूत अन्तर क्या होगा?
समर्पणता और समर्थ स्थिति 83
समर्पणता और व्यर्थ एवं समर्थ
समर्पणता और योग
परमात्म-समर्पणता और नष्टोमोहा-स्मृति लब्धा स्थिति
Q. योग की सफलता में समर्पणता क्या स्थान है? समर्पणता से योग की सफलता है या योग की सफलता से समर्पणता की सफलता है?
समर्पित जीवन की गरिमा और प्राप्तियाँ
समर्पित जीवन और विश्व-नाटक के गुण-धर्म और विशेषतायें
समर्पणता और एकनामी-एकॉनामी स्थिति 88

समर्पणता और गीत-कवितायें
समर्पणता और फोटो
समर्पणता और बैज
समर्पणता और हमारा कोट ऑफ आर्म्स
समर्पणता और चित्र एवं चित्रों की लिखत आदि
समर्पित जीवन और स्थूल-सूक्ष्म दान-पुण्य
समर्पित जीवन और दानी, महादानी एवं वरदानी 100
समर्पणता और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया
समर्पित जीवन और प्राकृतिक आपदायें
समर्पणता और जीवन का अभीष्ट लक्ष्य
सम्पूर्णता - सम्पन्नता - सन्तुष्टता - प्रसन्नता
परमात्मा के प्रति समर्पित जीवन की कसौटी
समर्पणता और सम्पूर्णता में सम्बन्ध 107
सम्पूर्णता का राज़ समर्पणता
समर्पणता, सम्पूर्णता और समानता
समर्पणता और सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता में सम्बन्ध
समर्पणता और सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता एवं बाप समान स्थिति 111
समर्पणता और आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख
समर्पणता और हिसाब-किताब
संगमयुग की समर्पणता और सतयुगी जीवन का सम्बन्ध
समर्पणता और महारथी एवं आदि रतन
समर्पणता और बाप की शिक्षा का स्वरूप
समर्पणता और आपघात - महापाप
समर्पणता और जीवघात
समर्पणता और मरजीवा जीवन 117
समर्पणता और जीते जी मरना
समर्पणता और आशुक-माशुक
समर्पणता और शमा-परवाने
समर्पणता और सेवा 120
समर्पणता, सुख और साधन-सम्पत्ति
समर्पित आत्मा की प्राप्तियाँ और अनुभव
तन-मन-धन-जन समय अर्थात् आवश्यकता के समय पर समर्पित करने और साधारण समय में समर्पित करने के फल का निर्णय
समर्पित आत्मा की प्राप्तियाँ और अनुभव
समर्पणता और सफलता
समर्पणता एवं यम-नियम 131

समर्पणता का विधि-विधान
समर्पणता के विधि-विधान को समझकर जो समर्पित होते हैं, उनका ही समर्पित जीवन सफल होता है।
समर्पणता का लौकिक विधि-विधान
समर्पणता का अलौकिक विधि-विधान अर्थात् यज्ञ के नियम-संयम
सर्पणता का यथार्थ ज्ञान और उस पर पूरा निश्चय - जो परमात्मा को पहचान कर उनके बनते हैं, उनको अपना जीवन सदा ही सफल अनुभव होता है।
समर्पणता, परमात्मा का वर्सा, परमात्मा की छत्रछाया, परमात्मा का सहयोग
समर्पणता का दर्पण
प्रश्नोत्तरी अर्थात समर्पणता और विचारणीय प्रश्न 123
समर्पित जीवन के लिए बाबा के विविध महावाक्य

समर्पणता और सम्पूर्णता

समर्पणता अर्थात परमात्म-समर्पणता। समर्पणता और सम्पूर्णता का घनिष्ट सम्बन्ध है। सम्पूर्णता अर्थात् बाप समान सम्पन्न स्थिति और समर्पणता अर्थात् देह सहित देह की दुनिया को भूल कर तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय-स्वांस, संकल्प से परमात्मा का बन जाना और जो परमात्मा का बनता है, उसको परमात्मा के द्वारा समानता और सम्पूर्णता का अनुभव अवश्य होता है अर्थात् परमात्मा उसको देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव अवश्य कराता है, जिसमें वह परमानन्द का अनुभव करता है। फिर जो तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय-स्वांस, संकल्प से सदा समर्पित रहता है, वह सदा ही सम्पूर्णता, समानता, सम्पन्नता की स्थिति में रहता है, जिसके फलस्वरूप वह सदा ही अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का अनुभव करता है। जैसे प्यारे ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्ण और सर्वंश सहित अपना तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय-श्वांस, संकल्प समर्पण किया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने सदा परमानन्द का अनुभव किया और सर्व को कराया, जिसका अनुभव हम सभी जो उनके सम्पर्क में आये या आते थे, वे उसका अनुभव करते थे।

''पवित्र बनने बिगर वैकुण्ठ में कैसे जा सकेंगे ? बहादुर बनना चाहिए। इसलिए ही शिवशक्ति सेना नाम है। शिवबाबा के साथ योग लगाने से शक्ति मिलती है। ज्ञान की अच्छी रीति धारणा होने के बाद फिर समर्पण होना है। ज्ञान की धारणा नहीं होगी, नष्टोमोहा नहीं होंगे तो माया फथकायेगी।''

सा.बाबा 15.7.08 रिवा.

समर्पणता और सम्पूर्णता का प्रतिरूप - ब्रह्मा बाबा

समर्पित जीवन का प्रतिरूप ब्रह्मा बाबा है, जिन्होंने आदि से ही अपना तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय, स्वांस, संकल्प सब परमात्मा को समर्पित कर दिया और समर्पित होने के बाद उन सबके प्रति अंशमात्र भी कोई आकर्षण उनमें नहीं दिखाई अर्थात् उनमें किसी के प्रति संकल्प भी नहीं गया। उस समर्पण के फलस्वरूप ही उनका मन पूर्ण रूपेण परमात्मा में लग गया अर्थात् वे मन्मनाभव हो गये। सदा ही उनसे सम्पूर्णता और सम्पन्नता की झलक दिखाई देती रही।

विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार जो जितना समर्पित होता है, वह उतना ही परमपिता परमात्मा की अनुकम्पा अर्थात् ब्लिस का पात्र बनता है और जो जितना परमात्मा की ब्लिस का का पात्र बनता है, वह उतना ही अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है और जो

जितना अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है, वह उतना ही सम्पन्नता का अनुभव करता है, जिसके फलस्वरूप वह सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करता है, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। उतना ही प्रकृति उसकी दासी बनती है।

समर्पित जीवन क्या है, उसके विधि-विधान क्या है, नियम-संयम क्या है, वह शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के जीवन से और यज्ञ की मुख्य-मुख्य भाई-बहनों की जीवन शैली से स्पष्ट किया है अर्थात् क्या करना है और क्या नहीं करना है, वह सब करके दिखाया है।

''अब तुमको भी गोरा बनना है, ऊंच पद पाने के लिए। ऊंच पद कैसे पाना है, वह तो बाप ने समझाया है कि फॉलो फादर। जैसे इसने सब-कुछ बाप के हवाले कर दिया। इस फादर को देखो कैसे सब कुछ दे दिया। ... इनको ही फिर नम्बरवन राजा बनना है। यही बहुत भक्ति करते थे, भक्ति का फल भी पहले-पहले इनको ही मिलना चाहिए। बाप दिखलाते हैं बच्चों को कि देखो यह कैसे मेरे पर वारी गया। सबकुछ दे दिया।''

सा.बाबा 18.06.09 रिवा.

''आज बापदादा विशेष मधुवन निवासी बच्चों से मिलने आये हैं। एक-एक बच्चे को देखकर बापदादा खुश हो रहे हैं क्योंकि ये विशेष समर्पण ग्रुप है। समर्पण अर्थात् ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण अर्पण। जैसे ब्रह्मा बाप ने पहचान मिली और समर्पण हो गये। सम्बन्ध-सम्पर्क, संस्कार, तन-मन-धन से समर्पण हो गये। तो आप सभी भी समर्पण गाये जाते हो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''ईश्वर अर्थ देते हैं। क्या ईश्वर कंगाल है, जो उनको देते हैं। समझते हैं - ईश्वर के नाम पर गरीबों को देंगे तो ईश्वर उसके एवज़ में देंगे। दूसरे जन्म में मिलता जरूर है। कहते हैं - दे दान तो छूटे ग्रहण। इस बाप ने अपना सबकुछ शिवबाबा को दे दिया, शरीर, मित्र-सम्बन्धी आदि सब कुछ शिवबाबा को समर्पण कर दिया।''

सा.बाबा 8.03.09 रिवा.

''अब सम्पूर्ण मूर्त बनने के लिए क्या लक्ष्य सामने रखेंगे?... साकार में सम्पूर्ण लक्ष्य तो एक ही है ना। उसने कर्मातीत बनने के लिए क्या लक्ष्य रखा? किन-किन बातों में सम्पूर्ण बनें? सम्पूर्ण शब्द कितना विशालता से धारण किया, यह मालूम है?... सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बनें।''

अ.बापदादा 29.6.70

''जो जितनी प्राइज़ बाप को देते हैं, उतनी फिर बाप से लेते भी हैं। पहले-पहले इसने प्राइज़ दिया ... इस दादा ने अपना सब कुछ दिया है, इसलिए वह फुल प्राइज़ लेते हैं। कन्याओं के पास तो कुछ है नहीं। यदि माँ-बाप उनको कुछ देते हैं तो वे फिर शिवबाबा को दे सकती हैं।

जैसे मम्मा गरीब थी फिर देखो कितनी तीखी गई है, तन-मन-धन से सेवा कर रही है।''

सा.बाबा 29.12.08 रिवा.

''ब्राह्मण जिन्होंने स्वर्ग बनाने में बहुत मदद की है, उनकी पूजा होती है, उनकी माला बनी हुई है। यह नॉलेज बुद्धि में रहनी चाहिए। यह भी जानते हो कि यज्ञ में बरोबर आहुति दी जाती है। माताओं की उन्नति के लिए बाबा ने युक्ति रची है। यह बलि चढ़ा ना, तो फॉलो फादर। ... इस बाबा ने सब कुछ माताओं के चरणों में दे दिया तो यह वन नम्बर वना।''

सा.बाबा 30.12.08 रिवा.

''बाप समझाते हैं - बच्चे, तुम अगर बीज नहीं बोयेंगे तो तुम्हारा पद कम हो जायेगा। फॉलो फादर। तुम्हारे सामने यह दादा बैठा है। इसने बिल्कुल ही शिवबाबा और शिव-शक्तियों को ट्रस्टी बनाया। ... इनको माताओं पर बलि चढ़ना पड़े। माताओं को ही आगे करना है। बाप आकर ज्ञान अमृत का कलष माताओं को ही देते हैं कि वे मनुष्य को देवता बनायें।''

सा.बाबा 22.12.08 रिवा.

समर्पणता एवं परमात्म-समर्पणता

परमात्मा पिता जब इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं, तो जो भी आत्मायें, उनको पहचान कर, उनके बनते हैं, देह और देह की दुनिया से बुद्धियोग हटाकर उनके बताये हुए मार्ग पर चलने लगते हैं, वे सभी समर्पित आत्मायें हैं क्योंकि उनकी भक्ति मार्ग की भटकना बन्द हो जाती है, कलियुगी दुनिया की आकर्षण समाप्त हो जाती है और उनमें परमात्मा, परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के प्रति श्रृद्धा-भावना जागृत हो जाती है, जिससे वे परमात्मा के द्वारा बताये गये नियम-संयम पर चलने का संकल्प करते हैं। ऐसी सभी आत्मायें जो पुरानी दुनिया और पुरानी दुनिया के कर्म-काण्डों से बुद्धियोग निकाल कर परमात्मा के बनते हैं, वे सभी समर्पित आत्मायें हैं, परन्तु उन समर्पित आत्माओ में विभिन्न श्रेणियाँ अवश्य होती हैं, जिसको बाबा नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कहकर सम्बोधित करता है। परमात्मा पिता ने सम्पूर्ण समर्पणता का ज्ञान भी दिया है, उसका विधि-विधान भी बताया है और उदाहरणार्थ ब्रह्मा बाबा के जीवन से उसका प्रत्यक्ष स्वरूप भी दिखाया है। सम्पूर्ण समर्पणता अर्थात् जिसमें समर्पण होने वाले का अपना कुछ भी न रह जाये।

''सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन, सम्बन्ध और समय सब में समर्पण। अगर मन को समर्पण कर दिया तो ... मन समर्पण अर्थात् मन सिवाए श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे। इसलिए ही मन्मनाभव का मुख्य मन्त्र है। ... मन समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प-

विकल्पों को समर्पण करना। यही परख है सम्पूर्ण परवाने की।''

अ.बापदादा 3.10.69

''सब कहते हैं शिवबाबा हमारा वारिस है, हम उनके वारिस हैं क्योंकि हम उन फिदा हुए हैं। जैसे बाप बच्चों पर फिदा हो सारी प्रॉपर्टी उनको दे खुद वानप्रस्त में चले जाते हैं। यहाँ तुम समझते हो हम बाबा के पास जितना जमा करेंगे, वह सेफ हो जायेगा। ... तुम जानते हो यह सब विनाश हो जायेंगे और तुम सारे विश्व के मालिक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 20.05.09 रिवा.

''बाप के बने हो तो पेट के लिए तो मिलेगा ही, शरीर निर्वाह के लिए बहुत मिलेगा। ... बाप आकर सबको पापात्मा से पुण्यात्मा बनाते हैं। इसमें पाप करने, झूठ बोलने की कोई दरकार नहीं है। ... बाप कहते हैं - मुझे याद करने से तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे।''

सा.बाबा 30.06.09 रिवा.

''इसमें बिल्कुल लाइन क्लीयर हो। एक बाप की ही याद रहे और कुछ भी याद न आये। इसको कहा जाता है पवित्र बेगर। यह शरीर भी याद न रहे।... अभी यह नाटक पूरा होता है, अब हमको वापस घर जाना है।''

सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''बापदादा ने जन्मते ही हर बच्चे को तीन बढ़िया सौगातें दी हैं।... ताज, तिलक और तख्त। ... फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कराकर लाइट का ताज दिया, दिल का तख्त दिया और स्मृति का तिलक दिया। बिन्दु हैं और बिन्दु रहेंगे। ... बापदादा ने दिल तख्त बैठने के लिए दिया ... परन्तु नीचे उतर जाते हैं।''

अ.बापदादा 22.04.09

''इसने भी अर्पण किया ना। तन भी सच्ची सेवा में लगा दिया। माताओं के आगे अर्पण कर उन्हें ट्रस्टी बना दिया। माताओं को आगे बढ़ाना है।... माताओं पर बलि चढ़ना पड़े। बाप कहते हैं - बन्दे मातरम्।''

सा.बाबा 27.12.08 रिवा.

''यह ज्ञान सागर की महफिल है, जिसको मनुष्य इन्द्र की महफिल अर्थात् इन्द्रसभा कहते हैं। ... यहाँ परवाने बैठे हैं जीते जी इनके बन जाने अर्थात् पुरानी दुनिया से मर जाने के लिए। ... सर्विस में तत्पर वे होंगे, जो शमा पर पूरा फिदा हुए होंगे।''

सा.बाबा 20.9.08 रिवा.

''जितना नष्टोमोहा बनेंगे, उतना ही स्मृति स्वरूप बनेंगे। स्मृति को सदा कायम रखने के लिए साधन है नष्टोमोहा बनना। नष्टोमोहा बनने का सहज साधन है बाप को सर्व समर्पण करना। ... हम निमित्त हैं, चलाने वाला जैसे चलावे, वैसे हमको चलना है।''

अ.बापदादा 24.1.70

''जितना स्वयं को बाप के आगे समर्पण करते हैं, उतना ही बाप भी उन बच्चों के आगे समर्पण होते हैं अर्थात् जो बाप का खज़ाना है, वह स्वत: ही उनका बन जाता है। ... समर्पण करना और कराना, यही ब्राह्मणों का धन्धा है।''

अ.बापदादा 24.1.70

''दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए पहले अपने को परिवर्तन में लाओ। अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति, सम्पत्ति, समय को परिवर्तन में लाओ।... शास्त्रों में आपकी यादगार में बताते हैं 'सम्पूर्ण समर्पण' किसने और किसको कराया और कितने में कराया ?... वामन अवतार बाप ने आकर माया बली, जो बलवान है, उससे तीन पैर में सभी कुछ लिया अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण कराया।''

अ.बापदादा 28.11.69

समर्पित जीवन

प्राय: जो सेवाकेन्द्रों पर या मधुबन में रहते हैं, उनको ही समर्पित कहा जाता है परन्तु समर्पित जीवन का भाव-अर्थ बहुत विस्तृत और गुह्य है, जो परमात्मा ने अनेक बार बताया है। स्थूल में यज्ञ में या सेवाकेन्द्रों पर रहना अर्थात् समर्पित होना तो समर्पित जीवन का एक अंग है अर्थात् अंश है, वह भी स्वमान की बात है परन्तु यथार्थ में समर्पित शब्द बहुत विस्तृत है, जिसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में महावाक्य उच्चारण किये हैं। समर्पित जीवन अर्थात् तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क, समय, स्वांस, संकल्प सब के साथ समर्पित होना। परमात्मा के ज्ञान को पाकर उनकी सेवा में समर्पित हो जाना सबसे श्रेष्ठ जीवन है परन्तु समर्पित होकर इस जीवन की महानता, दिव्यता सदा बुद्धि में रहे और हमारे पुरुषार्थ की लाइन सदा क्लियर रहे, हमारे जीवन में कोई असुरक्षा का संकल्प भी जाग्रत न हो, पुरुषार्थ ढीला न हो, कोई भी ऐसा कर्म न हो, जो समर्पित जीवन की मर्यादा के विपरीत हो, परमात्मा की श्रीमत के विपरीत हो, ये जीवन सदा सफल हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। समर्पित जीवन अर्थात् स्वांस, समय, संकल्प, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सब परमात्मा की श्रीमत के अनुसार हो। समर्पित होने के बाद यदि बुद्धि लौकिक सम्बन्धों में भटकती है, तो वह यथार्थ समर्पित जीवन नहीं है और वह कभी समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं कर सकता है। बाबा कहते हैं - वे और ही पाप के भागी बन जाते हैं क्योंकि वे यज्ञ में रहकर यज्ञ का वातावरण खराब करते हैं।

समर्पित होना कोई त्याग नहीं है लेकिन समर्पित होना अर्थात् अपना तन-मन-धन, संमय-संकल्प सब सफल करना अर्थात् जब समर्पित हुए तो हमारा सबकुछ सफल हो गया।

बाबा ने हमारा तन-मन-धन यज्ञ में स्वीकार कर लिया, ये बड़ी शान है।
सब कुछ समर्पण किया अर्थात् सफल हुआ, स्वाह हो गया ... हम अपना तन-मन-धन सफल कर रहे हैं, हमारा व्यर्थ नहीं जा रहा है। ... ज्ञान-अज्ञान में क्या अन्तर है, वह अन्तर करना चाहिए ... जो सदा ज्ञान के चिन्तन में रहता है, उसके आगे कब कोई प्रॉब्लम नहीं है और न हो सकती है। दादी जानकी 11-06-09

''बलिहार अर्थात् सर्वन्श समर्पित। चाहे देहभान में लाने वाले विकारों का वंश हो, चाहे देह के सम्बन्ध का वंश, चाहे देह के विनाशी पदार्थों की इच्छाओं का वंश।... मधुबन में रहना, सेन्टर पर रहना तो समर्पण की एक सीढ़ी है लेकिन समर्पण की मंजिल है तीनों ही वंश सहित अर्पित।'' अ.बापदादा 27.12.87

''चाहे प्रवृत्ति में हो, चाहे सेन्टर पर हो लेकिन दिल से कहा - 'मेरा बाबा' तो बाबा ने अपना बनाया। यह दिल का सौदा है। मुख का स्थूल सौदा नहीं है। सरेण्डर माना श्रीमत के अण्डर रहने वाले।'' अ.बापदादा 20.3.87

''पूरा देही-अभिमानी तब बनेंगे जब कम्पलीट सरेण्डर होंगे।... यह देह भी जैसे कि मेरी नहीं है, इनको मैं छोड़ देता हूँ। ... मेरा बन और सब से ममत्व मिटा दो।... बाप सिर्फ एक्सचेन्ज करते हैं। बुद्धि से सब कुछ सरेण्डर करो।''

सा.बाबा 27.6.06 रिवा.

''तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण। ... मुख्य बात है ही मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों को समर्पण करना। ... जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना नहीं करेंगे, तब तक समर्पण नहीं हुए।'' अ.बापदादा 3.10.69

''जो बलि चढ़ जाता है, उसको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है। ... खुद को बदलकर औरों को बदलना है, यह है निश्चय की छाप।''

अ.बापदादा 28.9.69

''अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए।... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता।... अव्यक्त मिलन का अनुभव भी वही कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।''

अ.बापदादा 17.5.69

''आज वतन से दर्पण लाया है, सभी का अर्पणमय मुखड़ा देखने के लिए और दिखाने के लिए। ... समर्पण किसको कहा जाता है? ... उसमें तीन बातें देख रहे हैं। एक स्वभाव

समर्पण, दूसरा देह-अभिमान का समर्पण और तीसरा सम्बन्धों का समर्पण।''

अ.बापदादा 14.5.70

''जो जैसा कर्म करते हैं वह भोगते हैं। ड्रामा में नूँध है। बाबा यह भी समझाते हैं कपड़े आदि कुछ भी चाहिए तो शिवबाबा के यज्ञ से लो। और कोई से लेंगे तो वह याद आयेगा, तुम्हारा नुकसान हो जायेगा। इसमें लाइन बहुत क्लीयर होनी चाहिए क्योंकि अभी हम वापस जा रहे हैं। ऐसा न हो कहीं दिल लग जाये और तकदीर बिगड़ जाये।''

सा.बाबा 14.12.69 रिवा.

''भल सरेण्डर हैं परन्तु जब तक पुण्यात्मा बन औरों को न बनायें तब तक ऊंच पद पा नहीं सकते। ... कल्याणकारी जरूर बनना है।'' सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

यज्ञ में धन समर्पण करने वालों के लिए - समर्पण अर्थात् अपनापन निकल जाये, कब पुन: वापस लेने का संकल्प न आये, कब ये न आये कि हम शिवबाबा को देते हैं। सदा बुद्धि में रहे कि हम शिवबाबा से लेते हैं अर्थात् शिवबाबा हमको कई गुणा करके देते हैं।

''समर्पित अर्थात् न हद का मैंपन और न हद का मेरापन। ... एक साक्षी-दृष्टा बनकर अपने आपको सर्टीफिकेट दो, दूसरा जिन साथियों के साथ कार्य करते हो उनका सर्टीफिकेट चाहिए और तीसरा दादियों का सर्टीफिकेट चाहिए। चौथा बाप का चाहिए क्योंकि बाप सबके मन की गति को देखते हैं।'' अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

''मधुवन का हीरो एक्टर है, सदा जीरो याद है।... दादियों की विशेषता - बाप की श्रीमत पर हर कदम उठाना, मन को भी बाप की याद और सेवा में समर्पण करना। ... मन का झण्डा शिवबाबा में एकाग्र हो जाये।'' अ.बापदादा 03.02.06 दादी जी से

''कदम-कदम पर सर्जन से राय लेनी है। किसको लौकिक घर से कुछ मिलता है, वह बाबा को बताते हैं तो बाबा कहते - भल पहनों, फिर रेस्पॉन्सिबुल बाबा हो गया। ... श्रीमत पर चलने में हर हालत में फायदा है।'' सा.बाबा 29.3.06 रिवा.

''अभिमान को ही स्वमान समझ लेते हो लेकिन इस अल्पकाल की विजय में बहुत काल की हार समाई हुई है।... इसलिए देहाभिमान के अंशमात्र सहित समर्पित हो। इसको कहा जाता है शिव बाप के ऊपर बलि चढ़ना।'' अ.बापदादा 1.3.92

''समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जायें। ... इसलिए ये अभ्यास करो कि जिस समय जो चाहें वह स्थिति हो। नहीं तो धोखा मिल जायेगा। ... सेवा का भी संकल्प नहीं। अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं तो रूलिंग पावन आ नहीं सकती।''

अ.बापदादा 13.12.89

समर्पणता की परिभाषा और गुण-धर्म और विशेषतायें

समर्पणता अर्थात् देह सहित अपना कुछ भी न रहे। जो है सो जिसको समर्पण किया, उसका हो गया। समर्पण करने के बाद उनकी श्रीमत के अनुसार सोचे, करे, देखें और व्यवहार करे।

विभिन्न धर्मों में जो सन्यास की प्रवृत्ति है, विधि-विधान है, वह समर्पणता का ही प्रतिरूप है। यथा - सन्यास मार्ग में सन्यास करना, जैन धर्म में जैन साधु-साध्वी, बौध धर्म में बौद्ध भिक्षु आदि आदि। ये सभी परमात्मा को जाने-अन्जाने उसके प्रति समर्पण होते हैं। जो, जिसके प्रति समर्पण होता है, वह उसके गुण-शक्तियों की महानता को समझकर ही समर्पित होता है और आशा रखता है कि उसके प्रति श्रृद्धा-भावना रखने में ही उसका कल्याण है। दुनिया में अनेक समय पर भय से भी समर्पण करना होता है परन्तु वह समर्पण होना अलग बात है और परमात्मा के प्रति समर्पणता अलग बात है। परमात्मा के प्रति समर्पणता में प्यार होता है, महान प्राप्ति नीहित होती है।

भक्ति मार्ग की समर्पणता अन्धश्रृद्धा से होती है, वह भी शुभ संकल्प से ही होती है, इसलिए उसका परिणाम शुभ ही होता है परन्तु अल्पकालिक होता है। वह सब होते भी आत्मा की उतरती कला ही होती है। अभी परमात्मा आया हुआ है और उसने अपना, हमारा और इस विश्व-नाटक का ज्ञान देकर सारा अनुभव कराया है, इसलिए ये ज्ञान-सहित समर्पणता है, इसका फल दीर्घ काल के लिए है और इससे आत्मा की चढ़ती कला होती है।

''कहते - नर से नारायण बनते हैं। पहले नारायण बनेंगे या कृष्ण? पहले नारायण थोड़ेही बनेंगे, पहले तो प्रिन्स श्रीकृष्ण बनेंगे ना। बच्चा तो फूल होता है, वह तो फिर भी युगल बन जाते हैं। महिमा ब्रह्मचारी की होती है। छोटे बच्चे को सतोप्रधान कहा जाता है।... गाया भी जाता है- बेगर टू पिन्स।... आत्मा को पूरा बेगर बनना है, सब कुछ छोड़ना है, फिर प्रिन्स बनेंगे।''

सा.बाबा 9.06.09 रिवा.

''आत्मा जानती है - हम आत्मा हैं, शिवबाबा के बच्चे हैं, बाबा हमको घर ले चलने के लिए आये हैं। यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। भल कहाँ भी हो लेकिन बाप की याद में रहो। ... भल नम्बरवार हैं लेकिन सब शिवबाबा को याद जरूर करते हैं, और संग तोड़ एक संग जोड़ने वाले तो सब होंगे। और कोई की याद नहीं रहती होगी। अन्त तक ये अवस्था रहे।''

सा.बाबा 7.05.09 रिवा.

''सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् जो भी माया का बल है, वह सभी कुछ त्यागना है। माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना है। ... मन-वचन-कर्म तीन बातें हैं, जिनमें

सम्पूर्ण समर्पण हो जाता है और समर्पण वाली आत्मा को ईश्वरीय बल मिलता है। एक तो देह सहित सभी सम्बन्धों का त्यागकर मामेकम् याद करो। ... मुख से सदैव रतन निकलें ... और कर्मणा के लिए सदा याद रहे कि जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सभी करेंगे तथा हम जो करेंगे सो पायेंगे।''

अ.बापदादा 28.11.69

समर्पणता के विभिन्न प्रकार

समर्पणता का महत्व प्राय: सभी धर्म-सम्प्रदायों में है क्योंकि समर्पणता ही आध्यात्मिक उन्नति की आधार शिला है। सभी धर्मों और सम्प्रदायों में जो समर्पणता का विधि-विधान है, उसका आधार अर्थात् बीज संगमयुग पर परमात्मा के प्रति समर्पणता ही है। बाबा ने कई बार कहा है कि भक्ति मार्ग में या सारे कल्प में जो विधि-विधान यादगार रूप में चलते हैं, उन सबका बीज संगमयुग पर परमात्मा के द्वारा ही पड़ता है। ऐसे ही इस समर्पणता का भी है। संगमयुग पर हम आत्मायें ब्रह्मा तन में पधारे परमात्मा को जानकर उनके प्रति समर्पित होते हैं, उनके द्वारा चलाये गये कार्य की सम्पन्नता के प्रति समर्पित होते हैं, भक्ति मार्ग में आत्मायें मुक्ति की इच्छा रखकर अपने गुरुओं को निमित्त बनाकर समर्पित होते हैं। समर्पणता पर विचार करें तो अनेक प्रकार की समर्पणता होती है, जिसमें -

1. आध्यात्मिक जगत की समर्पणता
2. भौतिक जगत की समर्पणता

1. आध्यात्मिक जगत की समर्पणता

अ. ज्ञान मार्ग की समर्पणता

ब. भक्ति मार्ग की समर्पणता

यहाँ हम ज्ञान मार्ग की समर्पणता अर्थात् परमात्म-समर्पणता पर विचार करेंगे, अन्य प्रकार के समर्पित जीवन के विषय में संक्षिप्त रूप से द्वितीय अध्याय में विचार करेंगे।

भक्ति मार्ग में भी विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों में भी समर्पणता का विधि-विधान है परन्तु उसमें यथार्थ ज्ञान न होने से भावना और अन्धश्रृद्धा से समर्पित होते हैं। उस अन्धश्रृद्धा से भी समर्पित होने वाले अपने संकल्प की दृढ़ता से निर्संकल्प, निर्भय, निश्चिन्त, निर्विकारी, निराकारी स्थिति को प्राप्त करते हैं या उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं और उसके कारण अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते हैं परन्तु उनकी वह अनुभूति ज्ञान मार्ग के अपेक्षाकृत अल्पकाल के लिए होती है। वे भी परमात्मा के नाम पर ही समर्पित होकर त्याग-तपस्या करते हैं, उसका ही उनको फल मिलता है। उनकी उस समर्पणता के कारण उनका मान होता है,

महिमा होती है, गायन होता है। भक्ति मार्ग में समर्पण होने वालों को परमात्मा के नाम पर फल मिलता है और ज्ञान मार्ग में डॉयरेक्ट परमात्मा से मिलता है, इसलिए इस समर्पणता में चढ़ती कला का राज़ समाया हुआ है क्योंकि परमात्मा नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना करने के लिए आते हैं।

समर्पणता, आध्यात्मिकता और कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधन

आध्यात्मिक जीवन में सौदर्य प्रसाधनों का क्या महत्व है, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और यज्ञ में करके भी दिखाया है। हम यज्ञ में रहकर कितना उनका प्रयोग कर रहे हैं, वह भी विचारणीय है। यथा बालों को बनाना, आई-ब्रो को बनाना, बाल काले करना आदि-आदि का आध्यात्मिक जीवन में क्या महत्व है, यह भी विचारणीय है। अन्य धर्मों में अपनी आध्यात्मिक उन्नति का लक्ष्य लेकर जो समर्पित होते हैं, उनके जीवन में भी कुछ ऐसी ही विशेषतायें हैं, जिसके कारण उनका मान होता है और वे अपने जीवन में विशेषता का अनुभव करते हैं। जैसे जैन साध्वी, सन्यासी आदि-आदि।

अ. ज्ञान मार्ग की समर्पणता

ज्ञान मार्ग की समर्पणता अर्थात् परमात्मा को जानकर उनके प्रति समर्पित होना अर्थात् समर्पित-भाव धारण करना। ज्ञान मार्ग में भी समर्पणता के विधि-विधान और परमात्मा के महावाक्यों को ध्यान में रखें तो देखते है कि उसमें भी अनेक प्रकार के समर्पण हैं।

ज्ञान मार्ग में समर्पित जीवन की श्रेणियां अर्थात् प्रकार

सभी आत्माओं के पास तन-मन-धन-जन चार प्रकार की सम्पत्ति है, जिसका समर्पण करना होता है और उसके समर्पण के आधार पर समर्पणता की विभिन्न श्रेणियाँ बन जाती हैं। बाबा भी हर बात में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कहते हैं और यह वैरायटी विश्व-नाटक है, इसमें हर बात में नम्बरवार पुरुषार्थ के आधार पर हर आत्मा में भिन्नता अवश्य होती है। वह भिन्नता समर्पणता में भी है। समर्पणता की श्रेणी का निर्णय करने में समर्पण करने वाले की भावना और विधि का विशेष महत्व है। जिसके लिए बाबा ने कहा है - एक परवाने होते हैं शमा फिदा होने वाले, दूसरे हैं फेरी पहन कर फिदा होने वाले और तीसरे हैं फेरी पहन कर बाद में फिदा होने वाले। बलि के विषय में भी बाबा ने कहा है - एक बलि होती है झाटकू, दूसरी में बलि होने वाला चिल्लाता है। ये सब इस समर्पणता के विधि-विधान का ही गायन है।

A. तन, मन, धन, जन के आधार पर समर्पणता। इसमें -

B. स्थान, स्थिति और कर्तव्य के आधार पर समर्पणता

समर्पणता और उससे प्राप्त होने वाले फल में में समर्पण करने वाले की भावना और उसके विधि-विधान का विशेष महत्व है। एक ही प्रकार के समर्पित वस्तु या व्यक्ति का फल उसकी भावना और विधि-विधान के आधार पर पदमगुणा मिलता है तो किसी को साधारण ही मिलता है। जिसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा भी है कि गरीब के एक रुपये का फल और साहूकार के हजार रुपया देने पर भी दोनों को फल समान मिलता है क्योंकि गरीब अपनी सामर्थ अनुसार भावना से देते हैं और साहूकार अपनी सामर्थ से कम देते हैं और दिखावे की भी भावना रखते हैं।

A. तन, मन, धन, जन के आधार पर समर्पणता। इसमें -
1. तन से समर्पण
2. मन से समर्पण
3. धन से समर्पण
4. जन से समर्पण और
5. तन-मन-धन-जन चारो से समर्पणता।

1. तन से समर्पणता

तन से समर्पण अर्थात् लौकिक कार्य-व्यवहार छोड़कर, सम्बन्धों से छुट्टी लेकर यज्ञ में रहकर यज्ञ सेवा के लिए समर्पित होना। वास्वत में तन के साथ मन का गहरा सम्बन्ध है और जहाँ तन जाता है, वहाँ मन भी जाता ही है परन्तु कभी-कभी तन कहाँ रहते भी मन इधर-उधर भागता रहता है। तन से समर्पण होने में तन से समर्पणता प्रधान होती है, मन की समर्पणता गौण होती है।

यदि कोई तन से समर्पित हो जाता है और उसका मन बाहर की दुनिया में अर्थात् साधन-सम्पत्ति में, लौकिक सम्बन्धियों में तो वह तन से तो समर्पित है लेकिन उसको मन से समर्पित नहीं कहा जायेगा। मन से समर्पित होने वाले का मन सदा ही एक परमात्मा और उनके द्वारा रचे यज्ञ की सेवा में लगा रहेगा।

ऐसे ही यदि कोई तन से समर्पित हो गया और वह लौकिक में प्राप्त धन यज्ञ में नहीं लाया, उसको लौकिक सम्बन्धियों के लिए ही छोड़ दिया तो वह तन से तो समर्पित है लेकिन धन से समर्पित नहीं है और उसका वह धन जैसे कार्यों में लगेगा, जैसे व्यक्तियों के उपयोग में आयेगा, उसके फल का भागी भी वह बनेंगा। वह धन भी उसके मन-बुद्धि को खींचता रहेगा। ऐसे ही यदि कोई तन से समर्पित हो गया लेकिन उसका मन-बुद्धि लौकिक सम्बन्धियों से नहीं

हटी तो वह तन से समर्पित है लेकिन जन से समर्पित न होने के कारण वे लौकिक सम्बन्धी उसको खींचते रहेंगे और जो वह यज्ञ में तन से सेवा करके भाग्य बना सकता, वह नहीं बना पायेगा।

तन से समर्पित होने में भी कोई तो यज्ञ की साधन सुविधाओं को देखकर समर्पित हो जाते हैं, कोई नौकरी या कमाने आदि की झंझटों से छूटने के लिए समर्पित हो जाते हैं। कन्यायें भी शादी आदि करने, बच्चों आदि को जन्म देने-पालना करने की झंझट से बचने के लिए समर्पित हो जाती हैं परन्तु कोई परमधाम से विश्व-कल्याणार्थ अवतरित हुए परमात्मा को पहचान कर, उनके कार्य में सहयोगी बनने के लिए समर्पित होते हैं। तो कोई विश्व की आत्माओं के दुख-दर्द को देखकर द्रवित होकर, उनको दुख-दर्द से मुक्त कराने में सहयोगी बनने के लिए समर्पित होते हैं। तन से समर्पित होने वाली इन सब प्रकार की समर्पित आत्माओं का फल उनकी भावना के आधार पर मिलता है।

''आत्मा ही पुण्यात्मा-पापात्मा बनती है। इस समय सब पापात्मा हैं। तुमने बहुत पुण्य किया था, बाप के आगे तन-मन-धन सब समर्पण किया था।... अभी तुम पापात्मा से पुण्यात्मा बन रहे हो। शिवबाबा को तन-मन-धन बलि देते हो। इसने भी अर्पण किया ना। तन भी सच्ची सेवा में लगा दिया।''

सा.बाबा 27.12.08 रिवा.

तन से समर्पण और कुमार-कुमारी जीवन

परमात्मा के प्रति समर्पण होने के लिए कुमार-कुमारी जीवन अति सहज और श्रेष्ठ है क्योंकि कुमार-कुमारियों को गृहस्थी का बन्धन नहीं होता है, युवा जीवन होता है, इसलिए परमात्मा के पास अर्थात् यज्ञ में रहकर अधर कुमार-कुमारियों की अपेक्षा अच्छी सेवा कर सकते हैं। इसलिए यज्ञ में तन से समर्पित होने वालों में कुमार-कुमारियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। बाबा भी कुमार-कुमारियों की महिमा करता है। कोई कुमार-कुमारी यज्ञ में तन से समर्पित होकर, मन से भी समर्पित रहता है तो वह बहुत उन्नति कर सकता है। तन-मन-धन-जन-समय से समर्पित होने वालों में कुमार-कुमारियां ही अधिक हैं।

''कुमारियों को मधुवन अच्छा लगता है, बाप से प्यार भी है लेकिन समर्पण होने में सोचती हैं। जो स्वयं ऑफर करता है, वह निर्विघ्न चलता है और जो कहने से चलता है, वह रुकता है, फिर चलता है। ... सोचती हैं - इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है।''

अ.बापदादा 5.12.89

''कुमारियां सोचती हैं इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है। जो समर्पण के महत्व को जानते हैं, वे सदा ही अपने को कई बातों से किनारे होकर आराम से आ गये हैं। ... टीचर्स अपने महत्व को अच्छी रीति जानती हो ना!''

अ.बापदादा 5.12.89

''श्रेष्ठ कुमारियां श्रेष्ठ काम करेंगी ना! सबसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे बाप का बनाना। ... तो अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो।''

अ.बापदादा 17.5.83

''अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में, न भविष्य में पास रह सकेंगी। एक संगदोष तीनों लोकों से दूर हटा देता है। एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों के तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो।''

अ.बापदादा 11.6.71

''तुम कुमारियों को कितना नाम बाला करना चाहिए। तुमने श्रीमत पर राजाई स्थापन की थी। ... इस कब्रिस्तान से दिल नहीं लगानी है। हम तो बाप से वर्सा ले रहे हैं। पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना जहन्नुम में जाना।''

सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

''कुमारियों को तो इस सेवा में लग जाना है। कुमारी की कमाई माँ-बाप नहीं खाते हैं। परन्तु आजकल भूखे हो गये हैं तो कुमारियों को भी कमाना पड़ता है।''

सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

''कुमारियाँ... अगर माँ-बाप कहे आओ तो क्या करेंगी ? अगर अपनी हिम्मत है तो कोई किसको रोक नहीं सकता है। अगर थोड़ा-थोड़ा आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।''

अ.बापदादा 31.12.91

''कुमारियों का नाम भी गाया हुआ है। देहली-बाम्बे में जो अच्छी-अच्छी कुमारियां हैं, पढ़ी-लिखी हैं, उनको तो खड़ा हो जाना चाहिए। ... अगर कुमारियां खड़ी हो जायें तो नाम बाला हो जाये। ... कुमारियाँ शादी कर काला मुँह कर लेती तो सबके आगे झुकना पड़ता है। ... आजकल फैशन में ही कुमारियाँ रहती हैं।''

सा.बाबा 27.4.06 रिवा.

''कुमारी या कुमार जीवन बहुत श्रेष्ठ जीवन है लेकिन ब्रह्मा कुमार-कुमारी वे, जो सदा खुश रहते हैं। ... पाण्डवों को अपना नशा है, अपनी खुशी है। पाण्डव सदा बाप के साथी दिखाते

हैं। पाण्डवों ने कभी साथ नहीं छोड़ा, अन्त तक साथ निभाया।''

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 6

''बाकी कन्याओं के लिए तो बाबा कहते हैं कि तुम यह ईश्वरीय सर्विस करो। ... कन्या वह जो 21 कुल का उद्धार करे। ... विचार सागर मन्थन भी करना है, साथ-साथ शिवबाबा से बुद्धि का योग भी लगाना है। याद से ही कट उतरनी है।''

सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

''लौकिक बाप कहते शादी कर पतित बनो, पारलौकिक बाप कहते हैं - पावन बनो।... जबकि विनाश सामने खड़ा है, अब क्या करना चाहिए ? जरूर पारलौकिक बाप की मत पर चलना चाहिए ना।''

सा.बाबा 13.02.06 रिवा.

''वास्तव में कन्यायें बन्धनमुक्त होती हैं, वे इस रुहानी पढ़ाई में लग जायें तो बहुत अच्छा उठा सकती हैं। उनको कमाई करने की दरकार नहीं है। कुमारी अगर अच्छी रीति से यह नॉलेज समझ जाये तो सबसे अच्छी है। जो सेन्सीबुल होगी, वह इस रुहानी कमाई में लग जायेगी। ... कुमारियाँ श्रीमत पर चलें तो बहुत फर्स्टक्लास हो जायें।''

सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

''कुमार-कुमारियां तो जैसे सन्यासी हैं, उनमें विकार हैं ही नहीं। ... तुमको तमोप्रधान जिस्मानी श्रृंगार ज़रा भी नहीं करना है। ... बाप तुमको स्वर्ग की परियाँ बनाते हैं।''

सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

''कुमारियाँ तो हैं ही कन्हैया की। बस एक शब्द याद रखना - सब में एक। एक मत, एक रस, एक बाप।''

अ.बापदादा 11.8.88

''कुमारियां अर्थात् होवनहार टीचर्स, तब कहेंगे ब्रह्माकुमारियां हैं। अगर होवनहार सेवाधारी नहीं तो पाई-पैसे वाली कुमारी है।... बापदादा को हँसी आती है कुमारियों के ऊपर। टोकरी का बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाती हैं लेकिन भगवान के घर में अर्थात् सेवा-स्थानों में रहने की हिम्मत नहीं रखती हैं।''

अ.बापदादा 27.11.89

''कुमारियाँ लक्ष्य रखो कि विश्व की आत्माओं को बाप की पालना दें।... अनेकों की दुआयें लेना, यह कमाई कितनी बड़ी है। ... यह कमाई अनेक जन्मों के लिए साथ जायेगी। वे पांच-दस लाख तो घर में या बैंक में रह जायेंगे। लक्ष्य सदा ऊंचा रखा जाता है, साधारण नहीं।''

अ.बापदादा 27.11.89

''बच्चों को हर प्रकार की शिक्षा मिलती रहती है। हर एक के कर्मों का हिसाब है। कन्याओं के कर्म अच्छे हैं।... कन्यायें फ्री बड्र्स हैं। परन्तु खराब संग में नुकसान हो जाता है।...

कन्यायें अच्छी सेवा कर सकती हैं।'' सा.बाबा 17.8.06 रिवा.

''कुमारी रहना अच्छा है। नहीं तो अधरकुमारी नाम पड़ जाता है।... अधरकुमारी बनने का ख्याल भी क्यों करना चाहिए। कुमारियों का नाम बाला है। बाल ब्रह्मचारी हैं। ... कुमारी सेवा पर निकल सकती है। ... कुमारों को भीष्म पितामह जैसा बनना है।''

सा.बाबा 14.8.06 रिवा.

''तो कुमारियों को टोकरी वाली बनना है या ताज वाली बनना है?... समझती हैं सेवाकेन्द्र पर पता नहीं क्या-क्या होगा, कैसे चलेंगे या नहीं चल सकेंगे ... कुमारियों पर तो सब युगों में से संगमयुग पर विशेष परमात्म-कृपा है। ... डरो नहीं, डरने के कारण अपनी परमात्म-कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ।'' अ.बापदादा 4.12.95

''यह हैं एग्रीमेन्ट, फिर सेवाकेन्द्रों पर सर्विस में लग जाना है इन्गेजमेन्ट और जब सर्विस में सफलता पूरी हुई तो तीसरा समारोह है सम्पूर्ण सम्पन्न बनने। ... हिम्मत के साथ हुल्लास भी रखना है। कभी हार नहीं खाना लेकिन अपने को हार बनाकर बापदादा के गले में पिरोना है।''

अ.बापदादा 28.5.70

तन से समर्पित जीवन और सौंदर्य प्रसाधन, सौंदर्य प्रदर्शन एवं फैशन

समर्पित जीवन और अंग-प्रदर्शन प्रवृत्ति

Q. क्या तन से समर्पित होकर यज्ञ में अर्थात् मधुबन में या मधुबन के अन्य कमरों में तन से समर्पित होने वाली बहनों स्टाइलिश रूप से बाल काटना, आई-ब्रो बनाना, आवश्यकता से अधिक सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग, बाल काले करना, अंग-दर्शन की प्रवृत्ति उचित है या श्रीमत के अनुसार है? ऐसे ही भाइयों में बाह्य जगत के अनुसार ड्रैस पहनना, रंगीन कपड़े पहनना, दुनिया की तरह से साधन-सम्पत्ति की होड़ करना आदि-आदि के लिए बाबा की श्रीमत है?

ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनना अर्थात् परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाना और जो परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाता है, उसका जीवन और कर्तव्य क्या होता है, वह भी बाबा ने बताया है। ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को सौदर्य प्रसाधनों का कितना और कहाँ तक प्रयोग करना उचित है, वह भी बाबा ने बताया है और करके दिखाया है। इस विषय में भी बाबा ने अनेक बार मुरलियों में महावाक्य उच्चारण किये हैं।

वैसे तो बाबा की श्रीमत के अनुसार सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग और कृत्रिम रूप से सौंदर्य प्रदर्शन करने की मना है, जिसके विषय में बाबा ने श्रीमत भी दी है और यज्ञ के आदि में अनेक बातों को यज्ञ में करके भी सिखाया है परन्तु फिर भी हम देखें तो अनेक प्रकार के सौदर्य

प्रसाधनों का यज्ञ में प्रयोग होता ही है। बाबा के महावाक्यों के अनुसार ये भी अपने प्रति दूसरों की दृष्टि-वृत्ति को आकर्षित करना है, दूसरों की काम-वासना को जागृत करना है, जिसके लिए भी बाबा ने कहा है कि यह भी एक प्रकार का पाप है। किन्हीं ऐसे प्रसाधनों का उपयोग उसी सीमा तक उचित है, जहाँ तक उनसे हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है या जीवन के लिए अति आवश्यक है।

वस्त्रों आदि के विषय में जो तंग वस्त्र, जिनसे अंग प्रदर्शन हो या आधे वस्त्रों के लिए भी बाबा ने कहा है, यह भी ब्रह्मा कुमार-कुमारियों में नहीं होना चाहिए। वे चाहे घर-गृहस्थ वाले हों या समर्पित हों। इस प्रसंग में बाबा की यह बात भी ध्यान में अवश्य रखनी होगी कि बाबा ने कहा है - 'जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे', इसीलिए बाबा ने आदर्श में मम्मा-बाबा और दादियों का उदाहरण रखा है।

बाबा ने कहा है जो यज्ञ में या सेवाकेन्द्रों पर समर्पित होते हैं, वे सारे ब्राह्मण परिवार के लिए और सारी दुनिया के आदर्श के रूप में हैं, जिसके लिए बाबा ने कहा है कि वे बाबा के शोकेस के शोपीस हैं, जिनको देखकर अन्य आत्मायें अनुसरण करती हैं या उनको देखकर बाबा के बनते हैं। यदि उनको देखकर या उनके कार्य व्यवहार से कोई विचलित होता है, तो उसका बोझा भी उनके खाते में जमा होता है।

''आज की दुनिया में फैशन आदि कितना है। सारा दिन बुद्धि फैशन के पिछाड़ी ही रहती है। ... यह सब कशिश करने के लिए ही बनाते हैं। आगे पारसी लोगों की स्त्रियां मुँह पर काली जाली पहनती थी कि कोई देखकर आशिक न हो जाये। इस दुनिया को कहा जाता है वेश्यालय।'' सा.बाबा 7.7.06 रिवा.

तन से समर्पित आत्माओं भी दो प्रकार के हो जाते हैं -

एक फुल कास्ट ब्राह्मण अर्थात् पूरे मरजीवा और दूसरे हॉफ कास्ट ब्राह्मण अर्थात् आधे मरजीवा अर्थात् जो अभी तक पुराने सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मर रहे हैं।

पूरे मरजीवा में भी दो प्रकार के हो जाते हैं -

एक जो दैहिक सम्बन्धियों के हिसाब-किताब से मरजीवा और दूसरे सम्बन्धियों के साथ-साथ पुराने स्वभाव-संस्कार से भी मरजीवा।

''भक्त आप प्राप्ति-स्वरूप आत्माओं का सुमिरण करते-करते उसमें खो जाते हैं... वह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना न्यारा और प्यारा होता है अर्थात् लवलीन हो जाते हैं। ... क्योंकि आप आत्मायें बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, प्राप्तियों

में सदा खोई हुई रही हैं।''

अ.बापदादा 14.10.87

''सतयुग में यह ज्ञान नहीं रहेगा। वहाँ तुमको यह थोड़ेही मालूम रहता है कि हम फिर गिरेंगे। यह मालूम हो तो सुख की भासना ही न आये। यह ड्रामा का ज्ञान सिर्फ अभी तुम्हारी बुद्धि में है। ब्राह्मण ही अधिकारी हैं इस ज्ञान के। ब्राह्मणों को ही बाप ज्ञान सुनाते हैं। ... बुद्धि में रहे तो अपार खुशी रहे।''

सा.बाबा 9.6.05 रिवा.

''स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करो क्योंकि सम्पन्नता का वरदान संगमयुग पर ही मिलता है। सिवाए संगमयुग के सम्पन्न स्वरूप का अनुभव और कहीं भी नहीं कर सकेंगे। दैवी जीवन में सर्वगुण सम्पन्न होने का, 16 कलाओं का गायन है लेकिन सम्पन्न स्वरूप क्या होता है, गुणों और कलाओं की नॉलेज इस ईश्वरीय जीवन में ही है। इसलिए सम्पन्न बनने का आनन्द इस ईश्वरीय जीवन में ही प्राप्त कर सकते हो।''

अ.बापदादा 21.9.75

''यह कब भूलो मत कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी हैं।... तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाए एक बाप के और कोई को याद नहीं करेंगे।... इस दुनिया के सुख भी काग विष्टा के समान हैं, तुम पढ़ते हो नई दुनिया के लिए।''

सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

2. *मन से समर्पण*

मन से समर्पण अर्थात् मन्मनाभव। जब मन को समर्पण कर दिया तो जिसको समर्पण किया, उसमें ही लग जायेगा। मन से समर्पण होने वाले ही मन्मनाभव की श्रेष्ठ स्थिति को पा सकते हैं और वे ही अतीन्द्रिय सुख गहरा अनुभव कर सकते हैं।

देखा जाये तो तन और मन का गहरा सम्बन्ध है अर्थात् तन जहाँ होता है, वहाँ ही मन भी होता है और जहाँ मन होता है, तन भी वहाँ बरवस चला ही जाता है। मन से समर्पण अर्थात् मन्मनाभव। जो मन से परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाते हैं, उनका मन परमात्मा और परमात्मा के कार्य के अतिरिक्त कहाँ जा नहीं सकता। वे परमात्मा की श्रीमत अनुसार चलेंगे अर्थात् उनका हर संकल्प श्रीमत अनुसार होगा और जब संकल्प श्रीमत अनुसार चलेंगे तो बोल और कर्म भी उस अनुसार ही होंगे। बाबा ने कहा है बच्चे तुम परमात्मा के बच्चे हो, जो प्यार का सागर है तो तुमको भी मास्टर प्यार का सागर बनना है। हमारा संकल्प, बोल और कर्म कैसा हो, उसके लिए भी बाबा श्रीमत दी है। बाबा ने श्रीमत दी है - तुम्हारे संकल्प सदा शुभ और समर्थ हों, जिससे सर्वात्माओं का कल्याण हो। तुम्हारी वाचा भी बहुत मीठी होनी चाहिए, सुखदायी होनी चाहिए। तुम्हारे मुख से कब भी दुख देने वाले बोल नहीं निकलने चाहिए,

तुम्हारी बोली बड़ी मीठी होनी चाहिए। बाबा कहते - तुम रूप-बसन्त हो, तुम्हारे मुख से सदैव रतन निकलने चाहिए। यदि तुम्हारे मुख से पत्थर निकलते हैं तो तुम ईश्वरीय सन्तान कहलाने के अधिकारी नहीं हो अर्थात् उनके बोल और कर्म सिद्ध करते हैं कि वे मन से समर्पित नहीं हुए हैं।

योग की सफलता और जीवन में सच्ची सुख-शान्ति की अनुभूति करने के लिए मन का समर्पण होना अति आवश्यक है अर्थात् मन से समर्पित होने वाला ही जीवन में सच्ची सुख-शान्ति को अनुभव कर सकता है।

''मन्सा, वाचा, कर्मणा कैसे चलते हैं। बाबा हर एक की चलन से समझ जाते हैं। ... बच्चों की चलन तो बड़ी फर्स्टक्लास होनी चाहिए। मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए।''

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम आत्मा रूप-बसन्त बनते हो। तुम्हारे मुख से सदैव रत्न ही निकलने चाहिए। अगर पत्थर निकलते हैं तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे।''

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

''बापदादा तो मास्टर शिक्षकों को बहुत श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं, वैसे तो सर्व ब्राह्मण श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हैं लेकिन जो मास्टर शिक्षक बन अपने दिल व जान, सिक व प्रेम से दिन रात सच्चे सेवक बन सेवा करते हैं वे विशेष में विशेष और विशेष में भी विशेष हैं। इतना अपना स्वमान सदा स्मृति में रखते हुए संकल्प, बोल और कर्म में आओ।''

अ.बापदादा 21.1.83

''वाणी की शक्ति व्यर्थ जाने के कारण वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति अनुभव करानी चाहिए, वह कम होता है।... जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - फरिश्तों के बोल थे। कम बोल, मधुर बोल। जिस बोल का फल निकले, वह है यथार्थ बोल।''

अ.बापदादा 31.3.88

''जैसे याद से मन्सा शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो संकल्प-शक्ति जमा करते हो, ऐसे वाणी की शक्ति भी जमा करो।... इस वर्ष वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को जमा करने की स्कीम बनाओ।... जमा करने का साधन है - कम बोलो, मीठा बोलो, स्वमान से बोलो।''

अ.बापदादा 31.3.88

''बापदादा के दिल की यही श्रेष्ठ आशा है कि बच्चे बाप समान बनें।... लेकिन बाप के दिल की आश पूर्ण करने वाले कौन, जो बाप ने सुनाया, उसको कर्म में कहाँ तक लाया? मन्सा-वाचा-कर्मणा ... मन्सा शक्ति का दर्पण क्या है? बोल और कर्म दर्पण हैं। जिनकी मन्सा

शक्तिशाली वा शुभ है, उनकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली वा शुद्ध होगी, शुभ भावना वाली होगी।''

अ.बापदादा 31.3.88

''बोल ऐसे हों जो उनको सुनने वाले चात्रक हों कि ये बोलें और हम सुनें। इनको कहा जाता है - अनमोल महावाक्य। महावाक्य ज्यादा नहीं होते... जो स्वयं और दूसरों के लिए लाभदायक हैं, वही बोल बोलो।''

अ.बापदादा 14.1.90

''बहुत व्यर्थ वा मज़ाक के बोल बोलते हैं ... जिसको आप मज़ाक समझते हो लेकिन दूसरे की स्थिति डगमग हो जाती है। तो वह मज़ाक हुआ या दुख देना हुआ ?''

अ.बापदादा 13.12.95

''प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि शरीर चला जाये लेकिन जो प्रतिज्ञा की है, वह प्रतिज्ञा नहीं जाये। ... स्वयं से प्रतिज्ञा करो कि 'कभी भी किसी की कमजोरी वा कमी को नहीं देखेंगे, किसी की कमजोरी-कमी को नहीं सुनेंगे और न बोलेंगे'।''

अ.बापदादा 31.12.94

''हर एक के बोल की ऑटोमेटिक टेप भरती जाती है और जिस घड़ी जिसकी बापदादा सुनना चाहे वह सुन सकते हैं।... तो बोल को भी चेक करो। समर्थ बोल का अर्थ ही है - जिस बोल में किसी आत्मा को प्राप्ति का भाव वा सार हो।... स्वयं भी समय के महत्व को सदा सामने रखो।''

अ.बापदादा 14.12.94

''किसी भी विधि से कमजोरी को मिटाना ही है - यह दृढ़ संकल्प करो।... स्वयं पर और समय पर कोई भरोसा नहीं है। ... 'अब नहीं तो कब नहीं' अर्थात् जो करना सो अभी करना है।''

अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 1

''सेल्फ-प्रोग्रेस के लिए स्प्रीचुअल बजट बनाओ अर्थात् बचत की स्कीम बनाओ। ... समय, बोल, संकल्प और इनर्जी को बचाओ और वेस्ट से बेस्ट में चेन्ज करो।''

अ.बापदादा 22.1.90

''जब मन से सरेण्डर होंगे तो फिर लौकिक कार्य से सरेण्डर होने में देरी नहीं लगेगी। ... सभी से बड़ा सरेण्डर होना है संकल्पों में। कोई व्यर्थ संकल्प न आये। इन व्यर्थ संकल्पों के कारण ही समय और शक्ति वेस्ट होती है।''

अ.बापदादा 28.11.69

मन से समर्पित माना मन में कोई व्यर्थ चिन्तन न चले। बीती का चिन्तन नहीं और भविष्य की चिन्ता नहीं।

''ड्रामा में जो कुछ पास्ट हो गया, उसका विचार नहीं करो। रिपीट न करो। ... अन्दर में सिर्फ

बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और दूसरा 84 के चक्र को याद करो क्योंकि तुमको देवता बनना है।''

सा.बाबा 29.04.09 रिवा.

''संकल्पों को ब्रेक लगाने का मुख्य साधन कौनसा है ? मालूम है ? जो भी कार्य करते हो तो करने के पहले सोचकर फिर कार्य शुरू करो। जो कार्य करने जा रहा हूँ, वह बापदादा का कार्य है, मैं निमित्त हूँ। जब कार्य समाप्त करते हो तो जैसे यज्ञ रचा जाता है तो समाप्ति समय आहुति दी जाती है, इस रीति जो कार्य किया और जो परिणाम निकला, वह बाप को समर्पण। स्वाहा कर दिया फिर कोई संकल्प नहीं।''

अ.बापदादा 19.6.70

''लौकिक कार्य से भी सरेण्डर तब होंगे, जब पहले मन से सरेण्डर होंगे। ... सभी से बड़ा सरेण्डर होना है - संकल्पों से सरेण्डर होना। कोई भी व्यर्थ संकल्प न आये। ... तो संकल्प से भी सम्पूर्ण समर्पण होना है। मन के उमंगों को अब प्रैक्टिकल में लाना है।''

अ.बापदादा 3.8.08 रिवा.

''सम्पूर्ण समर्पण वालों को मन में सिवाए उनके (बापदादा के) गुण, कर्तव्य और सम्बन्ध के कुछ और सूझता ही नहीं। ... देहाभिमान की मत, शूद्रपने की मत कहीं-कहीं यूज़ कर लेते हो, इसलिए ही कर्मातीत अवस्था वा अव्यक्त स्थिति सदा एकरस नहीं रहती है क्योंकि मन भिन्न-भिन्न रस में चला जाता है।''

अ.बापदादा 3.10.69

3. *धन से समर्पण*

जहाँ मनुष्य का तन और मन होता है, वहाँ धन स्वत: ही चला जाता है अर्थात् उस कार्य में ही लगता है। धन से परमात्मा के प्रति समर्पण अर्थात् धन से हम जो ईश्वरीय सेवा कर सकते हैं, उतना कर रहे हैं तब ही धन से समर्पण कहा जायेगा। यदि हमारे पास जितना धन है और उस अनुसार सेवा में नहीं लगाते, बाबा को बताकर उनकी श्रीमत अनुसार उपयोग नहीं करते तो वह यथार्थ समर्पण नहीं है। यदि कोई तन से समर्पण हुआ परन्तु उसको जो धन मिल सकता है, उसका पैतृक अधिकार है परन्तु परिवार के मोह में वह उसे लेकर समर्पण नहीं करता तो उसको धन से पूरा समर्पण नहीं कहा जा सकता है। और जो जितना और जैसा समर्पण होता है, उस अनुसार उसको फल मिलता है। बाबा ने कहा जो एक धक से समर्पण करता है और जो सोच-सोच कर समर्पण करता है, उन दोनों का फल अलग-अलग होता है।

धन की सेवा

धन की सेवा के लिए बाबा ने कहा है, धन शिवबाबा के भण्डारे में देना है, किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं देना है, तब ही वह शिवबाबा के भण्डारे में जमा होगा। यदि किसी व्यक्ति विशेष के आकर्षण में देते हो, उसके प्रति देते हो तो वह तुम्हारा शिवबाबा के यज्ञ में जमा नहीं होगा, उससे उस व्यक्ति विशेष के साथ ही तुम्हारा हिसाब-किताब बनेंगा, शिवबाबा के साथ नहीं।

धन समर्पित करने अर्थात देने के बाद उससे अपनत्व मिट जाना चाहिए, उसमें बुद्धि नहीं जानी चाहिए। कब उससे हमको लाभ मिले, यह संकल्प भी नहीं आना चाहिए। धन देने के बाद उसको कैसे प्रयोग करना है, वह बाबा जाने। हम जैसे कहें, वैसे ही उसका प्रयोग हो, ऐसा संकल्प भी नहीं आना चाहिए। यदि ऐसा कोई संकल्प आता है तो वह सच्चा समर्पण नहीं है।

धन के समर्पण में कोई धन देता, अपना मकान-जमीन आदि सेवार्थ देता है परन्तु उसमें उसकी भावना क्या है, उसके आधार पर उसका फल निश्चित होता है अर्थात् धन में भी कोई के पास जो है, वह बिना सोचे एक धक से समर्पित कर देता है, कोई आयकर आदि के कारण यज्ञ में लगाता है, कोई अच्छा कार्य है, सेसा समझकर लगाता है और कोई ईश्वरीय कार्य है, उसकी यथार्थता को समझकर विश्व-कल्याणार्थ लगाता है, इस सब प्रकार से धन को यज्ञ सेवा में लगाने वालों अर्थात् समर्पित करने वालों का फल उनकी भावना और विधि-विधान के आधार पर अलग-अलग होता है।

''बाप का बच्चों के लिए लव होता है। बेहद के बाप को भी बच्चों के लिए बहुत-बहुत लव है। जो जितना श्रीमत पर सर्विस करते हैं, उस अनुसार लव रहता है। सर्विस में हड्डियां देनी हैं।''

सा.बाबा 8.4.06 रिवा.

''धन का भाग्य अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को खाने-पीने और आराम से रहने के लिए आवश्यकतानुसार समय पर आराम से मिलेगा... सेवा के लिए भी धन की खींचातान अनुभव नहीं करेंगे। सेवा के समय पर भाग्यविधाता किसको निमित्त बना ही देते हैं।''

अ.बापदादा 19.11.89

''सम्पूर्ण समर्पण वाले की जजमेन्ट ठीक होगी। सम्पूर्ण समर्पण आत्मा सहज जज कर सकेगी कि सचमुच हम अपना तन-मन-धन और समय जहाँ और जैसे प्रयोग करना चाहिए, वैसे प्रयोग कर रहे हैं।''

अ.बापदादा 28.11.69

''इस बाबा ने सब कुछ माताओं के चरणों में दे दिया तो यह वन नम्बर बना। तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है। जो मदद करेंगे, वे ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। ऐसे कोई मत समझे कि हम

शिवबाबा को मदद करते हैं। नहीं, शिवबाबा ही तुमको मदद करते हैं। अरे, वह तो दाता है। तुम जो करते हो अपने लिए करते हो। ... हिसाब करना तुम्हारा काम है। ऐसे कोई मत समझे कि मैं देता हूँ। यह शिवबाबा का यज्ञ है, चलता है और चलता ही रहेगा।''

सा.बाबा 30.12.08 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम सब कुछ सरेण्डर कर ट्रस्टी होकर रहो... विकारों का तो कोई रूप नहीं है। धन के लिए कहेंगे ट्रस्टी होकर रहो। भल काम में लगाना है परन्तु बहुत सम्भाल से, बाप की श्रीमत से। पैसा किसको दिया और उसने कोई ऐसा विकर्म किया तो उसका बोझा सारा तुम्हारे सिर पर चढ़ेगा।''

सा.बाबा 17.7.08 रिवा.

4. *जन से समर्पित*

जन समर्पित माना नष्टोमोहा अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। बीमारी आदि में भी कोई लौकिक-अलौकिक सम्बन्धी याद न आये, एक बाप ही याद रहे। यज्ञ में रहे या घर पर रहे परन्तु किसी भी परिस्थिति में एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये।

जन से समर्पित होने वालों के जीवन में मधुरता आ जाती है और उनके सम्बन्धों में भी मधुरता आ जाती है। पुराने हिसाब-किताब के फलस्वरूप कोई बात आती भी है तो वह भी सहज चुक्ता हो जाते हैं क्योंकि हमको पता है कि पुराने हिसाब-किताब के कारण ही सम्बन्धों में कटुता होती है, जो हर आत्मा को पूरा करना ही है।

जन से समर्पित होने वाले लौकिक सम्बन्धियों की सेवा करने का पुरुषार्थ तो करेंगे परन्तु यदि वे नहीं चलते हैं तो वे न परेशान होंगे और न उनकी चिन्ता करेंगे।

बहुत से लोग यज्ञ में अपनी कन्या को यज्ञ में समर्पित करते हैं परन्तु कोई तो उसकी शादी आदि के खर्च से बचने आदि की भावना रखते हैं और कोई ईश्वरीय कार्य समझकर पर विश्व-कल्याण के कार्य में सहयोगी बनकर अपना भाग्य बनाये, ऐसा समझकर समर्पित करते हैं। कोई समर्पित करने के समय कन्या का पूरा हक भी उसके साथ यज्ञ में देते हैं, कोई नहीं भी देते हैं। उसमें भी उनकी भावना अनुसार उसका फल मिलता है और कन्या भी यज्ञ में आकर किस भावना से रहती है, उसके आधार पर उसको फल मिलता है और यज्ञ में आकर वर्तमान संगमयुग पर परम-सुख अनुभव करती है।

जो स्वयं ज्ञान में नहीं चलते परन्तु अपनी कन्या या स्त्री को सेवा करने की छुट्टी देते हैं या सेवा में समर्पित करते हैं, उसका भी उनको फल मिलता है।

''बाबा ने सभी सेन्टर्स वालों को डायरेक्शन दिया है कि छोटे बच्चों को कोई यहाँ लेकर न आये। उन्होंका कोई प्रबन्ध करना है। बाप से जिनको वर्सा लेना होगा, वे आपही प्रबन्ध करेंगे।... ब्राह्मणी का काम है जब सर्विसएबुल बनें, तब उनको रिफ्रेश होने के लिए लेकर आना है। कोई भी बड़ा आदमी हो या छोटा हो, यह युनिवर्सिटी है।''

सा.बाबा 29.04.09 रिवा.

''यह युनिवर्सिटी है, इसमें पढ़ने वाले बड़े अच्छे समझदार चाहिए। कच्चे डिस्ट्रबेन्स करेंगे क्योंकि बाप की याद में नहीं होंगे तो बुद्धि इधर-उधर भटकती रहेगी, नुकसान कर देंगे। बाल-बच्चे लायेंगे तो इसमें बच्चों का ही नुकसान है।''

सा.बाबा 29.04.09 रिवा.

''लौकिक का समर्पण करना सहज है लेकिन जो ईश्वरीय प्राप्ति होती है, वह भी समर्पण करना अर्थात् महादानी बनना और औरों का शुभ-चिन्तक बनना, यह नम्बरवार यथायोग्य यथाशक्ति होता है। ... अपनापन बिल्कुल समा जाये। जब कोई चीज़ किसमें समा जाती है तो फिर समान हो जाती है।''

अ.बापदादा 29.6.70

5. *तन-मन-धन-जन चारो से समर्पणता*

तन-मन-धन-जन चारो से समर्पित होने वाले को और एक धक से समर्पित होने वाले को सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है अर्थात् वह वर्तमान में भी सम्पूर्ण अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करता है तो भविष्य में भी सतयुग के आदि में आकर सम्पूर्ण सतोप्रधान सुख को पाता है। जैसे प्यारे ब्रह्मा बाबा ने समर्पित किया, जिसके विषय में शिवबाबा ने अनेकानेक बार उदाहरण दिया है और उनको फॉलो करने की श्रीमत भी दी है। अपने इस समर्पण के आधार पर ही ब्रह्मा बाबा विश्व में और सारे कल्प में पहले ऐसे मानव हैं, जिन्होंने सम्पूर्णता को पाया है और फरिश्ता रूप में विश्व की सेवा कर रहे हैं और सारे यज्ञ की आत्माओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, आदर्श हैं। तन-मन-धन-जन से सम्पूर्ण समर्पणता ही सम्पूर्ण प्राप्ति का आधार है।

''सतयुग में वर्सा तुम इस समय के पुरुषार्थ अनुसार पाते हो। तो तुम बच्चों का माथा फिरना चाहिए। ... यहाँ बच्चे कहते हैं - बाबा, मैं तन-मन-धन सहित आता हूँ। ... जब तक बुद्धि में ज्ञान सही रीति नहीं बैठा है तो सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा ? अर्पणमय तो ढेर बनते हैं परन्तु जो अच्छी रीति धारणा कर औरों को कराते हैं, प्रजा बनाते हैं, वे ही अच्छा पद पाते हैं।''

सा.बाबा 18.9.08 रिवा.

''सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन-मन-धन, सम्बन्ध और समय सब में समर्पण। अगर मन को समर्पण कर दिया तो ... मन समर्पण अर्थात् मन सिवाए श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे। इसलिए ही मन्मनाभव का मुख्य मन्त्र है। ... मन समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प-विकल्पों को समर्पण करना। यही परख है सम्पूर्ण परवाने की।''

अ.बापदादा 3.10.69

B. स्थान के आधार पर समर्पणता में -

1. मधुवन निवासी,
2. सेन्टर्स पर टीचर्स,
3. सेवाकेन्द्रों पर समर्पित अन्य भाई-बहनें,
4. घर-गृहस्थ में रहने वाले ट्रस्टी भाई-बहनें

1. *मधुबन निवासी,*

मधुबन अर्थात पाण्डव भवन निवासी समर्पित

मधुबन अर्थात् जहाँ शिवबाबा ने साकार बाबा के तन द्वारा स्वर्ग की स्थापना का कार्य किया। बाबा ने मधुबन की बहुत महिमा की है और मधुबन वासियों को कहा हैं कि तुमको ये स्वाभिमान होना चाहिए कि हम परमात्मा की कर्मभूमि के निवासी हैं और अपनी अवस्था ऐसी रखनी चाहिए कि दूसरे आकर तुमसे प्रेरणा लें, इस भूमि का महत्व अनुभव करें। भक्त कवि तुलसीदास ने भी लिखा है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पांव तुम धारा। मधुवन को बाबा वरदान भूमि कहते हैं, जहाँ आने से ही हर आत्मा ईश्वरीय वरदानों को अनुभव करती है। यहाँ रहने वाले बच्चों की स्थिति भी वरदानी होनी चाहिए।

मधुबन अर्थात् पाण्डव भवन चार धामों का महत्व भी बाबा ने बताया है, जो उसके महत्व को समझता है, उस अनुसार कार्य-व्यवहार करता है, वह भी महान बन जाता है।

समर्पित जीवन का केन्द्रबिन्दु है मधुवन, जहाँ से समर्पित जीवन की यथार्थ झलक अनुभव होती है। बाबा ने कहा है - समर्पित जीवन क्या है और समर्पित जीवन में हमारा कार्य-व्यवहार, मानसिक स्थिति, बोल-चाल, सम्बन्ध-सम्पर्क कैसा होना चाहिए, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है।

पाण्डव भवन के साथ आबू और आबूरोड में जो भी स्थान हैं, वे भी मधुबन ही हैं परन्तु हर स्थान का अपना-अपना महत्व है, जो वहाँ के रहने वालों के जीवन से, वहाँ के वातावरण से ही अनुभव होता है क्योंकि स्थान भिन्न हैं तो कुछ भिन्नता तो अवश्य होगी और

जब बाबा ने सबको मधुबन कहा है तो कुछ समानता भी अवश्य होगी।

''कोई भी आत्मा सामने आये, वह असुरी संस्कारों से, व्यर्थ संकलपों से मुक्त हो निर्विकल्प हो जाये। जब ऐसी सर्विस करेंगे तब प्रत्यक्षता होगी। ... दुख-अशान्ति से तड़फती हुई आत्मायें इस पाण्डव भवन में आने से ही एक सेकेण्ड में सुख-चैन का अनुभव करेंगी। तब प्रभाव निकलेगा। ... एक-एक पाण्डव दर्शनीयमूर्त हो जाये।''

अ.बापदादा 5.3.70

''अभी पाण्डवों में संगठन का बल, स्नेह का बल, एक-दो के सहयोग का बल तो है परन्तु अभी ... वह है सहनशीलता का बल। अगर सहनशीलता का बल हो तो माया कब वार नहीं कर सकती है। ... जब ये चारो बल पाण्डव अपने में धारण करेंगे, फिर यह पाण्डव भवन सारी दुनिया में देखने और अनुभव करने का विशेष स्थापन गिना जायेगा।''

अ.बापदादा 5.3.70

''मधुबन अर्थात् जितना स्नेही (मधु) होंगे, उतना बेहद का वैराग्य (वन) होगा। तो नम्बरवन टीचर बन सकते हो क्योंकि जैसी अपनी धारणा होगी वैसे औरों को अनुभव में ला सकेंगे। इन दोनों गुणों की अपने में धारणा करनी है। ... जब स्वयं सफलता स्वरूप बनेंगे तब दूसरी आत्माओं को भी सफलता का मार्ग बता सकेंगे।''

अ.बापदादा 26.1.70

''मधुबन है सर्व प्राप्तियों की खान। ... एक-एक सेकेण्ड में पदमों की कमाई कर सकते हो। पदमापदम भाग्यशाली तो हो लेकिन इस भाग्य को सदा कायम रखने के लिए पुरुषार्थ सदा सम्पूर्णता का रखना।''

अ.बापदादा 23.1.70

''आत्मा की असली स्थिति क्या है? ... वैसे अपनी असली स्थिति का अनुभव करने के लिए यहाँ आये हो। मधुवन में आये हो उस स्थिति की टेस्ट करने। टेस्ट करने के बाद उसे सदा काल के लिए अपनाने का पुरुषार्थ करना है।''

अ.बापदादा 23.1.70

''इस मधुवन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा यहाँ पाँव नहीं रख सकता। मधुवन है सौभाग्य की लकीर। ... इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। भले कोई अपना शीश भी उतार कर रख दे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। आगे चलकर जब लोगों का रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वेल्यू का मालूम पड़ेगा।... ड्रामा में इतने ऊंच भाग्य को सदैव सामने रखना।''

अ. बापदादा 6.12.69

''मधुवन के फूलों में क्या विशेषतायें होनी चाहिए? पहली विशेषता है मधुरता।... मधुरता से

ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे। ... तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए, फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी। ... ये दो विशेषतायें धारण करनी है - मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहेंगे स्नेह और शक्ति।''

अ. बापदादा 9.11.69

''इस मधुबन का नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा काम करो।... इस भूमि के महत्व को भी अच्छी रीति जानो। इस भूमि को साधारण भूमि नहीं समझना।... महान बनना अर्थात् महत्व को जानना।''

अ.बापदादा 24.10.75

''मधुबन की क्या महिमा करते हो ? कहते हो कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। स्वयं में व अन्य में वरदान का अनुभव करते हो ? यहाँ आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना। ... ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएँ।''

अ.बापदादा 18.1.75

''अभी मधुबन निवासियों को लक्ष्य रखना है बाप जैसी चलन हो, चेहरा हो, तभी बाप प्रत्यक्ष होगा। ... सेवा का बल चला रहा है लेकिन चारो ही सब्जेक्ट में अपने को चेक करो, फिर अपने को सर्टीफिकेट दो। अभी बाप ने तो आपकी आशा पूर्ण की, अभी बाप की आशा पूर्ण करना।''

अ.बापदादा 4.9.05 समर्पित भाई-बहनें

''एक-एक कदम सामने लाओ, उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना - सब में ब्रह्मा बाप के समान है। ... मधुवन वालों को इसमें सर्टीफिकेट लेना है। ... ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि में रहने वालों के प्रति यह विशेष श्रेष्ठ आश है कि मधुवन की एक-एक ब्राह्मण आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हर कर्म में ब्रह्मा बाप के कर्म का दर्पण हो।''

अ.बापदादा 24.9.92 मधुवन वालों से

''मधुबन वालों के लिए बाबा कहते हैं जो चुल पर सो दिल पर।... लोग तो मधुबन में आते हैं और आप मधुबन में रहते हैं। सिर्फ अलबेले नहीं बनना।... मेरा बाबा कहते, वह मेरा बाबा चेहरे और चलन से दिखाई दे।''

अ.बापदादा 03.02.06 मधुबन वाले

''ब्रह्मा बाप का एक-एक कदम सामने लाओ, उठना-बैठना, चलना, बोलना, सम्बन्ध-सम्पर्क में आना - सब में ब्रह्मा बाप के समान है।... मधुबन वालों को इसमें सर्टीफिकेट लेना है। ... ब्रह्मा बाप की कर्मभूमि में रहने वालों के प्रति यह विशेष श्रेष्ठ आश है कि मधुवन की एक-एक

ब्राह्मण आत्मा, श्रेष्ठ आत्मा हर कर्म में ब्रह्मा बाप के कर्म का दर्पण हो।''

अ.बापदादा 24.9.92 मधुवन वालों से

''मधुवन निवासी अर्थात् न सिर्फ मधुवन बल्कि विश्व की स्टेज पर संकल्प, बोल और कर्म में हीरो पार्टधारी। ... मधुबन सदा जीरो के साथ रहने वाले और सदा हीरो पार्ट बजाने वाले। ... जैसे मधुबन वाला बाबा मशहूर है ऐसे मधुबन वाले भी मशहूर हैं।''

अ.बापदादा 6.4.95

''मधुबन निवासियों के जैसे सेवा की सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स हैं, ऐसे ज्ञान-योग-धारणा की सब्जेक्ट में भी विशेष नम्बर लेवें। ... मधुबन वालों का खज़ानों की बचत का खाता नम्बरवन हो। ... मधुबन निवासी बनना भी एक्स्ट्रा भाग्य का मेडल है।... बापदादा भी मधुबन निवासियों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं - वाह भाग्यवान, वाह।''

अ.बापदादा 25.3.95

''मधुबन वाले सदा ही अपने को आधारमूर्त और उदाहरणमूर्त समझो।... हर कर्म में, हर संकल्प में, हर बोल में आधारमूर्त हो।... इतना बड़ा जिम्मेदारी का ताज मधुबन निवासियों को पड़ा हुआ है।''

अ.बापदादा 9.1.95 मधुबन निवासी

''मधुबन निवासियों से मधुबन की शोभा है। फिर भी बहुत लकी हो। अपने को जानो या न जानो फिर भी लकी हो। स्थान के महत्व को, संग के महत्व को, वायुमण्डल के महत्व को भी जानो तो एक सेकण्ड में महान बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 22.11.72 मधुबन वासियों से

''आप सभी से श्रेष्ठ स्थान पर हो तो इसका भी असर स्थिति पर होना चाहिए। श्रेष्ठ वरदान भूमि के निवासी हैं तो अपनी स्थिति भी सदा सभी को देने वाली बनानी चाहिए।''

अ.बापदादा 28.7.71

''बाप समझाते - कोई बात में रूठना नहीं है, शक्ल मुर्दे जैसी नहीं करनी है। ... यहाँ रहते भी बहुतों की बुद्धि बाहर में भटकती है, वे तो जैसे खोखले हैं।''

सा.बाबा 17.10.05

''मधुबन है लाइट-हाउस, माइट-हाउस... अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त चलन की लाइट-माइट चारों ओर फैलाओ।... जितने साधन मधुवन में हैं, उतने सेवाकेन्द्रों पर नहीं और जैसा साधना का वायुमण्डल मधुबन में है वैसा सेवाकेन्द्रों पर बनाना पड़ता है। ... अलौकिक जीवन बनाने के लिए बोल में, कर्म में, सब में- कम खर्च बाला नशीन बनना है।''

अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 6

''मधुवन निवासी सेफ में पड़े हैं। ... जो ज्यादा सेफ में रहते हैं, वे हैं मस्तक मणी। योगयुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है।... निश्चयबुद्धि होकर कोई भी कार्य करेंगे तो फेल नहीं होंगे।... विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 11.07.70 मधुबन

''अच्छा आप सबने दिल से वायदा किया कि मधुबन का वायुमण्डल अति-अति सुन्दर बनायेंगे तो उसके रिटर्न में आज सभी को दृष्टि मिलेगी। आप सभी बड़ी दिल से करना। बापदादा ने दिल का आवाज़ सुन लिया तो दिल से दिल तो मिलायेंगे ना।''

अ.बापदादा 22.04.09

''(मुन्नी बहन तन्त्र-मन्त्र भी करते, ... बिजनेस भी करते) बापदादा ने टोटल में कह दिया कि वायुमण्डल को किसी भी रूप में दूषित नहीं करना है। बाप के प्यार के आगे ये तन्त्र-मन्त्र करना महापाप के भागी बनना है। ये अपने स्वमान को कम करना है। ... कोई करता है तो दिल में समझे और विचार करे कि मैं यह पाप करता हूँ या पुण्य करता हूँ।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा जानते हैं ... ग्लानि कराने वाले भी हैं तो बाप का नाम बाला करने वाले भी हैं ... ये भी उनका पार्ट है। ... ये भी कोई सेम्पुल होगा। ... आप जो भी यहाँ बैठे हो तो अगर बाप कहते हो तो पाप नहीं करना। जहाँ बाप है, वहाँ पाप नहीं हो सकता और जहाँ पाप है तो वहाँ बाप नहीं हो सकता। यदि पाप करते हैं तो वे नामधारी सरेण्डर हैं।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा सब जानते हैं। इशारे से समझ लें... पाप कर रहे हैं तो क्या होगा ... अगर जन्त्र-मन्त्र किया तो क्या होगा। अच्छे भी हैं।... आपकी इतनी ताक़त होनी चाहिए जो जन्त्र-मन्त्र शिव-मन्त्र में बदली हो जाये।... ये सब होगा लेकिन आप अपने को बचाकर रखो। अगर थोड़ी कमजोरी होगी तो असर हो जायेगा। आप अपना बचाव करो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''ब्रह्मा बाप समान अर्पण करने वाले श्रेष्ठ आत्मायें हो। तो आप भी अपने को ऐसे श्रेष्ठ आत्मा समझकर नशे में रहते हो कि हम ब्रह्मा बाप समान सर्व अर्पण हैं। संकल्प में भी, बोल में भी और कर्म में भी समर्पण। समर्पण का अर्थ ही है बापदादा समान।''

अ.बापदादा 22.04.09

''इसमें भी विशेष हर संकल्प और हर समय का सेव-ण्ड-सेकण्ड ब्रह्मा बाप समान। ब्रह्मा बाप की स्मृति, वृत्ति, दृष्टि क्या रही - यह तो जानते हो ना और साथ में जैसे ब्रह्मा बाप मधुवन

निवासी रहे, ऐसे आप सभी भी मधुबन निवासी हो। ... सब मधुबन निवासी कहलाते हो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''आप सभी भी ब्रह्मा बाप समान मधुवन निवासी अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति और मधुरता के विशेष गुणधारी हो। तो ऐसा नशा रहता है। मधुबन का नाम सुनते ही रुहानी नशा अनुभव होता है। तो रोज़ चेक करते हो कि हम मधुवन निवासी हैं तो बेहद का वैराग्य और सदा चेहरे पर मधुरता, हर बोल में मधुरता और नैनों में रुहानियत।... कोई कहाँ जाते तो मधुबन का नाम सुनते ही उनको मधुबन का स्नेह याद आ जाता है। मधुबन का वायुमण्डल याद आ जाता है। मधुबन की इतनी विशेषता है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''सबको ये रुहानी नशा रहता है। हद का नशा नहीं बेहद का नशा रहता है। ... चेहरे से मधुवन निवासी हैं, ये अनुभव कराते हो। ... सूरत में ब्रह्मा बाप समान मधुरता और रुहानियत दिखाई देती है, न्यारे लगते हो ? जैसे ब्रह्मा बाप कहाँ भी खड़ा हो ... ब्रह्मा बाप की रुहानियत और मुस्कराहट न्यारी और प्यारी लगती थी।''

अ.बापदादा 22.04.09

''कहाँ भी खड़ा हो, ब्रह्मा बाप की रुहानियत और मुस्कराहट न्यारी और प्यारी लगती थी।... आप भी समर्पित आत्मा हो तो आपके चेहरे से ऐसी अलौकिकता अनुभव होती है ? मधुबन में सेवा का चान्स मिलना, ये भी कम बात नहीं है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''डायरेक्ट ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों की कर्मभूमि, चरित्र भूमि है, रुहानी वायुमण्डल की भूमि है। मधुबन की महिमा कम नहीं है। सेन्टर, सेन्टर हैं; मधुबन, मधुबन है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''डायरेक्ट ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों की कर्मभूमि, चरित्र भूमि है, रुहानी वायुमण्डल की भूमि है। मधुवन की महिमा कम नहीं है। ... तो आज विशेष ऐसे श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त आत्माओं के संकल्प को पूरा करने आये हैं। तो बोलो इतना बड़ा भाग्य याद रहता है या चलते-चलते साधारण हो गये हो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''जो अपने को मधुबन की महानता सम्पन्न समझते हैं, वे हाथ उठाओ।... सदा रहता है या कभी-कभी रहता है। ... बापदादा जानते तो सब हैं। बापदादा के पास मधुबन की जो समाचार के रूप में रिजल्ट आती है, उसको सुनते बापदादा को संकल्प आता है।... जो समाचार सुनते हैं, देखते हैं तो जैसा मधुबन का नाम है, जैसा स्थान है, उसमें फर्क दिखाई देता है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''मधुवन निवासियों की पहली निशानी है। चलते-फिरते कोई भी बात सामने आते हुए न्यारे और प्यारे ... कमल का पुष्प समस्या के पानी में तो रहता ही है लेकिन (पानी का उस पर असर नहीं होता) ऐसे समस्या के पानी में न्यारे और प्यारे रहे।... मधुवन निवासी सदा निर्विघ्न रहे - ये हो सकता है? ... (हो सकता है) ... आप सबकी तरफ से दादी हिम्मत का जबाब दे रही है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा स्पेशल मिलने आये हैं तो स्पेशल मिलने की कोई गिफ्ट तो देंगे ना ... बापदादा चाहते हैं कि आज से कोई तूफान आये, वह तोहफा बन जाये, समस्या उड़ती कला की गिफ्ट बन जाये। ... संकल्प तो किया, उसके नीचे दृढ़ता की अण्डरलाइन करो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''अभी तक जो भी मधुवन का अनुभव करने आते हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें, चाहे वी.आई.पी., चाहे साधारण आत्मायें ... बापदादा और जो सुपात्र बच्चे हैं, उनके कारण अनुभव क्या करके जाते हैं ... प्यार से काम करते हैं ... बापदादा को पता है कि अन्दर क्या है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''एक-एक मधुवन निवासी ये जिम्मेवारी उठाये कि हमको मधुवन का वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाकर रखना है। जिम्मेवारी का ताज पहनना है। अगर अभी जिम्मेवारी का ताज नहीं पहनेंगे तो विश्व के राज्य का ताज कैसे मिलेगा।''

अ.बापदादा 22.04.09

''कोई भी बात सामने आती है तो सामना नहीं करना है। या तो किनारा करो या अपनी साइलेन्स की शक्ति से परिवर्तन करो। ये कला अभी कम है। ... आप जब पहले आये तो कौनसी आत्मायें थीं। ... बापदादा ने प्यार से अपना बनाया।''

अ.बापदादा 22.04.09

''आजकल बापदादा ने देखा काम-क्रोध दोनों का वायब्रेशन ज्यादा है। ... मधुवन की जो महिमा है, उसको सम्भालना पड़ेगा। ... ब्रह्मा बाप के होते भी बातें तो होती थी ना ... ब्रह्मा बाप के शक्तिशाली वायुमण्डल के बीच समा जाती थी। ... दादी के होते भी बातें होती थीं लेकिन समा जाती थीं। अभी थोड़ा वायुमण्डल में फैलती हैं। तो ये परिवर्तन करना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 22.04.09

''हर सरेण्डर आत्मा मधुवन की शान है। ... मधुवन निवासियों में कुछ कुछ विशेषतायें हैं लेकिन कोई ऐसी बातें होती हैं तो विशेषतायें छिप जाती हैं।''

अ.बापदादा 22.04.09

''63 जन्म के देहभान और देहाभिमान दोनों को छोड़ना पड़ता है। ... आगे बढ़ते हैं तो देहाभिमान के रूप में माया आती है। ... देहाभिमान अभी रॉयल रूप में आ गया है। देहाभिमान देहभान से ज्यादा नुकसान का कारक है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''मैं और मेरा ... जब मैं शब्द बोलते हो तो स्मृति में आये 'मैं कौनसी आत्मा हूँ' और मेरा शब्द बोलते हो तो मेरा कौन ? 'मेरा बाबा'।... जब मैं-मेरा कहते तो अन्दर संकल्प में याद करो मेरा कौन और मैं कौन ? ये परिवर्तन करो।... यह 'मैं और मेरा' बहुत धोखा देता है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''जब मैं-मेरा कहते तो अन्दर संकल्प में याद करो मेरा कौन और मैं कौन ?... यादगार में भक्त सुमिरण करते रहते हैं, वह आपकी इस स्मृति का ही यादगार है।... कोई भी आये और देखे तो कहे मधुबन तो मधुबन ही है।... अभी कहते मधुबन में भी होता है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा को दो सौगात चाहिए - देंगे। ... एक तो क्रोध दे दो और स्नेह ले लो।... दूसरा बोलें, बोलें ... क्रोध का दूसरा रूप हो गया है - हाथ चलाना। हाथ भी चल जाता है।... अगर ऐसे पुण्य के स्थान पर ऐसा करते तो ये तो अपना कान पकड़ना चाहिए।... मन्दिर-गुरुद्वारे में भी ऐसा काम करने से डरते हैं। ये तो महापाप हो जाता है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''अभी बापदादा हाथ नहीं उठवाते, शर्म आयेगी।... सभी ने सुना, अभी क्या करेंगे।... एक मिनट दृढ़ संकल्प करो कि आज तक मैंने जोश से जो बोला, कोई से बात की... आज से क्रोध को बाल-बच्चों सहित स्वाहा कर दिया।... अन्दर से दृढ़ संकल्प करो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''(दादी जानकी - जिसने ऐसी गलती की, वह माफी माँग ले और संकल्प करे हमको बदलना है और मधुबन की शान बढ़ानी है, तो बदलता है। अपनी भूल की माफी माँगे और किसी ने भूल की है तो उसको क्षमा कर दे।... अनुभव ऐसा है कि माफी माँगने के बिना बदलना मुश्किल है।) बापदादा जानते हैं ये नहीं करेंगे, इसलिए दिल में, मन में माफी भले लो और संकल्प करो आगे के लिए कभी स्वप्न तक ये नहीं लायेंगे।... दादियाँ तो ये हिम्मत रखती हैं, इसलिए हिम्मत के कारण सौगुणा मदद मिलती है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बापदादा हर बच्चे को बड़ी ऊंची नज़र से देखते हैं। बापदादा जानते हैं ... मेरा बाबा तो

कहते हैं लेकिन मेरा बाबा कहकर ऐसा कर्म नहीं करो। ... बाप का भी शान रहे और बच्चे का भी शान रहे।''

अ.बापदादा 22.4.09

''जब मधुवन के पाण्डव दल में बल होगा तो फिर इस पाण्डव भवन में आसुरी सम्प्रदाय तो क्या लेकिन आसुरी संकल्प भी नहीं आ सकेगा। ... पाण्डवों का ऐसा पहरा चाहिए जो इस पाण्डव भवन में आसुरी संस्कारों को, आसुरी संकल्पों को भी आने न दें। जब पहले अपने अन्दर यह पहरा मज़बूत होगा, तब पाण्डव भवन में यह मज़बूती ला सकेंगे।''

अ.बापदादा 5.3.70

''जब पहले अपने ऊपर यह पहरा मज़बूत हो कि कोई असुरी संकल्प और आसुरी संस्कार न हो, तब पाण्डव भवन में यह मज़बूती ला सकेंगे। ... कैसी भी आत्मा आये, आते ही आसुरी संस्कारों और व्यर्थ संकलपों से मुक्त हो जाये। ऐसा निर्विकल्प बनाने का जादू का घर यह मधुवन हो जायेगा।''

अ.बापदादा 5.3.70

''यहाँ रहने वालों में भी कई समझते हैं कि यहाँ से छूट पुरानी दुनिया में जायें।... जिनकी तकदीर में नहीं है तो फिर उनको ऐसे ख्यालात चलते हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि होती है तो फिर पुरानी दुनिया की तरफ चले जाते हैं।... देही-अभिमानी बनने में बहुत मेहनत है।''

सा.बाबा 19.8.08 रिवा.

''इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा यहाँ पाँव नहीं रख सकता है।... यह स्नेह की लकीर है, जिस स्नेह के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं। इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। कोई चाहे भल वह अपना शीश भी उतर कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है।''

अ.बापदादा 6.12.69

''मधुवन - मधु अर्थात् मधुरता और वन अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता हे।... मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे।... बेहद की वैराग्य वृत्ति भी चाहिए। इससे सारी बातें आ जायेंगी।''

अ.बापदादा 9.11.69

''ये दो विशेषतायें धारण करनी हैं। मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं - स्नेह और शक्ति।... बापदादा का मधुवन वालों से विशेष स्नेह रहता है क्योंकि भल कैसे भी हैं लेकिन सर्वस्व त्यागी हैं। इसलिए आकर्षित करते हैं। लेकिन सर्वस्व त्यागी के साथ स्नेह और शक्ति भी भरनी है।''

अ.बापदादा 9.11.69

2. *सेन्टर्स पर टीचर्स*

समर्पित में टीचर्स का स्थान सबसे ऊंचा है। बापदादा उनको गुरुभाई के नाम से सम्बोधित करते हैं क्योंकि वे बाप समान शिक्षक बनती हैं। बापदादा बाप समान ऊंची नज़र से देखते हैं क्योंकि उनका जीवन विश्व के सामने उदाहरण स्वरूप है। टीचर्स के लिए बाबा ने कहा है कि टीचर्स अर्थात् जो मन्सा-वाचा-कर्मणा सदा सेवा करने वाले बाप समान क्योंकि टीचर्स बने ही हैं सेवा के लिए। टीचर्स के लिए बाबा सदा कहते हैं - टीचर्स सदा अपने को स्टेज पर समझो क्योंकि तुम्हारे ऊपर अन्य आत्माओं की भी जिम्मेवारी है। टीचर्स को देखकर या उनके किसी कर्म से कोई अयथार्थ कर्म में प्रवृत्त होता है या ज्ञान से मर जाता है तो उसका बोझा भी टीचर्स पर आता है क्योंकि जो अच्छे बनते हैं, उनका फल भी टीचर्स को मिलता है तो उनको देखकर बुरे बनते तो भी उसका प्रभाव भी उनके भाग्य पर पड़ता है।

टीचर्स विशेष विश्व-सेवा अर्थ समर्पित होती हैं और ज्ञान सागर बाप के ज्ञान को अन्य आत्माओं तक पहुँचाने में उनका विशेष सहयोग है। ज्ञान के हर प्वाइन्ट का अनुभवी बनकर अन्य आत्माओं को अनुभवी बनाना उनका कर्तव्य है। इसलिए टीचर्स के लिए बाबा ये भी कहते हैं कि तुमको ज्ञान के हर प्वाइन्टस का अनुभवी बनना है क्योंकि तुम जब स्वयं अनुभवी होंगे तब ही तुम औरों को भी अनुभवी बना सकेंगे, कोई भी प्रश्न का यथार्थ उत्तर दे सकेंगे। यदि कोई टीचर यथार्थ उत्तर नहीं देती तो भी ज्ञान सागर बाप का नाम बदनाम होता है।

जो टीचर ज्ञान के हर प्वाइन्ट की अनुभवी बनकर, सदा अपने को बापदादा की छत्रछाया में रहते हुए सदा निर्भय, निर्संकल्प, निश्चिन्त, निर्मान बनकर बेहद में रहकर सेवा करती है, वही सफल टीचर बनती है। बापदादा की टीचर्स पर विशेष छत्रछाया रहती है क्योंकि तमोप्रधान दुनियां, तमोप्रधान आत्माओं के बीच रहकर सेवा करती हैं।

''टीचर्स को विशेष समर्पित होने का भाग्य मिला हुआ है। ... जो सच्चाई और सफाई से बाप की याद और सेवा में सदा लगे रहते हैं, उन्हें कोई और मेहनत करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। योग्य टीचर का भण्डारा और भण्डारी सदा भरपूर रहेगा।''

अ.बापदादा 6.1.90

''सभी टीचर्स बेफिकर बादशाह हो ? बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में रहने वाले। निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊंचा उड़ाता है। ... असोच बनने से ही सेवा बढ़ेगी, सोचने से नहीं बढ़ेगी। ... सोचने में ही बुद्धि बिज़ी रखेंगे तो बाप की टचिंग, बाप की शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे।'' अ.बापदादा 25.12.89

''टीचर्स अर्थात् नम्बरवन फॉलो फादर। ... टीचर्स अर्थात् निमित्त बनने वाले, अनेक आत्माओं के निमित्त हो। तो निमित्त बनने वालों के ऊपर कितनी जिम्मेवारी है ... जो कर्म मैं करूँगी, मुझ निमित्त आत्मा को देख और भी करेंगे।''

अ.बापदादा 9.12.89

''टीचर्स ने कन्ट्रेक्ट लिया कि स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करना ही है। ... स्व-परिवर्तन के बिना कितनी भी मेहनत करो लेकिन कोई भी आत्मा परिवर्तन नहीं हो सकती। ... आज की दुनिया प्रत्यक्ष रूप में देखना चाहती है। तो टीचर्स का यही विशेष कर्तव्य है कि करके दिखाना अर्थात् बदल करके दिखाना।''

अ.बापदादा 15.11.89

''जब कोई बात समझ में आ जाती है तो वह करेगा जरूर। टीचर्स तो हैं ही समझदार। टीचर्स को निमित्त बनने का भाग्य मिला है, इसका महत्व अभी कभी-कभी साधरण लगता है लेकिन यह भाग्य समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने हमको निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना - यह स्मृति स्वत: ही श्रेष्ठ बना देती है।''

अ.बापदादा 14.1.90

''टीचर्स ... किसी भी प्रकार का बोझ है चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे सेवा-साथियों का तो वह उड़ने नहीं देगा, सेवा भी ऊंची नहीं उठेगी। इसलिए सदा दिल साफ और मुराद हासिल करते रहो। प्राप्तियाँ आपके सामने स्वत: ही आयेंगी।''

अ.बापदादा 6.1.90

''टीचर्स तो चारो ही सब्जेक्ट्स में स्मृति-स्वरूप है ना! टीचर्स का अर्थ ही है अपने स्मृति-स्वरूप फीचर्स से औरों को भी स्मृति-स्वरूप बनाना। ... ऐसे अविनाशी चमकती हुई मणि को देख देहभान स्मृति में नहीं आये। ... टीचर्स अर्थात् सदा नेचुरल निरन्तर स्मृति-स्वरूप सो समर्थ स्वरूप।''

अ.बापदादा 2.1.90

''टीचर्स सदा नशा रखो कि हम पूर्वज भी हैं और पूज्य भी हैं। जितने बड़े, उतनी बड़ी जिम्मेवारी है। बड़ा बनना सिर्फ खुश होने वाली बात नहीं है लेकिन नाम बड़ा तो काम भी बड़ा चाहिए। ... कोई भी इच्छा होगी तो अच्छा बनने नहीं देगी। अब इच्छा पूर्ण करो या अच्छा बनो, आपके हाथ में है। ... माँगने वाला कभी भी सम्पन्न नहीं बन सकता। और कुछ नहीं माँगते हो लेकिन रॉयल माँग तो बहुत है। ... लेकिन जब तक मंगता हो तब तक कभी भी खुशी के खज़ाने से सम्पन्न नहीं हो सकते।''

अ.बापदादा 13.12.95

''बापदादा की तो दिल होती है - टीचर्स ऐसे रिफ्रेश हो जायें, शक्तिशाली बन जायें, जो किसी भी सेन्टर पर कोई भी जाये तो एक भी आत्मा कमजोर नहीं दिखाई दे। ... ब्राह्मण माना विजयी। ... हर एक को मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में झमेला मुक्त बनना है।''

अ.बापदादा 4.12.95

''जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखें नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए।... टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाबा टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं।''

अ.बापदादा 7.11.95

''पहले टीचर्स आपस में खिटखिट खत्म करेंगी तब वायब्रेशन फैलेगा। ... किसी ने कुछ किया तो बाबा के सभी सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी जिम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है। ... टीचर का बैज पहनना बहुत अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना।''

अ.बापदादा 7.11.95

''टीचर्स की स्थिति सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न हो और सदा सन्तुष्ट रहें। ... सदा साक्षीपन और सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर खेल देखो। टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट।''

अ.बापदादा 6.4.95

''जैसी टीचर होगी, वैसी विशेषता स्टूडेण्ट्स में भी होगी। ... निमित्त भाव, करनकरावनहार की स्मृति टीचर्स को सदा ही सहज आगे बढ़ाती है। ... टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से सेवा करे। ऐसे दिव्य फीचर्स, मुस्कराते हुए फीचर्स, अचल-अडोल के फीचर्स स्वय: सेवा करते हैं।''

अ.बापदादा 25.3.95

''निमित्त टीचर्स का वायुमण्डल अनेकों तक पहुँचता है। ... हाँ जी का एक पाठ तो पक्का कर लिया लेकिन दूसरा पाठ बेहद के वैराग्य वृत्ति का, वह पक्का करके दिखाओ। ... सेवा के निमित्त बनना, ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है। ये भी विशेष वर्सा है।''

अ.बापदादा 5.12.94 टीचर्स

''टीचर्स तो सदा ही ज्ञान स्वरूप और स्मृति स्वरूप हैं ही। ... टीचर्स की विशेषता निमित्त भाव और निर्मान भाव, और निर्मल स्वभाव। ... यही निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। ... निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव।''

अ.बापदादा 26.11.94 टीचर्स

''यहाँ बहुत खबरदारी से निश्चयबुद्धि वाले को ही लाना है। अगर यहाँ आकर फिर जाये कोई पतित बना तो दण्ड ब्राह्मणी पर आ जायेगा। इसलिए ब्राह्मणी पर बहुत रेस्पॉन्सिबिलिटी है।''

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

''टीचर्स अर्थात् हर संकल्प, बोल और हर सेकेण्ड सेवा में उपस्थित।... अपने फीचर्स से सेवा करने वाले। संगमयुग का फ्युचर फरिश्ता है, वह फीचर्स से दिखाई दे। ... आपके फीचर्स से सदा सुख की, शान्ति की, खुशी की झलक अनुभव हो।''

अ.बापदादा 1.3.90

''टीचर्स सदा बेहद का भाव रखो। ... हद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। ऐसे नहीं समझना कि जितने सेन्टर्स खोलते वा जितनी ज्यादा सेवा करते, उतना बड़ा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की प्राइज़ नहीं मिलनी है। सेवा भी हो, सेन्टर्स भी हों लेकिन हद का नाम-निशान न हो। उसको ही नम्बरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा।''

अ.बापदादा 22.1.90

''टीचर्स सभी बड़ी दिल वाली हो ना!... सदा बेहद का भाव रखो। अगर दिल में हद का भाव है तो बेहद का बाप हद की दिल में नहीं रह सकता। ... स्व-परिवर्तन के लिए हद को सर्वंश सहित समाप्त करो। जिसको देखो, जो भी आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो।''

अ.बापदादा 22.1.90

''सभी टीचर्स आर्टिस्ट हो। बड़े-ते-बड़े चित्रकार वे हैं, जो हर कदम में अपने चरित्र का चित्र बनाते रहते हैं। ... अपना भी चित्र बनाते हो और अन्य आत्माओं को भी चित्रकार बना देते हो। ... सदा आज्ञाकारी माना सदा जिम्मेवारी के ताजधारी। इसको कहते हैं योग्य टीचर, योगी टीचर।''

अ.बापदादा 17.12.89

''टीचर्स कभी कम्पलेन नहीं कर सकती। औरों को भी कम्पलीट करने वाले हो, कम्पलेन करने वाली नहीं। ... आप सबके पत्रों का उत्तर बापदादा रोज़ की मुरली में देता ही है।''

अ.बापदादा 17.12.89

''टीचर्स का अर्थ ही है अपने फीचर्स से सबको फरिश्ते के फीचर्स अनुभव कराने वाली।... यह भी भाग्य है, जो निमित्त बने हो। अभी इस भाग्य को स्वयं अनुभव में बढ़ाओ और दूसरों को भी अनुभव कराओ। अनुभवी मूर्त बनो।''

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 1 टीचर्स

''हेण्ड्स कहाँ से आयेंगे ? जगह-जगह पर ऐसी आत्मायें तैयार करो और फिर तैयार हुए को और उम्मीदवार हेण्ड्स को विशेष समय निकाल कर ट्रेनिंग दो। ... सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है - स्व और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा।''

अ.बापदादा 16.3.92

''यह भी बीच-बीच में चान्स मिलता है बुद्धि को और एकाग्र करने का। लेकिन स्टूडेण्ट माना स्टडी जरूर करेंगे। ... टीचर का काम है अपनी योग-शक्ति से अपने एरिया का कर्फ्यू खत्म कराना। यह सीन भी देखने से निर्भयता का अनुभव बढ़ता जाता है।''

अ.बापदादा 18.01.93 पार्टीयों से

''वे सर्विस नहीं, डिस्सर्विस करते हैं।... टीचर का ही बुद्धियोग भटकता होगा तो वे मदद क्या करेंगे। जो टीचर हो योग कराने बैठते हैं, वे अपने से पूछें कि मैं पुण्य का काम कर रही हूँ?... जो सामने नेष्टा कराने बैठते हैं, उनको समझना है कि मैं सच्चा टीचर होकर बैठूँ।''

सा.बाबा 6.03.06 रिवा.

3. *मधुबन में या सेवाकेन्द्रों पर समर्पित अन्य भाई-बहनें,*

अ. यज्ञ की स्थूल सेवा के लिए समर्पित

ब. सेवाकेन्द्र पर रहते लौकिक सर्विस करते हुए समर्पित

स. यज्ञ में रहते, सेवा करते हुए यज्ञ से पैसा लेते

बाबा ने कहा है - जो यज्ञ की सूक्ष्म सेवा अर्थात् ज्ञान-योग से सेवा नहीं कर सकते हैं, वे योगयुक्त होकर यज्ञ की स्थूल सेवा करें तो भी बहुत ऊंच पद पा सकते हैं। सेवाकेन्द्रों पर कई भाई-बहनें लौकिक सर्विस करते हैं परन्तु यज्ञ के नियम-संयम में पूरा चलते हैं, वे भी यज्ञ में समर्पित हैं। कई ऐसे भी हैं जो यज्ञ में अर्थात् सेवाकेन्द्रों पर या मधुबन में समर्पित हैं, परन्तु यज्ञ से पैसा लेते हैं, उनमें कुछ ऐसे हैं, जिनको किसी लौकिक मजबूरी के कारण लेना पड़ता है और कोई तो बैंक बैलेन्स के लिए भी लेते हैं।

ये सब प्रकार के समर्पित हैं परन्तु सृष्टि के विधि-विधान अनुसार सबके फल में महान अन्तर है, उस अनुसार ही वे अपने जीवन में पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं। उसके विषय में वे स्वयं भी समझ सकते हैं, दूसरे भी समझ सकते हैं, यज्ञ के निमित्त भी समझते ही हैं। इसके लिए बाबा ने कहा है - ये राजाई स्थापन हो रही है और राजाई में सब प्रकार के होंगे, उसका बीज हर एक यहाँ ही बोयेगा और उनके कर्म-संस्कार वैसे यहाँ ही स्पष्ट होंगे।

4. *घर-गृहस्थ में रहने वाले ट्रस्टी भाई-बहनें*

जो घर-गृहस्थ में रहते मन से परमात्मा के प्रति, उनके विश्व-कल्याण के कार्य के प्रति समर्पित हैं, परमात्मा की श्रीमत अनुसार नियम-संयम में रहते हैं, अपना तन-मन-धन परमात्मा का

समझ ईश्वरीय सेवा में सफल करते हैं, उनके लिए भी बाबा ने कहा है कि वे भी समर्पित ही हैं। इसलिए वे भी परमात्मा से पवित्रता, सुख-शान्ति, आनन्द का वर्सा पाते हैं। जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं और नई दुनिया स्वर्ग में ऊंच पद के अधिकारी बनते हैं।

इसके लिए बाबा ने ये भी कहा है कि दास-दासी बनने से तो प्रजा में साहूकार बनना अच्छा है। साहूकारों को भी राज-दरबार में बैठने का निमन्त्रण मिलता है परन्तु दास-दासियों को राज-दरबार में बैठने का अवसर नहीं मिलता है।

* बाबा के बनते ही हमको राजधानी में आने का अधिकार तो मिल गया क्योंकि जो बाबा का बना, उसको स्वर्ग का वर्सा तो मिलना ही है परन्तु ये राजधानी स्थापन हो रही है, इसमें राजा-रानी, दास-दासी, साहूकार-ग़रीब प्रजा, चण्डाल आदि सब बनेंगे, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने ज्ञान दिया है कि कैसे कर्मों से कौन बनेंगे। अब विचार करके हमको निर्णय करना है कि हम मधुबन में या सेवाकेन्द्र पर समर्पित हों या नहीं।

* बाबा ने यह भी बताया है कि राजघराने में राजा-रानी, राज परिवार में जन्म लेने वाले और उनके नौकर-चाकर, दास-दासी भी मधुबन या सेवाकेन्द्रों पर समर्पित होने वाले ही बनेंगे और प्रजा में साहूकारों के दास-दासी, नौकर-चाकर वे बनेंगे, जो बाहर रहकर बाबा के बनें हैं, बाबा की सेवा करते हैं।

* टीचर्स को बाबा गुरु-भाई कहकर गौरवान्वित करते हैं, मधुवन वालों को कहते हैं - जो चुल पर सो दिल पर, मधुबन की भूमि का भी महत्व है। यज्ञ की स्थूल सेवा का भी विशेष महत्व है, ज्ञान की सेवा का विशेष महत्व है। बाबा के ये सब शब्द गुह्य राज़ से भरे हुए हैं। तमोप्रधान आत्माओं के संग और ज्ञानी-योगी आत्माओं के संग का भी विशेष महत्व है।

''वैसे ही भल बाहर में घर गृहस्थ में रहते हैं, यह समझते हैं कि यह सब कुछ बाबा का है, हमारे पास तो कुछ नहीं है, हम तो ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी कुछ अपने पास नहीं रखते हैं। समझते हैं बाबा ही मालिक है। घर में रहते ऐसे समझो कि यह सब बाबा का है।... कुछ भी करो बाबा को इशारा देते रहो।''

सा.बाबा 27.05.09 रिवा.

''हम चाहते हैं कि जल्दी विनाश हो जाये, फिर कहते हैं - अभी तो बाबा साथ है। बाबा को छोड़ देंगे तो फिर बाबा 5 हजार वर्ष के बाद मिलेगा, ऐसे बाबा को हम कैसे छोड़ें। बाबा से तो हम पढ़ते रहें। यह है ब्राह्मणों का ऊंचे ते ऊंचा जन्म।... परन्तु गंगा पर रहने वालों को गंगा का इतना कदर नहीं रहता है,... यहाँ भी बाहर वाले कुर्बान जाते हैं।''

सा.बाबा 23.03.09 रिवा.

स्थान के आधार पर या तन से समर्पित होने के सम्बन्ध में नियम-संयम

Q. यज्ञ अर्थात् मधुवन में या सेवाकेन्द्र पर किसी घटना या व्यवहार के कारण कोई आत्मा कर्तव्य-विमुख, पथ-भ्रष्ट हो जाती है, यज्ञ की मर्यादा-विधि-विधान के विपरीत कोई अनैतिक कर्म करती है तो दोषी कौन ? अर्थात् जो निमित्त बना या जो पथ-भ्रष्ट हुआ ?

वास्तव में दोनों ही दोषी हैं और दोनों को ही अपने कर्मानुसार फल भोगना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक प्रकार से कर्म और फल का विधि-विधान और ड्रामा का राज़ बताया है, इसलिए इस सम्बन्ध में निम्नलिखत तथ्य विचारणीय हैं।

* गीता में महावाक्य हैं - जो मेरा बनता है, उसका योग-क्षेम अर्थात् पालना मैं करता हूँ। अभी जो परमात्मा की शक्तियों को जानकर उनके ब्रह्मा द्वारा बनते हैं और श्रृद्धा-विश्वास के साथ उनके आधार पर रहते हैं, उनकी समय पर वह मदद अवश्य करता है अर्थात् जाने-अन्जाने परमात्मा द्वारा उनकी मदद अवश्य होती है परन्तु जो संशयबुद्धि हैं, वे विश्व-नाटक के इस गुह्य राज़ को न जानने के कारण परमात्मा के बनकर भी स्वयं ही स्वयं को धोखा देते हैं अर्थात् अपने समय और शक्तियों को व्यर्थ गँवाते हैं।

* मधुबन में समर्पित होने वालो - सेवाकेन्द्र की पूर्व टीचर्स, लौकिक सम्बन्धियों आदि से जो लगाव बना रहता है और समर्पित होने वाले उनसे कोई आशा-आकांक्षा रखते हैं, वे परमात्मा की यथार्थ रीति मदद नहीं ले सकते हैं और न ही यथार्थ रीति अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि बाबा ने बताया है, जो किसी अन्य को अपना सहारा या आधार बना लेता है, बाप उसका सहारा या आधार नहीं रहता है।

ये वैराइटी ड्रामा है, आत्माओं के वैराइटी कर्म-संस्कार हैं, जिसके कारण उनकी प्राप्तियाँ भी वैराइटी अवश्य होंगी। पिछले कर्मों के फलस्वरूप हर आत्मा को कर्मभोग अवश्य सम्भावी है, कर्मों की भिन्नता के कारण उनके फलस्वरूप उनको यज्ञ से मिलने वाली साधन-सुविधायें, उपचार में भी भिन्नता अवश्य होगी। विश्व-नाटक के इस गुह्य रहस्य को जानकर इसमें भी जो समर्पित बुद्धि हैं, वे ही इस समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकते हैं अन्यथा वे व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन, भविष्य की चिन्ता, आशंकाओं में चले जायेंगे, जिसके कारण जो वर्तमान में पुरुषार्थ करना चाहिए, वह भी नहीं कर सकेंगे और जो वर्तमान का सुख अनुभव करना चाहिए, उससे भी वंचित रह जायेंगे और जब वर्तमान में पुरुषार्थ नहीं किया, यथार्थ रीति सेवा नहीं की तो सतयुग की तो बात ही छोड़ दो वर्तमान जीवन में भी भविष्य में क्या मिलेगा - यह विचारणीय विषय है।

* विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है कि हर आत्मा को उसके जमा किये गये खाते

के अनुसार ही मिलता है। हमको विचार करना है कि हमने तन-मन-धन से क्या जमा किया है, कितनी लगन से और कितनी सेवा की है। हम कितना अपने लौकिक से लाकर समर्पित हुए हैं अर्थात् हमारा जो लौकिक में हिस्सा है, उसको लेकर समर्पित हुए हैं या नहीं अर्थात् वह लौकिक सम्बन्धियों के पास ही छोड़ दिया है। समर्पण जीवन की सफलता और प्राप्ति में इसका विशेष महत्व है। यह इस विश्व-नाटक का गुह्य राज है, जिसके विषय में आदि से ही बाबा ने बताया है और पुराने जो समर्पित हुए हैं, उनके जीवन से प्रत्यक्ष में उदाहरण भी दिये हैं। इस सम्बन्ध में दादी चन्द्रमणी और उनके पिता दादा रतनचन्द का उदाहरण स्पष्ट है।

बाबा ने कहा है - ये एक बैंक है, इसमें जो जितना जमा करता है, वह उस उतना ही पाता है। इसलिए हमको बैंक के विधि-विधान, गुण-धर्मों को भी अच्छी रीति समझना है। ये मधुवन भी बेहद की बैंक की एक शाखा है, इसमें जो साधन-सम्पत्ति है, वह सब सामूहिक सम्पत्ति है, उस सब पर हमारा अधिकार नहीं है अर्थात् वह सारा ही हमारा नहीं है। उसमें हमारा उतना ही है, जितना हमने जमा किया है और उस अनुसार ही हमको समय पर मिलेगा। सारे पर अपना अधिकार जताना भी अज्ञानता की निशानी है और अज्ञानी आत्मायें सदा ही दुखी रहती हैं। जो हमने जमा किया है, वह हमको जाने-अन्जाने मिलेगा अवश्य। न उससे अधिक मिल सकता है और न ही कम। यह इस विश्व-नाटक का नियम है। इस सत्य को जानकर इस समर्पण जीवन को सफल करना ही बुद्धिमानी है और सफल करने वाले ही जीवन में सफलता को पा सकते हैं।

हमको ये बात भी सदा याद रखनी चाहिए कि बाबा सत्य है, इसलिए वह कोई भी शब्द ऐसे ही नहीं बोलता है। उसका हर बोल और हर शब्द सत्य है अर्थात् हर बोल में राज़ है। उस राज़ को समझने वाले निश्चयबुद्धि आत्मा की सदा ही विजय है अर्थात् वह सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है और करेगा।

हम किस भावना से यज्ञ में समर्पित हुए हैं, वह भी महत्वपूर्ण है। उसके अनुसार ही हमारी प्राप्तियाँ निश्चित होती हैं।

बिना समझे, व्यर्थ चिन्तन में करना, पर-चिन्तन में अपना समय और शक्ति गँवाना भी एक माया है, जो हमारे पाप का खाता बढ़ाती है, जिसके फलस्वरूप हमारे जीवन में भय-चिन्ता, असुरक्षा की भावना बढ़ती है और वह हमारे पुरुषार्थ में विघ्नरूप बन जाती है, जिससे हमारा वर्तमान के साथ भविष्य भी अन्धकारमय बन जाता है।

अज्ञानता के वशीभूत जो दूसरों के विषय में ऐसा चिन्तन करते हैं, वे उनको सहयोग देने के बजाये और ही उसको व्यर्थ चिन्तन में ले जाते हैं, उसके जीवन को अन्धकारमय बनाते

हैं।

हम यज्ञ में अपने पुरुषार्थ से समर्पित हुए हैं या यज्ञ की किसी आत्मा के सहयोग से या किसी सम्बन्धी या टीचर के सहयोग से समर्पित हुए है, यह भी समर्पित जीवन की सफलता में विशेष महत्व रखता है। जो किसी को आधार बनाकर समर्पित होते हैं, वे प्राय: लंगड़ाते रहते हैं अर्थात् समर्पित जीवन का यथार्थ सुख अनुभव नहीं कर पाते हैं।

यज्ञ में समर्पित होने वाले जो ड्रामा को और जमा के खाते को अपनी बुद्धि में रखकर चलते हैं, वे ही अच्छा पुरुषार्थ करके अपना भविष्य अच्छा बनाते हैं।

C. *कर्तव्य के आधार पर समर्पणता*

''अभी सम्पूर्ण समर्पण हुए हो तो सर्विस भी सम्पूर्ण करनी है। ... सिर्फ सन्देश देना सर्विस नहीं है लेकिन सन्देश देना अर्थात् उनको अपने सम्बन्धी बनाना। अपना सम्बन्धी तब बनायेंगे, जब उनको बाप का स्नेही बनायेंगे। ... उनको इस स्नेह और सम्बन्ध में लाओ। हैं तो सभी आपके सम्बन्धी ना। सम्बन्धियों को अपना सम्बन्ध याद दिलाओ, अनुभव कराओ।''

अ.बापदादा 3.8.08 रिवा.

कर्तव्य के आधार पर समर्पित होने वालों में -

I. तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से समर्पित होकर एक परमात्मा और उसके कार्य में संलग्न

II. बाबा का बनकर या यज्ञ में समर्पित होकर तन-मन-धन, मन-बुद्धि से लौकिक सम्बन्धियों के हितार्थ कार्य करना।

III. गृहस्थ व्यवहार में रहते तन-मन-धन से बाप के साथ विश्व-कल्याण के कार्य में तत्पर।

''बाप भी देखते हैं कि सबकुछ हमको अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कैसे चलते हैं। कोई उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पापात्माओं को तो नहीं देते हैं। शुरू में इसने भी सबकुछ अर्पण कर ट्रस्टी होकर दिखलाया ना। सबकुछ ईश्वर को अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया। बस किसको भी कुछ नहीं दिया। ईश्वर के अर्थ दिया तो सब ईश्वर के काम में ही लगना है। ... इनको देखकर फिर औरों ने भी ऐसे किया।''

सा.बाबा 2.8.06 रिवा.

IV. गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन अर्थात् ट्रस्टी जीवन

V. घर-गृहस्थ में लौकिक सम्बन्धियों के साथ रहते समर्पित जीवन,

बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है मधुबन, ज्ञान-सरोवर, आबू निवासी सब मधुबन निवासी हैं अर्थात् समर्पित हैं और सब यज्ञ के प्रति जिम्मेवार हैं।

बाबा ने विश्व-नाटक के विधि-विधान का ज्ञान देकर और उनको समझकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी बनकर इसमें पार्ट बजाने की श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब में ट्रस्टी बनना है। बाबा कहते हैं - गृहस्थ में रहते भी समझो हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं, ईमानदारी से सारा आय-व्यय का पोतामेल बाबा को दो। सेवाकेन्द्र के समान ही पवित्रता से भोजन बनाओ, भोग लगाओ और बाबा की याद में खाओ। धन-सम्पत्ति भी शिवबाबा की समझकर शिवबाबा की श्रीमत अनुसार उपयोग करो, सफल करो।

''ट्रस्टी बनकर रहो तो ममत्व मिट जाये। परन्तु ट्रस्टी बनना मासी का घर नहीं है। यह ब्रह्मा खुद ट्रस्टी बने हैं, बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं।... जब कहते हो - यह ईश्वर का दिया हुआ है तो फिर मरने पर रोने की क्या दरकार है?''

सा.बाबा 26.1.05 रिवा.

''अपने को ट्रस्टी समझकर धन्धा आदि करो तो ममत्व मिट जायेगा। यह बाबा लेकर क्या करेंगे! इसने तो अपना सब कुछ छोड़ा ना।'' सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''जब लौकिक कार्य भी बाप की श्रीमत प्रमाण करते हो जिसकी श्रीमत है, वही याद आयेगा ना! इसलिए बापदादा कहते लौकिक कार्य करते भी सदा अपने को ट्रस्टी समझो। ट्रस्टी भी हो और वारिस भी हो। चाहे कहाँ भी रहते हो लेकिन मन से समर्पित हो तो वारिस हो।''

अ.बापदादा 23.12.87 पार्टी

''ट्रस्टी बनकर रहो तो सदा हल्के रहेंगे। साफ दिल मुराद हासिल। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरूर होती है।... कोई भी आये तो आपके भण्डारे से खाली न जाये।''

अ.बापदादा 25.12.82

''अब यह पुरानी दुनिया बदल रही है। बाबा अपना मिसाल बताते हैं। बाबा ने साक्षात्कार कराया, देखा 21 जन्मों के लिए राजाई मिलती है, उसके आगे ये 10-20 लाख क्या हैं। ... मोहजीत भी जरूर बनना पड़े।'' सा.बाबा 18.11.05 रिवा.

''ऑनेस्टी अर्थात् अमानत में कभी भी ख्यानत नहीं करें। वेस्ट करना अर्थात् अमानत में ख्यानत करना।... वह छोटी सी वस्तु को भी वेस्ट नहीं करेगा।''

अ.बापदादा 18.12.91

'''मेरा बाबा' और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।''

अ.बापदादा 12.11.92

''परिवार को ट्रस्टी बनकर सम्भालते हो या गृहस्थी बनकर सम्भालते हो ? ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। ... ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है, सम्भालते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के। ... जरा भी दुख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। चेक करो।'' अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 4

''ब्रह्मा भोजन भी बाप ही ब्राह्मण बच्चों को खिलाता है। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उससे भोजन मंगाते हो लेकिन अपनी कमाई भी पहले बाप की भण्डारी में डालते हो। भण्डारी भोलानाथ का भण्डारा बन जाता है। इस विधि को कब भूलना नहीं। ... ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा।'' अ.बापदादा 7.3.88

'''मेरा बाबा ' और मैं बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा और न भूलेंगे।''

अ.बापदादा 12.11.92

''अगर बाप में पूरा निश्चय है तो पूरा श्रीमत पर चलना पड़े। हर एक की नब्ज़ देखी जाती है, उस अनुसार फिर राय भी दी जाती है। बाबा ने भी बच्चे को कहा - अगर शादी करनी हो तो जाकर करो, बहुत मित्र-सम्बन्धी आदि बैठे हैं, वे शादी करा देंगे।... पूछते हो, अगर नहीं रह सकते तो जाकर शादी करो।'' सा.बाबा 16.02.06 रिवा.

''कदम-कदम पर बाप से राय लेनी पड़े। सरेण्डर हो जाये तो फिर बाप कहेंगे - अब ट्रस्टी बनो। बाबा की राय पर चलो। अपना पोतामेल बतायेंगे तब तो बाबा राय देंगे।''

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

''बच्चे समझ सकते हैं कि कौन-कौन कितना श्रीमत पर चलते हैं। श्रीमत मिलती है सर्विस करने की।... बाबा तुमको मकान आदि बनाने के लिए कभी मना नहीं करते हैं। तुम अपने ही घर में एक कमरे में हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी बना दो।''

सा.बाबा 6.5.06 रिवा.

''तुम जानते हो बाप ने क्या किया ? सब कुछ माताओं को दे दिया। उसने ही डायरेक्शन दिया कि सब कुछ माताओं की सर्विस में लगाओ।... श्रीमत पर चलने से कदम-कदम पर पदम हैं।'' सा.बाबा 26.7.06 रिवा.

''परमात्म-पालना में ही सभी ब्राह्मण चल रहे हो।... अपनापन अर्थात् गृहस्थी और ट्रस्टी अर्थात् सब बाप का है।... जैसे समर्पित भाई-बहनें भिन्न-भिन्न कार्य में तन-मन-धन लगाते हैं, ऐसे प्रवृत्ति में रहने वाले भी... बाप की अमानत समझ श्रीमत प्रमाण अपना तन-मन-धन लगाते हो।'' अ.बापदादा 13.12.89

''तन-मन-धन सब तेरा। इसमें बाप का फायदा नहीं है, आपका ही फायदा है। क्योंकि मेरा कहने से फंसते हो और तेरा कहने से डबल लाइट ट्रस्टी बन जाते हो। ... जब तक हल्के नहीं बने तब तक ऊंची स्थिति तक पहुँच नहीं सकते। उड़ती कला ही आनन्द की अनुभूति कराने वाली है। ... सदा यही याद रखना कि मैं ट्रस्टी हूँ।''

अ.बापदादा 1.12.89 पार्टी 1

''बाप ने जन्म लेते ही दिव्य-दृष्टि, दिव्य-बुद्धि का वरदान दे दिया है तो दिव्य बुद्धि में साधारण बातें आ नहीं सकती।... दिव्य जन्मधारी ब्राह्मण तन से साधारण कर्म कर नहीं सकते, मन से साधारण संकल्प कर नहीं सकते, धन को साधारण रीति से कार्य में नहीं लगा सकते क्योंकि तन-मन-धन तीनों के ट्रस्टी हो, इसलिए बाप की श्रीमत के बिना कार्य में लगा नहीं सकते।''

अ.बापदादा 11.11.89

''इस ज्ञान मार्ग में कायदे बड़े कड़े हैं। बाप पवित्र बनें और बच्चा पवित्र न बनें तो वह बच्चा हकदार नहीं हो सकता है, उसको बच्चा नहीं समझेंगे। ... गृहस्थ व्यवहार में ट्रस्टी होकर रहना है।... अभी तुमको राइट-राँग की बुद्धि मिली है तो कोई भी राँग काम नहीं करना।''

सा.बाबा 22.6.06 रिवा.

''बाप ने इस तन रूपी मन्दिर का ट्रस्टी बनाया है। ट्रस्टीपन स्वत: ही नष्टोमोहा अर्थात् स्वच्छता और पवित्रता को अपने में लाता है।... मन की स्वच्छता अर्थात् मन के प्रति बापदादा का डॉयरेक्शन है - मन को मेरे में लगाओ या विश्व-सेवा में लगाओ।... और किसी तरफ भी मन भटकता है तो भटकना अर्थात् अस्वच्छता। इस विधि से चेक करो कि कितनी परसेन्ट में स्वच्छता धारण हुई है?''

अ.बापदादा 6.1.90

''मेरा-मेरा कहकर मैला कर देते हैं। मन दे दिया, तन दे दिया, धन दे दिया। ट्रस्टी हो गये। तो ट्रस्टी हो या गृहस्थी हो? गृहस्थी माना मेरा और ट्रस्टी माना तेरा। अपने में ट्रस्ट है? बाप तो स्वयं ऑफर करता है कि मैं आपके साथ हूँ।''

अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 4

''जैसे स्थूल आंखों से देखा जाता है, वैसे अनुभव भी एक ऑख है। सबसे बड़ी ऑख है अनुभव। अनुभव की ऑख से देखा तो भी देखा कहेंगे।... ब्रह्मा बाप के चित्र के आगे बैठते हो तो भी चेतन्यता का अनुभव करते हो... रेस्पान्स भी मिलता है ना। तो बाप है तभी तो सुनता है और रेस्पान्स देता है। इस अनुभव से वंचित नहीं रह जाना।''

अ.बापदादा 9.3.94

''अगर ट्रस्टी है तो निर्बन्धन हैं और गृहस्थी है तो बन्धन है।... निर्बन्धन उड़ती कला वाले

सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुँच सकते हैं। इसको कहा जाता है योगबल, शान्ति की शक्ति।''

अ.बापदादा 1.2.94 पार्टी 3

''बच्चों को हिम्मत रखनी चाहिए, बाबा की श्रीमत पर चलना चाहिए ना।... अगर बच्चा तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता है तो बच्चा, बच्चा नहीं।... तुम शिवबाबा को अपना वारिस बनायेंगे तो वह तुमको 21 जन्मों के लिए वर्सा देंगे।''

सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

VI. घर-गृहस्थ में लौकिक अर्थात् अज्ञानी सम्बन्धियों के साथ रहते समर्पित जीवन

घर-गृहस्थ में रहते समर्पित जीवन अर्थात् कमल पुष्प सम जीवन। बाबा ने घर-गृहस्थ में रहते हुए जो बाबा की श्रीमत पर चलते हैं, उनको भी समर्पित कहा है परन्तु जो अज्ञानी सम्बन्धियों के साथ रहते हैं, उनको बहुत सम्भल कर चलना होता है।

उत्तरदायित्व - अपने अधिकार और कर्तव्य को समझकर बच्चों का मात-पिता के प्रति और माता-पिता का बच्चों-बच्चियों के प्रति क्या कर्तव्य है और उसको कैसे निभायें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

''मधुबन में रहते मधुरता और बेहद की वैराग्यवृत्ति को धारण करना है। यह है मधुवन का मुख्य लक्षण।... बाहर रहते भी अगर यह लक्ष्य है तो गोया मधुवन निवासी हैं। जितना यहाँ रेस्पान्सिबिलिटी लेते हैं, उतना वहाँ प्रजा द्वारा रेस्पेक्ट मिलेगा।''

अ.बापदादा 27.07.70

''बच्चे को शादी कराना गोया रौरव नर्क में ढकेलना है। समझना है कि इसमें हम मदद करता हूँ, तो यह भी पाप चढ़ता है। पापात्मा बन जाता हूँ। बुद्धि से काम लेना चाहिए ना। मुरली में खबरदार रहने की तो सब बातें आती हैं। कोई पाप किया तो वह सौगुणा हो जाता है। ज्ञान में आकर फिर ऐसा पाप करे, बच्चे को खुश करने के लिए तो दोष आ जाता है। यह है किसका खून करना। ... अपने हाथों से बच्चों का खून न करना है। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे भल कराओ। ज्ञानवान खुद समझते हैं, वे कब पूछेंगे नहीं। बच्ची की तो शादी करानी ही है। आपेही जाकर डूबती है, उसको तो कराना पड़े। बच्चा तो भल खराब हो जाये, उसका ख्याल नहीं रहेगा।''

सा.बाबा 20.12.69 रिवा.

''पूछते हैं - बच्चे की शादी करायें... पूछते हैं तो इससे ही समझा जाता है कि हिम्मत नहीं है, तो बाबा कह देते हैं भल कराओ... मोह भी तो है ना।... यह तो समझने की बात है कि हमको फूल बनना है तो पवित्र के हाथ का खाना है। उसके लिए अपना प्रबन्ध करना है। इसमें पूछना

थोड़ेही होता है।''

सा.बाबा 22.6.05 रिवा.

''अगर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहते हो तो विचार सागर मंथन करो... बच्चे आदि की परवाह नहीं रखी जाती है। वास्तव में बच्चे की शादी कराना न चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा खोनी पड़ती है दुश्मन से डरना थोड़ेही होता है। बाबा का हाथ मिला फिर परवाह किसकी नहीं रखी जाती है।''

सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

बाबा से पूछते हैं, बाबा मकान बनायें तो भी बाबा कहते हैं - पैसा है तो भल मकान बनाओ, मोटर गाड़ी लो, आराम से रहो। मकान बनाते हो तो उसमें एक कमरा योग और सेवा के लिए भी बनाओ, उसमें भी चित्र आदि लगे हों, जिससे कोई घर में आये तो सेवा कर सको। परन्तु ये सब करते खान-पान, रहन-सहन की पूरी परहेज रखनी है, तब ये ब्राह्मण जीवन सफल होगा।

सर्विस करने वाले रिश्वत आदि लेने के प्रसंग में भी बाबा से पूछते हैं तो बाबा ने कहा है, रिश्वत आदि लेते हो तो उसका अच्छा-बुरा परिणाम तुमको स्वयं ही भोगना। बाबा तो कहता है - पेट तो दो रोटी ही खाता है, उसके लिए अधिक मारामारी करने की आवश्यकता नहीं है। रहना भी साधारण है। दुनिया में कहावत है - उतना पैर पसारिये, जितनी लम्बी चादर होये। बाबा ये भी कहते हैं - तुमको किससे रीस अर्थात् प्रतिस्पर्धा नहीं करनी है।

बाबा ने मिलिटरी या पुलिस की सर्विस करने वालों के कृत्य-अकृत्य के लिए भी श्रीमत दी है, जिससे वे विकर्मों से बच सकें। पुलिस वालों के लिए बाबा ने कहा है - पहले प्यार से समझाओ, प्यार से काम न हो तो मार आदि से काम लो। परन्तु सच्चे दिल का प्यार होगा तो प्यार से ही काम हो जायेगा। मिलीटरी वालों को भी बाबा कहते - देश की रक्षा तो करनी ही है लेकिन तुम बाबा की याद में गोली चलायेंगे तो तुम सहज सफलता को पायेंगे, तुम बाबा की याद में मर भी जायेंगे तो स्वर्ग में आ जायेंगे।

कोई कहते हम रिश्वत लेकर यज्ञ सेवा में लगायें परन्तु बाबा उसके लिए कभी हाँ नहीं करता है। हाँ जिनकी सर्विस ऐसी है, जो संगठन में रिश्वत लेनी ही पड़ती है तो बाबा कहते हैं - उस पैसे को सेवा में लगा दो, अपने प्रयोग में न लाओ, तो तुम उसके पाप से बच जायेंगे। ''विश्व के आगे चैलेन्ज की हुई है कि घर-गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प के समान न्यारे और प्यारे रहने की। कीचड़ में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राहमण - इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त हैं।''

अ.बापदादा 28.4.74

''फर्स्ट चैलेन्ज है प्युरिटी की। सम्पर्क और सम्बन्ध में रहते संकल्प में भी इसी फर्स्ट चैलेन्ज

की कमजोरी न हो।... क्योंकि यही असम्भव को सम्भव करने वाली एक बात है।''

अ.बापदादा 28.4.74

''होलीएस्ट का कौनसा गायन है? कमल-नयन, कमल-हस्त, कमल-मुख के रुप में अब तक भी गायन करते रहते हैं। अब प्रक्टिकल में चेक करो कि हर कर्म-इन्द्रियां कमल समान न्यारी बनी है...कोई कर्म-इन्द्रियों का रस देखने का, सुनने का, बोलने का अपने वशीभूत तो नहीं बनाता है? वशीभूत होने का अर्थ है होलीएस्ट से भूत बन जाना।''

अ.बापदादा 23.1.76

''बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो, गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सिमरण करते रहो। ... अभी तुमको ईश्वरीय मत पर चलना है।''

सा.बाबा 29.8.05 रिवा.

''बहुत बच्चियां आती हैं, जिनकी दिल होती है - हम कहाँ सर्विस में लग जायें परन्तु छोटे-छोटे बच्चे हैं। बाबा कहते हैं बच्चों को सम्भालने के लिए कोई माई को रख दो और सर्विस में लग जाओ तो बहुतों का कल्याण करेंगी। होशियार हैं तो क्यों नहीं रुहानी सर्विस में लग जायें।''

सा.बाबा 19.11.05 रिवा.

''छोटे बच्चों को सुधारने के लिए कान से पकड़ते हैं... थप्पड़ नहीं लगाओ, नहीं तो वे भी मारना सीख जायेंगे।... बहुत तंग करे तो कान से पकड़ सकते हो। ... निर्मोही भी बनना चाहिए।''

सा.बाबा 2.12.05 रिवा.

''घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं, यह याद रहता है या जगत माता हैं, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ - यह याद रहता है? ... जिसको यह रुहानी नशा होगा वह कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और न्यारा होगा।''

अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

''चाहे प्रवृत्ति वाले, चाहे सेन्टर वाले ... सदा शिव बाप की भण्डारी है और ब्रह्मा बाप का भण्डारा है - इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी और भण्डारा भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा वा भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी।... कोई कमी होती है तो इसका कारण बाप के बजाये मेरेपन की खोट है।''

अ.बापदादा 18.1.92

''अगर प्रवृत्ति में भी रहते हो तो सेवा के लिए रहते हो। कभी भी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्म-बन्धन है ... सेवा है। सेवा के बन्धन में बँधने से कर्म-बन्धन खत्म हो जाता है। ... निशानी है - अगर कर्म-बन्धन होगा तो दुख की लहर आयेगी और सेवा का बन्धन होगा

तो दुख की लहर नहीं आयेगी, खुशी होगी।''

अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 2

''कभी भी यह नहीं सोचो कि यह गृहस्थी का घर है, प्रवृत्ति है। प्रवृत्ति का अर्थ ही है पर-वृत्ति में रहने वाले। ... वातावरण भी लौकिक नहीं, अलौकिक।''

अ.बापदादा 31.12.93 पार्टी 3

''बन्धन नहीं है, स्वतन्त्र हैं तो बाबा राय देंगे कि क्यों नहीं सर्विस में लग जाते हो। स्वतन्त्र हैं तो बहुतों का भला कर सकते हो।... जैसे बाप रहम करता है, ऐसे तुमको भी औरों पर रहम करना चाहिए।... बच्चों को बहुत रहमदिल, कल्याणकारी बनना है।''

सा.बाबा 17.4.06 रिवा.

''तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल-फूल समान पवित्र बनना है। ... हर एक को अपना कल्याण करना है। तुम शिवबाबा पर थोड़ेही मेहरबानी करते हो। मेहरबानी तो अपने पर करनी है। अब श्रीमत पर चलना है।... वे राजा के लिए लड़ते हैं, तुम अपने लिए सब कुछ करते हो।''

सा.बाबा 10.4.06 रिवा.

''यहाँ रहकर पुरुषार्थ करने वालों से भी घर में रह पुरुषार्थ करने वाले तीखे हो सकते हैं। ... शास्त्रों में भी अर्जुन और भील का मिसाल है ना। ... यहाँ रहने वालों को भी माया छोड़ती नहीं है। ऐसे नहीं कि बाबा के पास आने से माया से छूट जाते हैं। ... घर-गृहस्थ में रहने वाले भी अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं।''

सा.बाबा 7.4.06 रिवा.

''ऐसे भी हैं, जो गृहस्थ व्यवहार में रहते भी अर्पणमय जीवन है, बहुत सर्विस कर रहे हैं । ... देखा जाता है कि बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहने वाले बहुत तीखे हो जाते हैं। ... कन्या वा कुमार, वानप्रस्थी को गृहस्थी नहीं कहेंगे। ... उनमें भी कुमारियों को अच्छा चान्स है। ... यहाँ रहने वालों से भी बाहर रहने वाले बहुत ऊंचा पद पा सकते हैं।''

सा.बाबा 20.03.06 रिवा.

''धन्धा आदि भल करो। कर्म तो करना ही है परन्तु बुद्धि का योग वहाँ लगा रहे। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए तुम मुझे याद करो तब ही तुम नई दुनिया के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

''तुम अभी जीते जी बाप के बने हो। बाप कहते हैं - तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहना है। बाबा कभी किसको कह नहीं सकते कि तुम घरबार छोड़ो। नहीं, गृहस्थ व्यवहार में रहते सिर्फ इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनना है। ... तुमने ईश्वरीय सेवा अर्थ आपेही छोड़ा है। कई बच्चे हैं, जो घर-गृहस्थ में रहते भी ईश्वरीय सर्विस करते हैं।''

सा.बाबा 11.03.06 रिवा.

''यहाँ रहने वालों से भी जो घर-गृहस्थ में रहते हैं, सर्विस में रहते हैं, वे बहुत ऊंच पद पाते हैं। ... इससे तो जो बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं, वे बहुत ऊंच चले जाते हैं। ... सेन्टर्स की हेड्स को बिल्कुल निरहंकारी होकर रहना है। बाप देखो कितना निरहंकारी है। ... न नाम-रूप में फंसना है और न देहाभिमान में आना है।''

सा.बाबा 11.03.06 रिवा.

''मम्मा-बाबा भी पढ़ रहे हैं श्रीमत से। वे पहले नम्बर में आते हैं, फिर जो उनको फॉलो करते हैं, वे ही उनके तख्त पर बैठेंगे। ... भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, बच्चों को सम्भालो परन्तु आत्मा की दिल बाप की तरफ हो। घर में रहते यही प्रक्टिस करते रहो।''

सा.बाबा 1.03.06 रिवा.

''बापदादा चाहते हैं - एक-एक माता जगत-माता बन विश्व का कल्याण करे ... ड्रामानुसार वर्तमान समय माताओं को चान्स मिला है, इसलिए माताओं को आगे रखना है।''

अ.बापदादा 22.1.88 माताओं से

''बाबा कोई मकान आदि बनाने की मना नहीं करते हैं। भल बनाओ। पैसे भी तो मिट्टी में मिल जायेंगे, इससे तो क्यों न मकान बनाये, आराम से रहो। पैसे काम में लगाने चाहिए। मकान भी बनाओ, खाने के लिए भी रखो, दान-पुण्य भी करो।''

सा.बाबा 15.02.06 रिवा.

''तुम बच्चों को गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, धन्धा आदि भी करना है। हर एक अपने लिए राय पूछते हैं। ... बाबा हर एक की नब्ज़ देखकर राय देते हैं ... कहूँ और करे नहीं तो नाफरमानबरदार की लाइन में आ जाये।''

सा.बाबा 6.02.06 रिवा.

''मनुष्य समझते बच्चे बड़े हो गये तो शादी करायें ... अगर बच्चा राय पर नहीं चलता है तो फिर श्रीमत लेनी पड़े कि बच्चा स्वर्गवासी नहीं बनता है तो हम क्या करें। अगर आज्ञाकारी नहीं है तो जाने दो। इसमें पक्की नष्टोमोहा अवस्था चाहिए।''

सा.बाबा 31.01.06 रिवा.

''तुमको लौकिक मित्र-सम्बन्धियों की सर्विस भी अनासक्त होकर अपनी फर्ज-अदाई समझ पालन करनी चाहिए, मोह की रग नहीं जानी चाहिए।''

सा.बाबा 04.01.55

''बाबा कहते - अगर छुट्टी नहीं मिलती है, तो घर बैठे याद करो। यह तो जानते हो - हम शिवबाबा की सन्तान हैं। मुरली तो मिल जाती है। ऐसे नहीं कि यहाँ आने से याद की यात्रा

अच्छी होगी, घर में बैठने से याद की यात्रा कम हो जायेगी। ... हाँ, ज्ञान सम्मुख सुनने से अच्छा लगता है।''

सा.बाबा 2.5.06 रिवा.

''तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम बाप को याद करो। कर्म तो करना ही है। कर्म करते बुद्धि का योग बाप के साथ लगा रहे।... राजा जनक का भी गायन है ना।''

सा.बाबा 1.5.06 रिवा.

''जो सेन्सीबुल अच्छे बच्चे हैं, वे समझते हैं - हमको घर-गृहस्थ में रहते कमल पुष्प समान रहना है। गृहस्थ व्यवहार से तंग नहीं होना चाहिए। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते फैशनेबुल मत बनो। फैशन कशिश करता है।''

सा.बाबा 12.6.06 रिवा.

''जो ब्राह्मण बनेंगे, वे ही देवता बनेंगे। ब्रह्मा का नाम भी बाला है। तुम ब्राह्मण हो सबसे उत्तम, तुम भारत की सच्ची रुहानी सेवा कर रहे हो। ... गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 10.6.06 रिवा.

''अगर कुछ हिसाब-किताब रहा हुआ होगा तो सज़ा खानी पड़ेगी। कर्मभोग, भोग कर चुक्तू करना होगा, फिर पद भी ऊंच नहीं मिलेगा। यह कर्मों की गुह्य गति बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। ... यहाँ आते हो तो बाहर कोई मित्र-सम्बन्धी, घरघाट, धन्धाधोरी आदि याद नहीं करना है। ... याद की कमाई में लग जाना है।''

सा.बाबा 3.7.06 रिवा.

''बच्चे एक-दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। ... लौकिक माँ-बाप अगर ज्ञान में हैं तो बच्चों को भी आप समान बनाना है। माँ-बाप सच्ची कमाई करते हैं तो बच्चों को सच्ची कमाई करानी चाहिए।''

सा.बाबा 5.7.06 रिवा.

''तुम श्रीमत पर चलते रहो। ऐसे भी न हो कि तुम्हारे पैसे आदि कहाँ मुफ्त में चले जायें, कुछ फल भी न निकले। ... बाबा से राय लेनी है कि बाबा इस हालत में हम क्या करें! ... बच्ची की तो शादी करानी ही पड़ेगी क्योंकि उनका भी हिस्सा है, उनको दे दो। ... बच्चों को बाप की आज्ञा पर चलना है, इसमें ही कल्याण है।''

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

''पक्का निश्चय है कि कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। परन्तु अलबेले या आलस्य वाले को नहीं। सच्ची दिल पर साहेब राजी।... परिवार में भी खिटखिट तो होनी ही है ... आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति लेकर हल करो, गृहस्थी बनकर नहीं।... अगर बुद्धि में उलझन होती है तो समझ लो - ये मेरापन है।''

अ.बापदादा 18.1.96

''प्रवृत्ति वाले एग्जाम्पुल बन गये। पहले कहते थे हमारा बनना मुश्किल है और अभी कहते हैं पवित्र प्रवृत्ति में रहना अच्छा है ... अभी प्रवृत्ति वालों को ऐसी माला तैयार करनी है, जो हर सेवाकेन्द्र पर हर वर्ग का कोई न कोई जरूर हो।''

अ.बापदादा 25.11.95 प्रवृत्ति वाले

''बाप के साथ सो जाओ ... कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते नहीं सोना है। ये अलबेलापन है, ये फरमान का उलंघन करना है।... कोई जरूरी बात है तो कमरे के बाहर 2 सेकेण्ड में सुनाओ, लेकिन सोते-सोते नहीं सुनाओ।... बापदादा हर एक सेन्टर, हर एक प्रवृत्ति वाले, सबके यहाँ चक्कर लगाते हैं और देखते हैं।''

अ.बापदादा 16.11.95

''प्रवृत्ति वालों को तो इन सभी महात्माओं को चरणों में झुकाना है। सब आपके गुण गायेंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ़ रहे हैं।... लेकिन अपना वायदा याद रखना - लगाव-मुक्त रहना।''

अ.बापदादा 16.11.95

''प्रवृत्ति वाले जितना-जितना पवित्रता के पिलर को पक्का करेंगे, उतना-उतना ये पवित्रता का पिलर लाइट हाउस का काम करेगा।''

अ.बापदादा 16.11.95

''प्रवृत्ति वाले सदा ये वरदान याद रखना कि हम विश्व के शो-केस के नम्बरवन शो पीस हैं। ... शो-पीस को देखकर सौदा करते हैं... आप प्रवृत्ति वालों का सेम्पुल देखकर हिम्मत आती है। ... प्रवृत्ति का अर्थ पर-वृत्ति में रहने वाले।... सदा न्यारे और प्यारे।''

अ.बापदादा 31.3.95

''ज्ञान देने वाला है एक शिवबाबा। ज्ञान मिलता है तो भक्ति आपेही छूट जाती है। ... तुम बच्चों को दोनों तरफ तोड़ निभाना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनना है।''

सा.बाबा 28.9.06 रिवा.

ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, इसमें कोई दो चीजें एक समान नहीं हैं, इसलिए बाबा हर बात में नम्बरवार, पुरुषार्थ अनुसार कहता है। ये सिद्धान्त इस समर्पणता की बात में लागू होता है अर्थात् उपर्युक्त पाँचो ही प्रकार की समर्पित आत्मायें अपने-अपने वर्ग में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही हैं।

''बाप शमा भी है। शमा तो है फिर उस पर कोई परवाने तो एकदम फिदा हो जाते हैं और कोई फेरी पहन कर चले जाते हैं। ... बाकी यह पक्का निश्चय रखो कि हम आत्मा हैं, बाप हमको पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 28.04.09 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे, माया के तूफान आयेंगे, दीवे को बुझा देंगे। शमा पर परवाने कोई तो

जल मरते हैं, कोई फेरी पहनकर चले जाते हैं। वही बात अभी प्रैक्टिकल में चल रही है। नम्बरवार सब परवाने हैं। पहले-पहले सब एकदम घरबार छोड़कर आये, परवाने बनें ... भले चले गये, ऐसे मत समझना कि वे स्वर्ग में नहीं आयेंगे। परवाने बनें, आशिक हुए, फिर माया ने हरा दिया, इसलिए वे स्वर्ग में तो आयेंगे परन्तु पद कम पायेंगे।''

सा.बाबा 28.04.09 रिवा.

निष्कर्ष - उपर्युक्त समर्पणता के अनेक प्रकार हैं अर्थात् वे सम्पूर्ण समर्पणता के एक अंशमात्र हैं और उस अनुसार समर्पित होने वाले को उसका फल अर्थात् अतीन्द्रिय सुख का अभी भी अनुभव होता है और उस अनुसार भविष्य में भी फल मिलता है। परन्तु सम्पूर्ण समर्पणता अलग बात है। जो कहाँ भी है और किस भी स्थिति में है परन्तु तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क, मन्सा-वाचा-कर्मणा सब प्रकार से समर्पित है अर्थात् मन-बुद्धि से सदा तत्पर है अर्थात् बाबा की जो आज्ञा मिली और उस अनुसार कर्म करता है या करने के लिए तैयार रहता है, वही यथार्थ रीति समर्पित है और वह अभी भी सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प रह सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है और भविष्य में भी सतोप्रधान प्रकृति का सम्पूर्ण सुख अनुभव करेगा। ब्रह्मा बाबा का जीवन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

''सेकेण्ड में सोचा और स्थित हुआ, यह है टीचर्स की विशेषता। बुद्धि भी समर्पित है ना या सिर्फ सेवा के लिए समर्पित हो ? समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जायें।... तो सुना टीचर्स को क्या अभ्यास करना है ?''

अ.बापदादा 13.12.89

''समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जायें। ... इसलिए ये अभ्यास करो कि जिस समय जो चाहें वह स्थिति हो। नहीं तो धोखा मिल जायेगा। ... सेवा का भी संकल्प नहीं। अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं तो रूलिंग पावन आ नहीं सकती।''

अ.बापदादा 13.12.89

D. *स्थिति के आधार पर समर्पणता*

सब प्रकार की समर्पणता में स्थिति का विशेश महत्व है और समर्पणता के फल के निर्धारण में उसका विशेष महत्व है और होगा। जो एक बाप दूसरा न कोई की धारणा रखकर सब तरफ से बुद्धियोग निकालकर एक परमात्मा को ही अपने जीवन का आधार बनाकर समर्पित होते हैं, वे सदा ही निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प स्थिति को धारणकर सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं। वे सदा ही अपने को परमात्मा की छत्रछाया में अनुभव करते हैं और वर्तमान जीवन और भविष्य जीवन के प्रति आश्वस्त रहते हैं। उनका जीवन आदर्श होता

है, जिससे अन्य आत्मायें भी प्रेरणा लेती हैं। स्थिति के आधार पर समर्पित होने वालों निम्न प्रकार की स्थितियों वाली समर्पित आत्मायें हैं -

1. तन-मन-धन से समर्पित अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई
2. सेवाकेन्द्र पर रहते लौकिक सर्विस करते हुए समर्पित
3. यज्ञ में रहते, सेवा करते हुए यज्ञ से पैसा लेते हुए समर्पित
4. यज्ञ में समर्पित होते हुए भी धन्धा आदि करते हुए समर्पित
5. गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन अर्थात् ट्रस्टी जीवन

* पूर्ण निश्चयबुद्धि और पूर्ण नियम-संयम में रहने वाले और सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने वाले।

* तन-मन-धन समर्पित करने वाले परन्तु यथार्थ ज्ञान की धारणा की कमी के कारण यथार्थ अतीन्दिय सुख से वंचित, भय और चिन्ता में जीने वाले।

* सदा अपने ऊपर परमात्मा की छत्रछाया में अपने से सदा सुरक्षित अनुभव करने वाले, निश्चिनत रहने वाले।

* किन्ही व्यक्तियों और घटनाओं को देखकर असुरक्षा का अनुभव करते हुए जीने वाले अर्थात् भय और चिन्ता में जीने वाले।

* माया की युद्ध में अपनी विजय के प्रति सदा आश्वस्त परन्तु सदा माया से सावधान रहने वाले।

* संशयबुद्धि होकर माया से युद्ध करने वाले और भय-चिन्ता में जीने वाले।

* परमात्मा की छत्रछाया, परमात्म-प्रेम में समर्पित होने वाले।

* किसी व्यक्ति विशेष के आकर्षण में समर्पित होने वाले।

* यज्ञ की साधन-सुविधाओं को देखकर समर्पित होने वाले।

* ईश्वरीय कार्य अर्थात् ईश्वरीय सेवा के महत्व को जानकर सेवा अर्थ समर्पित होने वाले।

* परमात्मा के नाम पर समर्पित होकर किसी व्यक्ति के झण्डे के नीचे रहकर अपने को सुरक्षित अनुभव करने वाले।

* एक बाप दूसरा न कोई और उसकी श्रीमत अनुसार, उसके आधार पर ही चलने वाले निराधार।

* किसी स्थान विशेष पर, किसी व्यक्ति विशेष के साथ, किसी कार्य विशेष के लिए समर्पित होने वाले।

* सदा ज्ञान-योग और ईश्वरीय सेवा में मनोरंजन अनुभव करने वाले।

* मनोरंजन के लिए टी.वी. आदि अन्य साधन और सुविधाओं में मनोरंजन करने वाले।
* अपनी शक्ति और परमात्मा के सहयोग पर सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्विकार, निराकारी स्थिति में रहने वाले।

''ऐसा सेम्पुल बनना है जो आपको देखकर दूसरे भी आकर्षित होकर यज्ञ कुण्ड में स्वाहा हो जायें। बापदादा हरेक की तस्वीर से हरेक की तकदीर और तदबीर देखते हैं कि कहाँ तक वे अपनी तकदीर बनाते हैं। आप भी जब किसको देखते हो तो हरेक की तस्वीर से उनकी तकदीर और उनके पुरुषार्थ को देखना। हरेक के पुरुषार्थ में विशेष गुण जरूर होता है, उस गुण को देखना।''

अ.बापदादा 20.10.69

''पाण्डव सेना को सम्पूर्ण समर्पण का छापा लगाना है और मन्त्र याद रखना है। पाण्डवों का गायन है कि पाण्डव पहाड़ों पर गल कर खत्म हो गये।... गलना अर्थात् ऊंची स्थिति में गलकर अपनी अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए।''

अ.बापदादा 3.10.69

समर्पणता के प्रकार में ये विचार भी महत्वपूर्ण हैं

भय से समर्पित

युद्ध आदि में जो समर्पित होते हैं, वे भय से समर्पित होते हैं। जब कोई सेवा या व्यक्ति समझ लेता है कि हमारा हारना या मरना निश्चित है, इसलिए समर्पित हो जाने में ही हमारा अपना और देश या समाज का हित है तो वह सेना या व्यक्ति समर्पित हो जाता है।

स्वेच्छा से समर्पित

जब आत्मा किसी की शक्ति या महानता को समझ लेता है तो स्वेच्छा से उसके प्रति समर्पित हो जाता है। जैसे भक्त अपने इष्ट देव को भगवान समझकर उसके प्रति समर्पित भाव रखते हैं और समझते हैं कि वह उसकी रक्षा करेगा, उसके प्रति श्रृद्धा-भावना, विश्वास रखते हैं। गीता में भगवान के महावाक्य हैं - जो मेरा बनता है, उसका योगक्षेम अर्थात् पालना मैं करता हूँ। बाबा ने भी कहा है - तुम मेरे को बच्चा बनाकर मेरे पर बलिहार जाते हो, मैं तुम्हारे पर बलिहार जाता हूँ अर्थात् तुमको वर्सा देता हूँ।

सरेण्डर के दो अर्थ हैं। एक सरेण्डर वे हैं, जो दुश्मन से डरकर सेफ्टी के लिए समर्पण हुए हैं। परन्तु वे दिल से सरेण्डर नहीं है। वे सही में समर्पण नहीं है। समर्पण माना जैसे ब्रह्मा बाबा, तन-मन-धन कुछ भी मेरा नहीं है, सब बाबा का है।... शिवबाबा को याद करो, वह कहता है - इनको फॉलो करो।

दादी जानकी 19.06.09

दासता में समर्पित हर बात का निर्णय दूसरों की बुद्धि से करेंगे, उसमें ही सुख-शान्ति का

अनुभव करेंगे परन्तु राजा-महाराजा बनने वाले, साहूकार प्रजा बनने वाले बाबा की श्रीमत अनुसार अपने विवेक से निर्णय करेंगे। बाबा ने भी मुरली में कहा है - कोई घास काटकर जीते हुए स्वतन्त्र रहना अच्छा समझते हैं परन्तु नौकरी-चाकरी की पराधीनता को अच्छा नहीं मानते हैं और कोई नौकरी में अपनी महानता अनुभव करते हैं, खेती आदि को हीन दृष्टि से देखते हैं। एक कवि ने भी लिखा है - उत्तम खेती, मध्यम वान, निषिद चाकरी, भीख निदान।

ब. भक्ति मार्ग की समर्पणता

A. देवताओं या परमात्मा के प्रति भक्ति-भावना से समर्पणता

B. सन्यास धर्म की समर्पणता

C. अन्य धर्म-सम्प्रदायों में समर्पणता - बौद्ध भिक्षु, नन्स, जैन साध्वी आदि

वास्तविकता पर विचार करें तो देखेंगे कि भक्ति मार्ग में भी अनेक प्रकार से आत्मायें जाने-अन्जाने परमात्मा के प्रति समर्पित भाव रखती हैं और त्याग-तपस्या करती हैं।

सन्यासी, अनेक भक्त, बौद्ध भिक्षु, जैन साधू-साध्वी, नन्स आदि आदि अपने को परमात्मा के प्रति समर्पित भावना रखकर ही बनते हैं और उस भावना के आधार पर उनको फल भी मिलता है, उनकी मान-मर्यादा होती है और समय पर मदद भी मिलती है।

ये सभी अपने आत्म-कल्याण या विश्व-कल्याण के लिए परमात्मा के प्रति अप्रत्यक्ष रूप में समर्पित होते हैं। अभी परमात्मा प्रत्यक्ष रूप में आया हुआ है, इसलिए ज्ञान मार्ग में समझकर समर्पित होते हैं, जिसके लिए परमात्मा पिता ने अनेक बार कहा है कि ज्ञान मार्ग में एम एण्ड आब्जेक्ट है, भक्ति में कोई एम एण्ड आब्जेक्ट नहीं है। वे अन्ध श्रृद्धा से समर्पित होते हैं। इसलिए दोनों के फल में बड़ा अन्तर होता है।

''जब सरेण्डर हो चुके हो तो फिर मोह कहाँ से आया। ... सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है। सरेण्डर अर्थात् मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन-मन-धन सब कुछ अर्पण हो गया। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हो, तन से विकर्म कर ही कैसे सकते हो ? जिसने मन दे दिया, उसकी अवस्था क्या होगी - मन्मनाभव।''

अ.बापदादा 18.9.69

''तुम्हारे पास जो कुछ भी है, वह शिवबाबा को अर्पण कर दिया है। अब तुम्हारी परवरिश जैसे कि शिवबाबा के भण्डारे से होती है। तुमने अपना सबकुछ शिवबाबा को दान किया है, अब उनसे ही तुम पलते हो। ... घर में रहते शिवबाबा का समझ कर खाते हो तो हू-ब-हू तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो।''

सा.बाबा 16.6.08 रिवा.

भक्ति-मार्ग की समर्पणता और ज्ञान मार्ग की समर्पणता का अन्तर

अन्य धर्म सम्प्रदायों में समर्पित जीवन का स्वरूप है। जैसे सन्यास धर्म में सन्यासी, जैन साधू-साध्वी, नन्स, बौद्ध-भिक्षु आदि-आदि। आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जो वर्तमान में अपने को हिन्दू कहलाते हैं, उनमें जो देवताओं के भक्त हैं, वे भी अपने इष्टदेव के प्रति समर्पित होते हैं अर्थात् उनकी बुद्धि में सदा अपना इष्टदेव ही याद रहता है।

भक्ति मार्ग की समर्पणता और ज्ञान मार्ग की समर्पणता में दिन और रात का अन्तर है अर्थात् भक्ति में समर्पित भाव होते हुए भी उतरती कला ही होती है अर्थात् आत्मिक शक्ति की कलायें उतरती ही जाती हैं क्योंकि जिसके प्रति और जिस लक्ष्य से समर्पित होते हैं, उसका यथार्थ उनको नहीं होता है अर्थात् वे अन्धश्रद्धा से समर्पित होते हैं। ज्ञान मार्ग की समर्पणता चढ़ती कला में ले जाती है क्योंकि अभी ज्ञान सागर परमात्मा पिता परमात्मा ने हमको सारा ज्ञान दिया है और हमको चेलेन्ज किया है कि तुम पुरुषार्थ करके देखो कि ऐसा सत्य ज्ञान तुमको और कहीं मिलता है ? इस प्रकार हम देखें तो हम सत्य ज्ञान के आधार पर समर्पित हुए हैं, इसलिए हमारी चढ़ती कला है। बाबा ने ये भी कहा है कि अन्त में सबको हमारे पास ही आना है, चढ़ती कला की अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति की कोई अन्य हट्टी नहीं है।

अन्य धर्मों में जो समर्पित होने वाले हैं, उनका भी बाबा कई बार उदाहरण देते हैं। जैसे बाबा कहते हैं पादरी लोग एक क्राइस्ट की याद में शान्ति में रहते हैं, नन्स के लिए कहते हैं कि वे क्राइस्ट के सिवाए और किसको याद नहीं करती हैं। ब्रह्म ज्ञान सन्यासी ब्रह्म की याद रहते हैं और उस याद में रहते हुए देह का त्याग करते हैं तो वातावरण में सन्नाटा अर्थात् गहरी शान्ति हो जाती है।

बाबा उनकी मेहनत की भी महिमा करते हैं। बाबा कहते हैं - भक्त भक्ति मार्ग में बहुत मेहनत करते हैं। मीरा ने कितना सहन किया, फिर अपने लक्ष्य में पक्की रही, इसलिए उनको आज याद किया जाता है। फीमेल भक्तों में मीरा का नाम बाबा सबसे आगे रखते हैं। ''तुम भी अभी बेगर हो, फिर प्रिन्स बनते हो। सन्यासी भी बेगर हैं। इसमें पवित्रता की बात है। तुम्हारे पास और कुछ नहीं है। तुम देह को भी भूल जाते हो। देह सहित सब कुछ त्याग कर एक बाप के बनते हो। जितना एक बाप को याद करेंगे, उतनी धारणा होगी।''

सा.बाबा 24.12.08 रिवा.

समर्पणता का तुलनात्मक अध्ययन

जो भी आत्मायें परमात्मा के प्रति श्रृद्धा भावना रखकर उनकी मत पर चलते हैं, वे सभी उनके प्रति समर्पण कही जायेंगी परन्तु यज्ञ के विधि-विधान के अनुसार उनमें मुख्यता चार प्रकार की श्रेणियां हैं। एक वे भाई-बहनें हैं जो समर्पित होकर यज्ञ में रहते हैं अर्थात् मधुवन में रहते या सेवाकेन्द्रों पर रहते हैं और पूरा समय यज्ञ सेवा के लिए देते हैं, जिनका जीवन निर्वाह यज्ञ की तरफ से होता है। दूसरे वे भाई-बहनें हैं जो यज्ञ में रहते हैं परन्तु अपना लौकिक धन्धा अर्थात् नौकरी आदि भी करते हैं परन्तु रहते सेवाकेन्द्रों पर हैं और तीसरे वे भाई-बहनें हैं जो घर-गृहस्थ में रहते ट्रस्टी होकर रहते हैं और अपना पूरा ही हिसाब-किताब बाबा को देते हैं और उनकी श्रीमत अनुसार ही चलते हैं, श्रीमत अनुसार ही अपना तन-मन-धन लगाते हैं और चौथे वे भाई-बहनें हैं, जो बाबा के ज्ञान के प्रति तो श्रृद्धावान हैं, परन्तु अपना पूरा हिसाब-किताब बाबा को नहीं देते अर्थात् देने की हिम्मत नहीं रखते, अधिकतर लौकिक सम्बन्धों में ही बुद्धि रहती है। अब प्रश्न उठता है कि इन चारो की प्राप्तियों का, उनकी समर्पणता का क्या विधि-विधान है ? समर्पण जीवन की वास्तविकता को समझने और उसकी सफलता के लिए इन चारो ही प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन अति आवश्यक है। इसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में ब्रह्मा बाबा का और मम्मा का उदाहरण दिया है, जो ही समर्पणता के आदर्श हैं। उसके अतिरिक्त अन्य भाई-बहनें भी हैं, जिन्होंने इन दोनों को आदर्श बनाकर अपने समर्पण जीवन को सफल बनाया है। समर्पण जीवन की सफलता के लिए यथार्थ निश्चय का बहुत महत्व है।

कई भाई-बहनें तन से समर्पित हैं और यज्ञ में रहते हैं परन्तु उनका बुद्धियोग लौकिक सम्बन्धों में जाता रहता है, उनके हित के लिए तन-मन और यज्ञ का धन, यज्ञ के साधनों को लगाते रहते हैं। यज्ञ के विधि-विधान पर निश्चय नहीं है, इसलिए अपने को असुरक्षित अनुभव करते हैं और इसलिए लौकिक सम्बन्धियों से अधिक सम्बन्ध रखते हैं, कई यज्ञ में रहते भी यज्ञ से पैसा निकालकर या यज्ञ में रहते यज्ञ की प्रतिष्ठा पर पैसा कमाकर लौकिक में जमा करते हैं। समर्पित होकर यज्ञ में रहते भी अपना समय और संकल्प यज्ञ सेवा में सफल न करके, ज्ञान-योग के द्वारा मनोरंजन न अनुभव करके टी.वी., रेडियो, बाहर के साहित्य आदि के पठन-पाठन में लगाते हैं, उनमें रुचि रखते हैं, उसमें अपना मनोरंजन अनुभव करते हैं। यज्ञ में रहते भी बाहर की दुनिया को देखने की आकर्षण रहती है, इसलिए यज्ञ का धन उसके लिए प्रयोग करते हैं। यज्ञ में रहते हैं और यज्ञ में आया दान का पैसा आवश्यकता से अधिक विलासितापूर्ण साधनों पर खर्च करते हैं। यथार्थ रीति अतीन्द्रिय

सुख का अनुभव नहीं करते हैं, मान-शान की इच्छा रखते हैं, दूसरों के द्वारा महिमा सुनकर खुश होते हैं या सुनने के लिए लालायित रहते हैं।

इसकी भेंट में कई ऐसे भाई-बहनें हैं, जो लौकिक में रहते ट्रस्टी जीवन बिताते हैं, जो अपना पूरा ही हिसाब बाबा को देते हैं और उनकी श्रीमत अनुसार ही अपना धन खर्च करते हैं। मन भी यज्ञ के हित के प्रति ही लगाते हैं, यज्ञ में सेवा में रहते हैं। यज्ञ के विधि-विधान पर पूरा निश्चय है और सदा ही बाबा की छत्रछाया में अपने को सुरक्षित अनुभव करते सदा निश्चिन्त रहते हैं, सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहते हैं। बाबा के बताये नियम-संयम पर चलते हैं, खान-पान की पूरी परहेज़ रखते हैं। कई ऐसे हैं जिनके पास धन है परन्तु सादा जीवन व्यतीत करते हैं, बाहर की दुनिया का आकर्षण नहीं है। परमात्मा के साथ बुद्धियोग रखते हुए सदा अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं।

Q. अब प्रश्न उठता है, इनमें किसका जीवन श्रेष्ठ है, कौन परमात्मा के प्यार के अभी भी अधिकारी हैं और भविष्य में भी अच्छा फल पाने वाले हैं?

वास्तविकता को देखा जाये तो दोनों ही प्रकार समर्पितों में से नम्बर एक में जाने वाले भी हैं तो नम्बर लास्ट में आने वाले भी हैं। इसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है सतयुग में जो राजाई परिवार में दास-दासी बनेंगे, उनके चण्डाल बनेंगे वे अन्दर वाले ही होंगे। ऐसे ही बाहर रहते भी जो श्रीमत पर चलते हैं, उनमें से भी जो ऊंच पद पायेंगे, उनके भी दास-दासियां होंगे, वे भी बाहर वाले ही होंगे। बाबा ने ये भी कहा है - जो भले बाबा के साथ रहते हैं परन्तु पूरा श्रीमत पर नहीं चलते, सेवा नहीं करते, उनको बाबा उतना प्यार नहीं करता है, जितना उनको करता है, जो दूर रहते हैं परन्तु पूरा ही तन-मन-धन ईश्वरीय सेवा में लगाते हैं, बाबा को याद करते हैं, वे बाबा बाबा के दिल में समाये हुए हैं।

भक्ति मार्ग में जो परमात्मा या देवताओं को परमात्मा समझकर उनके समर्पित होते हैं, उनको उनकी समर्पणता का फल अल्प काल के लिए सुख-शान्ति के रूप में मिलता है परन्तु अभी जो साकार में आये परमात्मा को जानकर परमात्मा के प्रति समर्पित होते हैं, उनको दीर्घ काल के लिए सुख-शान्ति मिलती है।

यदि कोई तन से समर्पित नहीं है परन्तु मन और धन से समर्पित है अर्थात् मन और धन से ईश्वरीय आज्ञा अनुसार अधिक सेवा करता है, नष्टोमोहा है तो वह परमात्मा का अधिक प्रिय है और उसका भविष्य पद अधिक श्रेष्ठ होगा तथा यहाँ भी अधिक प्राप्ति का अनुभव करेगा, जीवन में शान (Grace) का अनुभव करेगा, जबकि तन से समर्पित होने वाले इधर-उधर ताकते रहेंगे।

''अगर बार-बार हार खाते रहते तो उनका भविष्य भी क्या होगा ... हार बनाने वाले बनना पड़ेगा ... इसलिए हार नहीं खाना। अगर हार नहीं खाते तो बलिहार जाते हैं। अभी बलिहार व बलि चढ़ने की तैयारी करने वाले हो।... अगर कब हार नहीं खायेंगे तो कम्पलेन फिर काहे की।''

अ.बापदादा 3.12.70

Q. बाहर रहते पूरा बाबा की श्रीमत पर चलते, तन-मन-धन से यज्ञ के हित में काम करते, पूरा हिसाब-किताब बाबा को देते, उनमें और उपर्युक्त चारो में से कौन श्रेष्ठ कहा जायेगा ?

वास्तव में जो बाबा की श्रीमत पर पूरा चलते, अपना तन-मन-धन यज्ञ सेवा में लगाते, वे ही श्रेष्ठ कहे जायेंगे और वे ही सच्चे समर्पित हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि बाहर रहने वाले बाबा की श्रीमत पर पूरा चलते तो वे भी समर्पित हैं और उनका पद यहाँ घर में रहने वालों से भी श्रेष्ठ होगा। प्रजा में भी बड़े साहूकार, मान-मर्तबा वाले होते, उनको भी राज दरबार में आमन्त्रित किया जाता है। कई कार्यों के लिए यज्ञ में भी ऐसा देखने में आता है।

''अर्जुन और भील का भी मिसाल दिखाते हैं। अर्जुन से भी भील तीखा हो गया बाण मारने में। अर्जुन अर्थात् जो घर में रहते हैं, समर्पित हैं, रोज़ सुनते हैं। उनसे बाहर रहने वाले तीखे हो जाते हैं। जिनमें ज्ञान का जौहर है, उनके आगे वे भरी ढोते हैं।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''बाप समझाते हैं - काम चिता पर बैठ तुम काले हो गये हो, अब ज्ञान चिता पर बैठो तो गोरे बन जायेंगे। बुद्धि में यही चिन्तन चलता रहे। भल ऑफिस में काम करते रहो, यह याद करते रहो। ... एक कहानी है अर्जुन और भील की। ऐसे गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञान-योग में अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं।''

सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

समर्पणता और श्रीमत
समर्पित जीवन और निश्चयबुद्धि
निश्चय और समर्पित जीवन

जब ज्ञान की यथार्थ समझ आयेगी और उस पर निश्चय होता है, तब आत्मा साकार में पधारे परमात्मा के पास समर्पित होती है अर्थात् उनकी बनती है और जब परमात्मा की बन जाती है तो उसके सभी महावाक्यों पर उसको निश्चय होता है और उस अनुसार उसको चलने में कोई कठिनाई नहीं होती है। निश्चयबुद्धि श्रीमत पर चलने वाली आत्मा की हर क्षेत्र में और हर कर्म में विजय होती है।

''समझो हम सब कुछ शिवबाबा को देते हैं, सब कुछ शिवबाबा का ही है। फिर शिवबाबा कहते हैं - अच्छा, ट्रस्टी होकर सम्भालो। समझो हम शिवबाबा की भण्डारी से अपना शरीर निर्वाह करते हैं।... समझो हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं, उनकी श्रीमत पर चलते हैं।''

सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

''अगर सोचेंगे कि पता नहीं क्या होगा ... तो ब्राह्मण परिवार से पत्ता कट जायेगा। बेफिकर बादशाह रहो लेकिन माया से बेफिकर नहीं, माया से सावधान रहो। संगदोष भी लग जाता है। बिजनेस करते हैं, बापदादा को पता है ... साथी हैं ... ये लहर थोड़ी चलती है। इसका कारण आप श्रेष्ठ आत्मायें हो। आप निमित्त बनती हो, जो ऐसा वायुमण्डल नहीं फैलाते हो। एक ब्रह्मा बाप ने ऐसा वायुण्डल फैलाया, जो ... तो आप सब इतने होते हुए वायुमण्डल नहीं बना सकते हो। ... संकल्प रखो - पॉवरफुल वायुमण्डल बनाकर ही छोड़ना है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''बिजनेस भी करते हैं ... बापदादा को पता है। उनको पूरा निश्चय नहीं है ... जो सच्चे बच्चे हैं, वे कब भूखे नहीं रह सकते। ... आदि रतनों ने बेगरी पार्ट का अनुभव किया है। उस समय तक तो यज्ञ का इतना विस्तार नहीं था। अभी तो विस्तार हो गया है ... निश्चय है तो कोई न कोई साथी-मददगार जरूर बन जायेगा।''

अ.बापदादा 22.04.09

हमारा शुभ कर्मों का खाता जमा होगा तो समय पर हमको अवश्य मदद मिलेगी। बाबा हमको श्रेष्ठ कर्म करने का ज्ञान देता है और करने की शक्ति भी देता है।

किसी व्यक्ति को आधार बनाना या ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध संचित की धन-सम्पत्ति काम नहीं आ सकती। ये संकल्प और कर्म संशयबुद्धि की निशानी है।

भक्ति मार्ग में भी परमात्मा पर निश्चय रखने वालों का निश्चय है। भक्ति में भी गायन है और भक्त विश्वास भी रखते हैं - जब दाँत नहीं तब दूध दियो, जब दाँत दिये तो अन्न हूँ दैहें। इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं है।

''इस शरीर के भान से भी दूर खाली हो जाओ। तुम्हारा यहाँ कुछ भी नहीं है, सिवाए एक शिवबाबा के दूसरा न कोई।... श्रीमत पर चलना है, सब सरेण्डर भी कर देना है।''

सा.बाबा 22.12.08 रिवा.

''पूरा सरेण्डर भी चाहिए तब ही वर्से का हकदार बन सके। सरेण्डर होगा तो फिर बाबा डायरेक्शन भी दे सकेंगे कि ऐसे-ऐसे करो। कोई सरेण्डर है, फिर उनको कहता हूँ कि कार्य-व्यवहार में भी रहो तो बुद्धि का मालूम पड़े। कार्य-व्यवहार में रहते हुए ज्ञान उठाओ, पास

होकर दिखाओ। गृहस्थ में नहीं जाना।... माँ-बाप की पालना ली है तो उनका कर्ज भी उतारना है तो बल मिलेगा।''

सा.बाबा 20.12.08 रिवा.

समर्पणता और परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार

जो भी आत्मा परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा बाबा के बच्चे बनते हैं अर्थात समर्पित होते हैं, उनका ये हमारा परम कर्तव्य है कि वे उनके साथ वफादार और ईमानदार और फरमान-बरदार रहें। जो बाबा के हर फरमान का दिल से पालन करते हैं, उनके जीवन की सदा ही सफलता होती है। परमात्मा की श्रीमत पर चलने में आत्माओं का कल्याण है।

''मुख्य फरमान कौनसा है? निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म में प्योरिटी हो। ... एक सेकेण्ड और एक संकल्प भी फरमान के सिवाए न चले। इसको कहते हैं फरमान बरदार और वफादार। ... स्वप्न में भी बाप, बाप के कर्तव्य, बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे।''

अ.बापदादा 22.6.71

''चार धारणायें हैं - बाप के सम्बन्ध में 'फरमान वरदार', शिक्षक के सम्बन्ध में 'ईमानदार', गुरु के सम्बन्ध में 'आज्ञाकारी' और साजन के सम्बन्ध में 'वफादार' बनना है।''

अ.बापदादा 21.7.73

''अभी हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं तो बाप की श्रीमत पर भी चलना है। ... बाप के साथ सदैव फरमानबरदार, वफादार बनना है, सर्विसएबुल बनना है ... सदैव बुद्धि में स्वदर्शन चक्र फिरता रहना चाहिए। ... बच्चे, कोई भी गफलत नहीं करो, सदैव बाप की श्रीमत पर चलो।''

सा.बाबा 7.03.06 रिवा.

''जो हज़ूर अर्थात् बाप के हर कदम की श्रीमत पर हर समय 'जी हाजिर' वा हर आज्ञा में 'जी हाजिर' प्रैक्टिकल में करते हैं ... उनके आगे हर शक्ति भी 'जी हाजिर' करती है।''

अ.बापदादा 20.12.92

''जो बाप का डायरेक्शन हो, श्रीमत हो, उसको उसी रूप में पालन करना, इसको कहते हैं सच्चा आज्ञाकारी बच्चा। बाप जानते हैं मधुबन में बिठाना है वा सेवा पर भेजना है। ब्राह्मण बच्चों को हर बात में एवर-रेडी रहना है। ... संकल्प मात्र भी मनमत मिक्स न हो, इसको कहते हैं श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।''

अ.बापदादा 20.2.88

''बाप का फरमान है पवित्र जरूर बनना है। कभी-कभी पतित भी यहाँ छिपकर आ जाते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं। अपने को ठगते हैं, बाप को तो ठगने की बात ही नहीं है।''

सा.बाबा 2.02.06 रिवा.

''जो हर कर्म में सपूत बन बाप का सबूत दे, उसको सपूत बच्चा कहा जाता है। ... सपूत बच्चे अर्थात् सदा बाप के श्रीमत का हाथ और साथ अनुभव करने वाले। तो श्रीमत का हाथ सदा अपने ऊपर अनुभव करते चलो। बाप की श्रीमत का हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। जहाँ बाप का हाथ है, वहाँ सफलता है ही है।''

अ.बापदादा 18.2.94 पार्टी 3

''साथी और साक्षी ... जब बापदादा साथ है तो साक्षीपन की सीट सदा मज़बूत रहती है। ... बापदादा सदा साथ है - ऐसे मानते भी हो, अनुभव भी करते हो या सिर्फ कहते हो। ... जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ।'' अ.बापदादा 23.2.97

''अच्छा सभी वफादार और फरमानबरदार बच्चों को बहुत-बहुत दिल के दुलार सहित पद्म पदम गुणा याद-प्यार और नमस्ते।'' अ.बापदादा 22.4.09

''बापदादा का ये इशारा देना भी प्यार समझना। ... बापदादा को रहम आता है कि बापदादा का दिल तख्त छोड़कर और-और स्थितियों के तख्त पर बैठ जाते हैं। ... बाबा से ये देखा नहीं जाता।'' अ.बापदादा 22.4.09

''बापदादा जब सुनते हैं, देखते हैं कि ऐसे किया तो बापदादा को संकल्प आता है कि अभी-अभी जाकर इनको इशारा दें कि यह क्या कर रहे हो।''

अ.बापदादा 22.04.09

''अभी एक-दो को सहारा देकर ऐसा वायुमण्डल बनाओ, जो किसको हिम्मत ही न हो ऐसा कर्म करने की। एक तो अपने में हिम्मत रखो कि हमको ऐसा कर्म नहीं करना है और दूसरा वायुमण्डल ऐसा बनाओ, जो दूसरे भी ऐसा कर्म न कर सकें।... ब्रह्मा बाप ने ऐसा वायुमण्डल बनाया ... अभी मधुवन निवासी एक-एक समर्पित भाई-बहन संकल्प रखो कि बाप समान बनना ही है।'' अ.बापदादा 22.4.09

समर्पित जीवन के अधिकार और कर्तव्य

वास्तव में समर्पित का कोई अधिकार नहीं होता है, उसको तो कर्तव्य ही करना होता है परन्तु विधि के विधान अनुसार जिसके पास समर्पित हुआ है, उसका सर्व प्रकार से हित साधन करता है। समर्पित होने वाला जिसको समर्पित होता है, उसके अधीन हो जाता है और

वह जैसा उचित समझता है, वैसा उसके प्रति करता है या कर सकता है। परन्तु कर्म और फल का विधि-विधान इस सृष्टि में सदा और सर्वत्र प्रभावित होता है अर्थात् जिसने शुभ भावना से समर्पित किया है, उसका भला निश्चित होता है। अभी हम सर्वशक्तिवान परमात्मा के पास समर्पित हैं, इसलिए दिल से समर्पित होने वाले का सर्व प्रकार से हित साधन वह करता ही है। लौकिक दुनिया में भी समर्पणता के कुछ नैतिक, वैधानिक और आध्यात्मिक सिद्धान्त हैं, विधि-विधान हैं। जो अपना, समाज, देश का हित समझकर समर्पण करता है, उसका कर्म और फल के सिद्धान्त के अनुसार भला अवश्य होता है। दुनिया में भी देखा गया है कि जो शक्ति रहते किसी को समर्पण कर देता है तो उसको मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जाता है, उसके प्रति दया भाव रखा जाता है। हम तो परमात्मा के प्रति समर्पित हुए हैं, जो सर्व समर्थ है।

Q. अधिकार से कर्तव्य का निर्णय होता है या कर्तव्य से अधिकार प्राप्त होता है?

Q. समर्पित आत्मा के अधिकार और कर्तव्य क्या हैं?

वास्तव में यह विश्व-नाटक कर्म-प्रधान है। जो कर्तव्य करता है, उसे अधिकार अवश्य मिलता है। परन्तु मनुष्य को निश्चयबुद्धि होकर सहनशक्ति और धैर्य रखना ही पड़ता है। जो निश्चयबुद्धि होकर सहनशक्ति को धारण कर धैर्य से समय की प्रतीक्षा करता है, उसकी विजय अवश्य होती है।

धन्धा आदि नहीं करना, मधुवन यज्ञ में या सेवाकेन्द्रों पर रहना ही समर्पणता नहीं है, ये तो समर्पणता का एक कदम है, समर्पणता तो मन्जिल है। तन से समर्पण होकर हमने अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति को कितना ईश्वरीय श्रीमत अनुसार ईश्वरीय सेवा में सफल किया? ये विचारणीय है। जो सफल करता है, वही सफलता पाता है। समर्पण आत्मा बाप समान बन जाती है और उसके जीवन में सदा सफलता रहती है, उसके जीवन में असफलता का नाम-निशान नहीं रहता है। उसके जीवन में भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति आ नहीं सकती। यदि आती है तो समर्पणता में कोई न कोई कमी है

तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति जीवात्मा की बहुमूल्य सम्पत्ति है, उसको ईश्वरीय सेवा में सफल करना है, न वेस्ट गँवाना है और न उसका दुरुपयोग करना है। जो समर्पण होकर अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति वेस्ट गँवाता है या दुरुपयोग करता है, उसको समय पश्चाताप अवश्य करना होता है। सफल करने से सफलता मिलती है। विधि का विधान है कि जो परमात्मा को भूल कर किसी साधन या व्यक्ति को सहारा बनाता है, उससे परमात्मा का सहारा छूट जाता है।

वैसे देखा जाये कि जो समर्पित होता है, उसके अपने कोई अधिकार नहीं रहते हैं,

उसको कर्तव्य ही करना होता है। बाबा ने भी कहा जब तुम समर्पित होते हो तो कहते हो - आप जहाँ बिठायेंगे ... करेंगे क्योंकि हमको निश्चय है कि परमात्मा हमारा बाप है, वह हमारे लिए जो करेगा, जो कहेगा, वह हमारे हित में ही होगा। जैसे माँ-बाप बच्चे के लिए करते हैं। बच्चा भी माँ-बाप के साथ वफादार, आज्ञाकारी होता है। परमात्मा का बनने वाले अर्थात् समर्पित होने वाले को परमात्मा पर निश्चय और विश्वास रखकर अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प, शक्ति ईश्वरीय सेवा में सफल करना चाहिए। कर्तव्य के आधार पर अधिकार अवश्य मिलता है, ये विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी नियम है।

''जब समर्पण कर दिया तो फिर अपना वा अन्य का अधिकार समाप्त हो जाता है। जैसे किसको कोई चीज़ दी जाती है तो फिर अपना अधिकार और अन्य का अधिकार समाप्त हो जाता है। ... जब तक अपना वा अन्य का अधिकार रहता है तो इससे सिद्ध है कि सर्व समर्पण में कमी है। इसलिए समानता नहीं आती।''

अ.बापदादा 1.11.70

''समर्पण किया, फिर आपकी जिम्मेवारी नहीं। जिसके अर्पण हुए, फिर जिम्मेवार वह हो जाते हैं। फिर संकल्प काहे का।... अव्यक्त रूप को सामने रखकर यह करके देखो।''

अ.बापदादा 19.6.70

''इस अवस्था में विल पॉवर भी होती है। जेसे विल किया जाता है ना! विल करने के बाद ऐसा अनुभव होता है कि जैसे मेरापन खत्म हो गया, जिम्मेवारी उतर गयी।... संकल्प सहित सब विल हो जाये। शरीर का भान छोड़ना और संकल्प तक सब विल करना - यह है माइट। फिर समानता की अवस्था होगी।''

अ.बापदादा 29.5.70

''तुम ज्ञान में आये, सरेण्डर हुए तो तुम ट्रस्टी ठहरे। तुम क्यों फिकर करते हो ? सरेण्डर किया है, फिर सर्विस भी करनी है तो रिटर्न में मिलेगा। अगर सरेण्डर हुआ है, सर्विस नहीं करता है तो भी उनको खिलाना तो पड़े परन्तु जो सरेण्डर किया वह खाते-खाते खत्म कर लेते हैं। ... सर्विस नहीं करते तो जाकर दास-दासी बनेंगे।''

सा.बाबा 18.11.08 रिवा.

''बाप सबकुछ जानते हैं और सिद्ध कर बताते हैं कि इस कारण तुम यह बनेंगे। भल सरेण्डर किया है, उसका भी हिसाब-किताब है। अगर सरेण्डर किया है परन्तु कुछ सर्विस नहीं करते, सिर्फ खाते-पीते रहते तो जो दिया, वह खाकर खत्म करते हो। दिया सो खाया, सर्विस नहीं की तो थर्ड क्लास दास-दासी बनेंगे।... और भी बोझा चढ़ जाता है।''

सा.बाबा 22.10.08 रिवा.

''जो कुछ नहीं देते परन्तु सर्विस बहुत करते हैं तो वे ऊंच पद पा लेते हैं। मम्मा ने धन कुछ नहीं दिया परन्तु पद बहुत ऊंच पाती है क्योंकि बाबा की रुहानी सर्विस करती है। हिसाब है ना। कइयों को नशा रहता है कि हमने तो सब कुछ दिया है, सरेण्डर हुए हैं।''

सा.बाबा 22.10.08 रिवा.

''सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् जो भी माया का बल है, वह सभी कुछ त्यागना है। माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना है। ... मन-वचन-कर्म तीन बातें हैं, जिनमें सम्पूर्ण समर्पण हो जाता है और समर्पण वाली आत्मा को ईश्वरीय बल मिलता है। एक तो देह सहित सभी सम्बन्धों का त्यागकर मामेकम् याद करो। ... मुख से सदैव रतन निकलें ... और कर्मणा के लिए सदा याद रहे कि जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और सभी करेंगे तथा हम जो करेंगे सो पायेंगे।''

अ.बापदादा 28.11.69

समर्पित जीवन और अन्धकारमय भविष्य की परिकल्पना

समर्पित जीवन और भविष्य की चिन्ता

सर्वशक्तिवान बाप का बनकर अर्थात् सर्वशक्तिवान बाप की छत्रडाया में आकर भी कोई आत्मा अपने अन्धकारमय भविष्य की परिकल्पना करती है या करके दुखी होती है या करके कोई विकर्म करती है अर्थात् श्रीमत के विरुद्ध कर्म करती है या व्यर्थ चिन्तन में समय नष्ट करती है तो यह अज्ञानता ही है अर्थात् उसको परमात्मा का, उसकी शक्तियों का पूरा ज्ञान नहीं है, उन पर पूरा निश्चय नहीं है।

''यह माशूक और आशिकों की महफिल है। बगीचा भी है तो सागर का किनारा भी है। यह ऐसी वण्डरफुल प्राइवेट बीच (Beach) है जो हजारों के बीच (मध्य) भी प्राइवेट है। हर एक अनुभव करते हैं कि मेरे साथ माशुक का पर्सनल प्यार है।... अधिकार में नम्बर नहीं हैं लेकिन अधिकार प्राप्त करने में नम्बर हो जाते हैं।''

अ.बापदादा 13.3.87

''भले चले गये परन्तु ऐसे मत समझना कि वे स्वर्ग में नहीं आयेंगे। परवाने बनें, आशिक हुए, फिर माया ने हरा दिया तो भी स्वर्ग में आयेंगे परन्तु पद कम पायेंगे।''

सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

सिकन्दर और फकीर का वार्तालाप है - रेत में लेटे हुए एक फकीर को देखकर उसकी निश्चिन्ता को देखकर सिकन्दर ने उससे कहा मैं भी अगले जन्म में फकीर बनूँगा। तो फकीर ने कहा फकीर बनने में क्या सब कुछ छोड़कर इस रेत में लेट जाओ, तो फकीर बन

गये परन्तु मुझको तुम्हारे जैसा राजा बनने के लिए बहुत फौज-फाँटा चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि जो भी परमात्मा के नाम पर दिल से समर्पित होता है, उसके जीवन में निश्चिन्तता आ ही जाती है और वे अन्यों को भी आकर्षित करती है।

समर्पित होने वाली आत्मा के गुण-धर्म और शक्तियाँ समर्पित करने वाले के गुण-धर्म, शक्तियाँ और विशेषतायें

समर्पित होने वाले और समर्पित करने दोनों का महत्व होता है और दोनों एक-दूसरे के गुण-धर्मों को समझकर समर्पित होते हैं या करते हैं। वैसे तो इस ब्राह्मण परिवार की हर आत्मा ज्ञान को समझकर, अपने स्वरूप को पहचान कर और परमात्मा स्वरूप गुण-धर्म को पहचानकर ही परमात्मा के प्रति ही समर्पित होती है। भले पहले हम अपने को और परमात्मा को यथार्थ रीति नहीं जानते थे परन्तु ज्ञान सागर परमात्मा आकर हमको हमारे स्वरूप का परिचय दे, अनुभव कराते हैं और अपने स्वरूप का भी अनुभव कराते हैं, उस अनुभव के बाद ही आत्मा परमात्मा के प्रति समर्पित होती हैं। लौकिक दुनिया में भी समर्पित होने वाले और समर्पित करने वाले के अपने-अपने गुण-धर्म और विशेषतायें होती हैं, उनको पहचान कर कोई समर्पित होता है तो ही समर्पित जीवन सफल होता है। समर्पित होने वाले में क्या-क्या गुण-धर्म और विशेषतायें होनी चाहिए और समर्पित करने वाले के क्या गुण-धर्म और विशेषतायें होनी चाहिए, वह जानना भी आवश्यक है।

दुनिया में भी कमजोर या असमर्थ ही समर्थ के पार समर्पित होता है। यहाँ भी जो ब्राह्मण बनता है, वह परमात्मा के नाम-रूप, गुण-कर्तव्य, शक्तियों को अनुभव करके समर्पित होता है क्योंकि जब आत्मा समझ लेती है और अनुभव करती है कि यही हमारा सत्य बाप है, यही सत्य मार्ग है तो स्वत: ही और कहाँ भटकने से बुद्धि हट जाती है और आत्मा साकार में पधारे परमात्मा को अपना सबकुछ मानकर उनकी बन जाती है और परमात्मा तो है ही सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ, इसलिए उनको हर आत्मा के तीनों कालों का ज्ञान है। परमात्मा सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ, सदा पावन है, इसलिए उनके सामने जाने-अन्जाने हर आत्मा के तीनों काल स्पष्ट रहते हैं। हम अनुभव भी करते हैं कैसे बाबा ने हर आत्मा को उसके जीवन को एक सेकेण्ड में परखकर अपना बना लिया।

समर्पित जीवन अर्थात् तन-मन-धन-जन सब परमात्मा के प्रति समर्पित अर्थात् परमात्मा की श्रीमत अनुसार यज्ञ सेवा में समर्पित। समर्पित होने के विधि-विधान का भी प्राप्ति पर प्रभाव होता है। जो एकधक से समर्पित होता है और जो अंशमात्र भी सोचकर समर्पित होता

है, दोनों के फल में अन्तर हो जाता है।

समर्पित आत्मा अर्थात् जिसका अपना करके कोई बैंक बैलेन्स न हो और हो भी तो वह ईश्वरीय आज्ञा से हो।

जो नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप हो क्योंकि जो परमात्मा के प्रति समर्पित हो गया, उसका और कहाँ लगाव-झुकाव हो नहीं सकता और यदि है तो वह सच्चा समर्पित नहीं है, उसकी नैया डगमग होती रहेगी। जिसका कहाँ भी लगाव-झूकाव नहीं होगा, उसकी बुद्धि में एक परमात्मा की स्मृति स्वत: होगी और जब सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद बुद्धि में होगी, तो हर कार्य श्रेष्ठ होगा। वह सदा अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में रहेगा। हम अपने को चेक करें, हमारी बुद्धि का लगाव-झुकाव और कहाँ है?

यथार्थ रीति समर्पित होना अर्थात् अंशमात्र भी ईश्वरीय सेवा के अतिरिक्त कहाँ बुद्धि न जाये। तन-मन-धन और कहाँ न लगे।

ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए निम्नलिखित बातों का ज्ञान, अनुभव और निश्चय होगा तब ही यह समर्पित जीवन सफल और सुखमय होगा। इन बातों का बाबा ने ज्ञान अर्थात् समझ दी है और उस अनुसार स्थिति बनाने की श्रीमत भी दी है।

इस विश्व-नाटक के विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान और विश्व-नाटक की सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता का अनुभव युक्त ज्ञान।

कर्म के नियम-सिद्धान्त और विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है अर्थात् हमारा हमारा अपना कर्म ही हमारे सुख-दुख का कारण है और हर कर्म का फल कर्ता को भोगना ही पड़ता है।

आधे कल्प का कर्म और फल का विधि-विधान जितने का उतना है परन्तु अभी संगमयुग पर कर्म और फल का विधि-विधान एक का सौगुणा है। ये एक का सौगुणा फल का विधि-विधान संगमयुग के इस ब्राह्मण जीवन के अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कर्मों पर प्रभावित होता है। बाबा ने श्रेष्ठ कर्मों का विधि-विधान भी बताया है, उनको करने के लिए श्रीमत भी दी है और उनको करने की शक्ति प्राप्त करने का विधि-विधान भी बताया है।

आध्यात्मिक विधि-विधान का यथार्थ ज्ञान। जैसे पवित्र अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को कभी किसी प्रकार के दुख की महसूसता अंशमात्र भी हो नहीं सकती। यदि होती है तो आत्मिक स्वरूप में स्थिति की कमी है।

सन्यास का महत्व - लौकिक दुनिया में भी है। जिन्होंने सन्यास किया है और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उनको पतित गृहस्थ वाले सिर झुकाते हैं। तो ये सन्यास अर्थात्

समर्पित जीवन और लौकिक में रहते बाबा का बनने में क्या अन्तर है और उसके फल में क्या अन्तर होगा, उसका क्या प्रभाव होगा, ये भी विचारणीय है ?

समर्पित जीवन के नियम-संयम और मर्यादायें

समर्पणता और टी.वी., बाइस्कोप देखना, बाह्य पठन-पाठन आदि

वास्तव में जो परमात्मा के पास आते हैं या कहें कि समर्पित होते हैं, वे परमात्मा के द्वारा प्राप्त हुई प्राप्तियों में अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करते हैं, जो त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ भी प्राप्त नहीं हो सकता है। जो इस सुख को ईश्वरीय प्राप्तियों से अनुभव नहीं करते हैं, उनकी ही बुद्धि टी.वी., वाइसकोप, वाह्य साहित्य के पठन-पाठन में जाती है, उससे अपना मनोरंजन करते हैं। बाबा ने हमको ईश्वरीय सेवा दी है, वह स्वत: में मन को आनन्द देने वाली है। बाबा ने तो हमको टी.वी., बाइसकोप देखना, वाह्य पठन-पाठन आदि के लिए मना की है परन्तु जब तक हमको ईश्वरीय प्राप्तियों से आनन्द की अनुभूति नहीं होती, तब तक इनमें बुद्धि जाती ही रहती है।

बाबा ने कहा है बाइसकोप सबसे गन्दी चीज है। बाइसकोप देखने वालों में विकार की आकर्षण अवश्य होगी। ब्रह्मा बाबा ने अपना भी अज्ञानकाल का अनुभव सुनाया है कि कैसे बाइसकोप बुद्धि को खराब करके अपने अभीष्ट लक्ष्य से भ्रमित कर देता है। टी.वी. के लिए भी बाबा कहते टी.वी, टी.बी. है। दोनों के लिए बाबा ने मना की है। अब ये हर एक के अपने पुरुषार्थ पर है, जो जितना श्रीमत का पालन करेगा, वह उतना माया के वार से बचेगा और इस ब्राह्मण जीवन अर्थात समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेगा। मनुष्य जो देखता, उसका चिन्तन अवश्य चलता है, जिससे उतना समय बाप की याद भी नहीं रहती और जिसका चिन्तन होता है, उसका प्रभाव कर्मेन्द्रियों पर अवश्य होता है।

''सबसे गन्दी बीमारी है बाइसकोप। अच्छे बच्चे भी बाइसकोप में जाने से खराब हो जाते हैं। इसलिए ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को बाइसकोप में जाना मना है। ... यह है बेहद का बाइसकोप। ब्रेहद के बाइसकोप से ही फिर यह हद के झूठे बाइसकोप निकले हैं।''

सा.बाबा 7.10.05 रिवा.

''फिल्मी कहानियों की किताबें, नॉविल्स आदि भी बहुत पढ़ते हैं। बाबा बच्चों को खबरदार करते हैं - कभी भी कोई नॉविल्स आदि नहीं पढ़ना है। ... कोई बी.के. भी नॉविल्स पढ़ते हैं। इसलिए बाबा सब बच्चों को कहते हैं - कभी भी किसको नॉवेल्स पढ़ता देखे तो झट उठाकर फाड़ दो। इसमें डरना नहीं है। तुम्हारा काम है एक-दो को सावधान करना। ... फिल्मी

कहानियां, नॉवेल्स पढ़ना-सुनना बेकायदे है।''

सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

''कोई में कोई अवगुण है, बेकायदे चलन है तो झट रिपोर्ट करनी चाहिए। ... ब्राह्मण इस समय सर्वेन्ट हैं ना, इसलिए देहाभिमान नहीं आना चाहिए।''

सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

''समझकर उस खुशी से समझाना चाहिए। परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे।... अभी तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं है।''

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे, तुम एक मेरे से ही सुनो और यही श्रीमत औरों को भी सुनाओ। फादर शोज़ सन, सन शोज़ फादर। ... अब तुमको पारलौकिक बाप को फॉलो कर ऊपर चढ़ना है।''

सा.बाबा 15.9.06 रिवा.

बाबा ने तो कहा है - तुमको एक बाप से ही सुनना है, वह जो पढ़ाता, वही पढ़ना है। यदि किसी सर्विस अर्थ आवश्यकता है तो ही अन्य कुछ पढ़ना, सुनना है। यदि कोई इस भावना से पढ़ता, सुनता है कि वह बहुत अच्छा ज्ञान देता है, बहुत अच्छी बात सुनाता है तो यह भी व्यभिचारीपना है। वास्तव में परमात्मा ने हमको जो सुनाया है, उससे अच्छा दुनिया का कोई भी व्यक्ति सुना नहीं सकता। दुनिया में सभी मनुष्य उतरती कला वाले हैं तो वे जो कुछ भी सुनायेंगे, वह उतरती कला का ही होगा। चढ़ती कला का ज्ञान तो एक परमात्मा ही देता है।

''समझकर उस खुशी से समझाना चाहिए। परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। दुनिया के मनुष्य तो रत्नों को भी पत्थर समझकर फेंक देंगे। ... अभी तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से सुनते हो तो फिर और कुछ भी सुनने की दरकार ही नहीं है।''

सा.बाबा 27.8.05 रिवा.

''तुमको दिल में यह आना चाहिए कि हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं। ... यह बुद्धि में सदा याद रखो कि हम पढ़ रहे हैं। पढ़ाने वाला है शिवबाबा।''

सा.बाबा 25.10.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - अभी मैं जो सुनाता हूँ, वह सुनो। इन आंखों से और कुछ देखो नहीं। यह पुरानी दुनिया ही विनाश होनी है। ... पुरुषार्थ जरूर करना है। ड्रामा अनुसार कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है, वही करेंगे।''

सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

''परमात्मा ज्ञान का सागर है, ज्ञान की अथॉरिटी है ... कैसे भगवान आकर ब्रह्मा द्वारा सब

शास्त्रों का सार हमको सुनाते हैं। बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... सारा मदार पढ़ाई पर है। जितना पढ़ेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 18.8.06 रिवा.

जो बाबा के बन जाते हैं और ईश्वरीय कार्य में लग जाते हैं, उनका पुरानी दुनिया और पुराने सम्बन्धों से बुद्धियोग आपही हट जाता है। बाबा ने कहा है - हंस और बगुले एक साथ रह नहीं सकते।

ब्रह्मचर्य ब्रत की पालना

खान-पान की शुद्धि

शारीरिक शुद्धि के लिए भी बाबा ने नियम-संयम बताये हैं, जिनकी यादगार में ही हठयोग में भी यम-नियमों का विधि-विधान है।

नित्य ज्ञान-स्नान और योग स्नान

जो जहाँ समर्पित होता है, उस कुल की मर्यादा, मान-प्रतिष्ठा का ध्यान रखना उसका कर्तव्य होता है। उस कुल की मान-प्रतिष्ठा में कोई बट्टा (कमी) न लगे, उसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए। इसीलिए बाबा तुम बच्चे मेरी दाढ़ी की लाज रखना, बाप का नाम बदनाम न करना। बाबा ने हमको ब्राह्मण कुल की नियम-मर्यादायें बताई हैं, उनका पालन करना, उनका ध्यान रखना हमारा परम कर्तव्य है।

जिसके पास समर्पित होते उसकी आज्ञा पालना करना, उसके प्रति बफादार, ईमानदार रहना समर्पित होने वाले का कर्तव्य होता है। उसने जो सेवा दी है, उसमें ही तन-मन-बुद्धि से तत्पर रहने में ही उसका भला है।

समर्पणता और भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति

समर्पणता और संग्रह-वृत्ति

सर्वशक्तिवान परमात्मा के पास समर्पित होकर भी आत्मा को भय और चिन्ता सताये, दुख-अशान्ति रूपी मानसिक वेदना हो, उसके जीवन भविष्य की चिन्ता को लेकर संग्रह-वृत्ति हो तो उसको सर्वशक्तिवान परमात्मा के पास समर्पित कैसे कहा जायेगा! ये संशयबुद्धि की निशानियाँ है और संशयबुद्धि का क्या परिणाम होगा, वह भी बाबा ने बताया है।

Q. क्या बाबा के बनने वाली आत्माओं को मनोरंजन के लिए टी.वी. आदि देखने, नॉवेल्स आदि पढ़ने की आवश्यकता है ? यदि नहीं है और कोई करते हैं, तो उसका फल क्या होगा ?

समर्पणता का परिणाम अर्थात् फल

भगवानोवाच्य - तन समर्पण से आधा कल्प तक तन स्वस्थ अर्थात् निरोगी काया होगी, मन समर्पण से आधा कल्प निश्चिन्त, बेफिकर जीवन होगा, धन के समर्पण से आधा कल्प इतनी धन-सम्पत्ति होगी कि सदा सन्तुष्ट रहेंगे, किसी प्रकार की इच्छा ही नहीं होगी, जन अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क को समर्पित करने से आधा कल्प तक मधुर सम्बन्ध होगी अर्थात् सम्बन्धों में किसी प्रकार की कटुता नहीं होगी। ऐसे ही समय, स्वांस, संकल्प के समर्पण के विषय में भी विधि-विधान बताया है। समर्पित जीवन और उसके फल के निर्धारण में निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं -

* कितना तन-मन-धन से कितना ईश्वरीय सेवा में रहे, कितना लौकिक सम्बन्धों का त्याग किया, कितना अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग किया, यज्ञ में रहकर यज्ञ के सुख-साधनों का कितना अपने प्रति उपभोग किया। कितना मान-शान का त्याग किया और कितना यज्ञ के साधनों को अपनी मान-शान के लिए उपयोग किया ?

* यज्ञ में तन-मन-धन समर्पण तो किया, फिर यज्ञ के साधनों का अपने निजी हित के लिए या लौकिक सम्बन्धों के लिए उपयोग किया ?

* यज्ञ की मान-प्रतिष्ठा के आधार पर अपने लिए या अपने सम्बन्धियों के लिए कितना लाभ उठाया।

* यज्ञ के नियम-संयम, मर्यादाओं का कितना पालन किया और कितना उनको भंग किया या भंग करने में निमित्त बनें ?

* समर्पणता का फल दैहिक-मानसिक व्याधि के रूप में या अतीन्द्रिय सुख के रूप में यहाँ भी मिलता है और भविष्य में भी मिलता है और मिल सकता है।

* साधन-सुविधाओं की प्राप्ति ही यथार्थ प्राप्ति नहीं है। यद्यपि वह भी अपने पुरुषार्थ का फल है परन्तु संगमयुग की यथार्थ प्राप्ति अतीन्द्रिय सुख है। यथार्थ रीति और सर्वंश समर्पण करने वाले को अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति सदा, सर्वदा और सर्वत्र होती है।

* रोग-शोक का भी वाह्य रूप और आन्तरिक वेदना अलग-अलग है।

* समर्पित होकर दूसरे की कमाई में ऑख लगाकर ईर्ष्या-द्वेष में न आकर अपनी कमाई करने वाले ही समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव करते हैं।

''कभी भी ऐसा नहीं सोचो कि फलाना ऐसे कहता है, तब ऐसा होता है लेकिन 'जो करता है, सो पाता है' - यह सामने रखो। दूसरे की कमाई का आधार नहीं लेना है और न दूसरे की कमाई में ऑख जानी चाहिए। जिस कारण ही ईर्ष्या होती है। ... स्लोगन याद रखो कि

'अपनी घोट तो नशा चढ़े।'' अ.बापदादा 23.10.70

* आदि से स्थिति कैसी रही, हमारे प्रति बापदादा का या दूसरों का संकल्प कितना चला, उसका भी प्राप्ति में अन्तर हो जाता है।

* समर्पणता का यथार्थ फल है अतीन्द्रिय सुख, जो मधुवन यज्ञ या सेवाकेन्द्रों पर तन से समर्पित होते हैं या घर-गृहस्थ में रहते हुए समर्पित भाव से रहते हैं, उन सबको परमात्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव अवश्य कराता है, फिर उसको दीर्घकाल के लिए अनुभव करना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है, जो सबको नम्बरवार होता है। मधुवन यज्ञ में या सेवाकेन्द्रों पर समर्पित होने वालों से भी कोई-कोई घर-गृहस्थ में रहने वाले अपने पुरुषार्थ और समर्पणता के आधार पर अधिक अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं या कर सकते हैं।

* तन-मन-धन-जन समय अर्थात् आवश्यकता के समय पर समर्पित करने और साधारण समय में समर्पित करने के फल का निर्णय बहुत अन्तर होता है। जैसे समय पर बीज बोने से जो फल निकलता है, वह समय के बाद या समय से पहले बोने का नहीं होता है।

''आत्मा को ही शरीर के साथ बेगर वा साहूकार कहते हैं। इस समय तुम जानते हो - सभी बेगर्स बन जाते हैं। ... तुमको इस समय ही बेगर बनना है। शरीर सहित जो कुछ है, वह सब खत्म हो जायेंगे। आत्मा को बेगर बनना है। सब कुछ छोड़ना है, फिर प्रिन्स बनना है। ... जो कुछ भी है, सब कुछ छोड़ना है, तब प्रिन्स बनेंगे।''

सा.बाबा 9.06.09 रिवा.

सरेण्डर अर्थात् बेगर टू प्रिन्स। जो पूरा बेगर बनते हैं, वे ही पूरा पावन बनते हैं और वे ही प्रिन्स बनते हैं। जो जितना बेगर, वह उतना ही प्रिन्स बनता है।

''दिन प्रतिदिन नई-नई बातें आयेंगी। पहले ये बिजनेस था क्या (जो मधुवन वाले करने लगे हैं), अब आया है ... माया अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए ऐसी बातें लायेगी ... क्या होगा ... अच्छा होना ही है। पाण्डव सेना की विजय कल्प-कल्प हुई है और हुई पड़ी है। ये बीच-बीच में खेल आते हैं।'' अ.बापदादा 22.4.09

''सजायें बहुत खानी होंगी। जो बच्चे बनकर और फिर कुकर्म करते हैं, उनकी तो बात मत पूछो। ड्रामा में देखो बाबा का कितना पार्ट है। सब कुछ दे दिया। बाबा फिर कहते हैं - भविष्य 21 जन्मों के लिए रिटर्न दूँगा। ... अभी डायरेक्ट देते हो तो भविष्य 21 जन्मों के लिए इन्श्योर कर देता हूँ। डायरेकट और इन्डायरेक्ट में कितना फर्क है।''

सा.बाबा 29.11.08 रिवा.

संगमयुग की समर्पणता और सतयुगी जीवन का सम्बन्ध

वर्तमान जगत में भी हैं तो सतयुग-त्रेता में भी दो प्रकार के परिवार होंगे। एक शाही परिवार और दूसरा प्रजा-परिवार। दोनों का अपने-अपने अपने स्थान पर विशेष महत्व होता है, जिसके लिए बाबा ने भी कहा है कि प्रजा के पास भी अथाह धन-सम्पत्ति होगी, उनका भी राजा के दरबार में विशेष सम्मान होता है। वर्तमान जगत में भी राजायें भी प्रजा से कर्ज लेते हैं या कब-कब प्रजा भी राजाओं को सहयोग करती है। अभी भी दुनिया में अनेकों परिवार हैं जो राजाओं से भी सुखी रहे हैं और अनेकों राजायें ऐसे हुए हैं, जिन्होंने ऐश-आराम तो किया है परन्तु उनकी दुदर्शा से मृत्यु हुई है। भारत के इतिहास में औरंगजेब का ही उदाहरण लें तो वह बादशाह तो बना, ऐश भी किया परन्तु वह अपने तीन सगे भाइयों को मारकर, पिता को कैद कर गद्दी पर बैठा और सारे जीवन उसके राज्य में युद्ध हुआ और अन्त में युद्ध के समय ही मारा गया।

सतयुग-त्रेता परमात्मा का वर्सा है और परमात्मा का वर्सा पाने का मूलाधार है, उनके प्रति समर्पणमयता। जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है कि समर्पणता के भी कई प्रकार है और उसके विधि-विधान हैं, जिनके आधार पर ही उसका फल निश्चित होता है। जो जितना और जिस विधि-विधान के साथ परमात्मा के प्रति समर्पण होता है, वह उतना ही उसके वर्से का अधिकारी होता है। ब्रह्मा बाबा ने तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क से सम्पूर्ण समर्पण किया तो वे सम्पूर्ण वर्से के अधिकारी बनें और सतयुग के प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण बनें, उसके बाद सभी ने नम्बरवार अपनी समर्पणता के आधार पर स्वर्ग का वर्सा पाया है।

Q. शाही परिवार और प्रजा-परिवार में मूलभूत अन्तर क्या होगा ?

जो अभी परमात्मा के प्रति तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क से सम्पूर्ण समर्पण होता है, उसमें भी विशेत तन से समर्पित होकर मधुबन या सेवाकेन्द्रों पर रहकर ईश्वरीय सेवा करता है, वह शाही परिवार में आता है परन्तु वह क्या बनता है अर्थात् क्या पद पाता है, वह उसके श्रीमत पर चलने, नियम-संयम का पालन करने और उसकी सेवा पर निर्भर करता है। जो तन से समर्पित होकर यज्ञ में नहीं रहता है परन्तु तन-मन-धन से बहुत कुछ समर्पित करता है, उसमें भी विशेष धन को समर्पित करता है, धन से सेवा करता है, वह प्रजा में साहूकार बनता है और प्रजा में भी नौकर-चाकर, दास-दासियाँ भी उनमें से ही बनते हैं।

''जब अभी से सर्व आत्माओं को बाबा का खजाना देने वाले दाता बनेंगे, अपनी शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान देंगे, वरदाता बन प्राप्त हुए वरदानों द्वारा उन्हें भी

बाप के समीप लायेंगे और बाबा के सम्बन्ध में लायेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में 21 जन्मों तक राज्यपद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे।''

अ.बापदादा 30.5.73

समर्पणता और समर्थ स्थिति

समर्पणता और व्यर्थ एवं समर्थ

समर्थ आत्मा ही सदा सुखी रह सकती है। बाबा सर्व समर्थ है और वह ज्ञान देकर हमको भी समर्थ बनाता है। समर्थ बनने के लिए हमारे लिए बाबा की श्रीमत है - मेरापन समाप्त कर सब बाबा का समझो। जब सब बाबा का समझेंगे और प्रैक्टिकल में रहेंगे अर्थात् बाप के बनकर रहेंगे तो बाबा का सबकुछ हमारा होगा। बाप सदा समर्थ है तो हम भी समर्थ बन जायेंगे। वास्तव में आत्मिक स्वरूप तो सदा समर्थ है परन्तु अपनी सामर्थ्य की विस्मृति के कारण आत्मा अपने को असमर्थ अनुभव करती है। बाबा आकर सत्य ज्ञान देकर हमको अपनी शक्ति की समृति दिलाते हैं और स्मृति आने से आत्मा पुन: शक्तिशाली बन जाती है परन्तु वह स्मृति सत्य ज्ञान की धारणा और परमात्मा की मधुर याद से ही जागृत होती है।

ड्रामा का ज्ञान, उसके विधि-विधान का ज्ञान, कर्म और कर्म-फल के विधि-विधान का ज्ञान, आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता और परमात्मा के सहयोग के विषय में परमात्मा ने ज्ञान दिया है और उस विधि-विधान को जानकर व्यर्थ से मुक्त हो समर्थ स्वरूप की स्थित को पा सकती है।

जीवन में सदा सफलता प्राप्त करने और सदा अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करने के लिए जीवन से व्यर्थ को समाप्त करना और समर्थ को धारण करना अति आवश्यक है। व्यर्थ को समाप्त करने और समर्थ को धारण करने का एकमात्र साधन और साधना है, सर्व-समर्थ बाप के मन-बुद्धि-संस्कार सहित अर्पण हो जाना।

''जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त है। हरेक ब्राह्मण पुरूषार्थ ही व्यर्थ को समाप्त करने का कर रहे हो। ... जबकि ब्राह्मण जन्म लेते प्रतिज्ञा की तन-मन-धन सब तेरा तो व्यर्थ संकल्प समाप्त हुआ, क्योंकि मन समर्थ बाप को दिया।''

अ.बापदादा 30.7.83

''बाप की विशेष श्रीमत है कि व्यर्थ को देखते हुए भी नहीं देखो, व्यर्थ बातें सुनते हुए भी नहीं सुनो। ... वह यहाँ-वहाँ कभी नहीं देखेगा। वह सदा मंजिल की ओर देखेगा। फॉलो किसको करना है ? ब्रह्मा बाप को क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार कर्मयोगी का सिम्बल है।''

अ.बापदादा 31.12.91 पार्टी 4

''यदि व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी तो अन्त में व्यर्थ का संस्कार धोखा दे देगा। ... अपनी शुभ भावना व्यर्थ वाले को भी चेन्ज कर देती है। ... व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने का आधार है - शुभ भावना और शुभ कामना। ... जो हंस सदा ज्ञान सरोवर में रहते हैं, उनकी स्थिति समर्थ होगी या व्यर्थ होगी ?''

अ.बापदादा 26.10.91 पार्टी 2

''व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म देगा।... जिसको आप लोग कहते हो - फीलिंग आ गई।''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

''मैं बाबा का और बाबा मेरा', यह स्मृति सहज भी है और समर्थ बनाने वाली है। ... असमर्थ होना अर्थात् मेरा बाबा के बजाये और कोई मेरापन आ जाना है। ... अगर संकल्प में भी एक बाप के सिवाए और कोई व्यक्ति या प्रकृति के साधन को सहारा स्वीकार किया तो सेकेण्ड में मन-बुद्धि का बाप से किनारा हो जाता है।''

अ.बापदादा 24.9.92

''जो भाव वृत्ति में होगा, वही कर्म स्वत: ही होगा। तो आप एक सेकेण्ड भी वृत्ति व्यर्थ नहीं बना सकते, एक सेकेण्ड भी व्यर्थ संकल्प नहीं कर सकते क्योंकि आपके पीछे विश्व की जिम्मेवारी है।... स्व की भावना और स्व की वृत्ति कौनसी है ? विश्व-कल्याणकारी।''

अ.बापदादा 9.12.93 पार्टी 2

''जहाँ समर्थ है, वहाँ व्यर्थ हो नहीं सकता। जैसे प्रकाश और अंधियारा साथ-साथ नहीं होता। तो 'ज्ञान' प्रकाश है और 'व्यर्थ' अन्धकार है। ... सबसे मुख्य बात संकल्प रूपी बीज को समर्थ बनाना है। संकल्प रूपी बीज समर्थ है तो वाणी, कर्म, सम्बन्ध सहज ही समर्थ हो जाता है।''

अ.बापदादा 25.11.93

''बाप से प्यार है तो क्या प्यार के पीछे इस एक क्रोध विकार को कुर्बान नहीं कर सकते ? कुर्बान की निशानी है - फरमान को मानने वाला। यह व्यर्थ संकल्प अन्तिम घड़ी में बहुत धोखा दे सकता है क्योंकि उस समय चारो ओर दुख का वायुमण्डल, प्रकृति का वायुमण्डल और आत्माओं का वायुमण्डल आकर्षण करने वाला होगा। अगर वेस्ट थॉट्स की आदत होगी तो उसमें उलझ जायेंगे।''

अ.बापदादा 25.2.06

''व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन कर दो। व्यर्थ को अपनी बुद्धि में स्वीकार नहीं करो। अगर एक भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म स्वीकार किया तो एक व्यर्थ अनेक व्यर्थ को जन्म

देगा। ... जिसको आप लोग कहते हो - फीलिंग आ गई।''

अ.बापदादा 12.11.92 पार्टी 5

''व्यर्थ नहीं गंवाया, वह अलग बात है लेकिन यह चेक करो कि सफल कितना किया ? ... ज्ञान, गुण, शक्तियां, स्वांस, समय, संकल्प बाप की देन हैं ... प्रभु-प्रसाद को अपना मानना - यह अभिमान और अपमान करना है ... अपने ईश्वरीय संस्कारों को भी सफल करो तो व्यर्थ संस्कार स्वत: ही चले जायेंगे।''

अ.बापदादा 3.4.91

''बापदादा श्रेष्ठ मत देते हैं कि शुद्ध फीलिंग में रहो - मैं सर्वश्रेष्ठ अर्थात् कोटों में कोई आत्मा हूँ, मैं देव आत्मा हूँ ... विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ। इस फीलिंग में रहने वाले को व्यर्थ फीलिंग का फ्लू नहीं होगा। मेहनत से बच जायेंगे।''

अ.बापदादा 21.12.89

''जहाँ समर्थ स्थिति है, वहाँ व्यर्थ हो नहीं सकता। संकल्प भी व्यर्थ उत्पन्न नहीं हो सकता। ... व्यर्थ देखना, व्यर्थ बोलना, व्यर्थ सुनना, व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गंवाना - इसमें फुल पास नहीं हैं। ... इसलिए अपसेट हो जाते हैं।''

अ.बापदादा 17.12.89

''अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करेंगे तो स्वत: ही कभी भी अपसेट नहीं होंगे। ... आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो, बेहद के ड्रामा में हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और देहाभिमान का नशा नीचे ले आता है।''

अ.बापदादा 17.12.89

''व्यर्थ तरफ आकर्षित होने का कारण है - अपने मन-बुद्धि की दिनचर्या सेट नहीं करते, ... दूसरी बात - अमृतवेले से रात सोने तक के लिए जो आज्ञायें मिली हुई हैं, उनमें कोई न कोई आज्ञाओं का उल्लंघन हो जाता है और अवज्ञा होने से आत्मा पर थोड़ा-थोड़ा बोझ होकर इकट्ठा हो जाता है।''

अ.बापदादा 17.12.89

''आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो, बेहद के ड्रामा में हीरो एक्टर हो और हीरे तुल्य जीवन वाले हो। यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है ... सदा समर्थ रहने का दूसरा आधार है - सदा और स्वत: आज्ञाकारी बनना।''

अ.बापदादा 17.12.89

''बीती को सोचते रहते हो ... सेकेण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये - यह संस्कार इमर्ज करो। ... समझते हो कि यह व्यर्थ है लेकिन व्यर्थ संकल्पों का बहाव इतना तेज होता है जो अपनी तरफ खींचता जाता है।... इसके लिए पहला परिवर्तन करो - मैं शरीर नहीं लेकिन आत्मा हूँ।''

अ.बापदादा 26.11.94

''अभी नॉलेजफुल बने हो। अगर अभी संकल्प, बोल या कर्म व्यर्थ गँवाते हैं तो सारे कल्प के लिए अपने जमा के खाते में कमी हो जाती है। ... राजयोगी डबल पॉवर वाले कभी भी व्यर्थ सोच नहीं सकते।''

अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 2

''हंस का काम है दूध और पानी को अलग करना, ज्ञान रतन चुगना अर्थात् धारण करना। ... दूध और पानी का अर्थ है व्यर्थ और समर्थ का निर्णय करना।... बुद्धि में सदा ज्ञान का मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा तो व्यर्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना।''

अ.बापदादा 25.1.94 पार्टी 3

''कोई भी बच्चे थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हैं, अचल से हलचल में आते हैं तो उसका कारण तीन बातें मुख्य हैं ... अशुभ वा व्यर्थ सोचना, अशुभ वा व्यर्थ बोलना और अशुभ वा व्यर्थ करना। ... समय-संकल्प बहुत व्यर्थ जाता है। ... तो बापदादा आज यह तीन बातें सोचना, बोलना और करना - इनकी गिफ्ट सभी से लेना है।''

अ.बापदादा 6.3.97

समर्पणता और योग

परमात्म-समर्पणता और नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा स्थिति

Q. योग की सफलता में समर्पणता क्या स्थान है? समर्पणता से योग की सफलता है या योग की सफलता से समर्पणता की सफलता है?

जब आत्मा तन-मन-धन-जन से एक परमात्मा के प्रति समर्पित हो गई तो उसके लिए एक परमात्मा के सिवाए और कुछ रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी, उसकी बुद्धि में एक परमात्मा की याद ही रहेगी। इसलिए ही बाबा शमा और परवानों का उदाहरण देते हैं। जैसे परवाने शमा पर समर्पित हो, शमामय हो जाते हैं, ऐसे ही जो आत्मा परमात्मा पर समर्पित हो जाती है, वह परमात्मा के समान बन जाती है, उसकी बुद्धि में एक परमात्मा के सिवाए कुछ रहता ही नहीं है। उसको योग लगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है, योग लगा ही रहता है। इस प्रकार विचार करें तो योग की सफलता में समर्पणता का मुख्य स्थान है। समर्पणता और योग की सफलता दोनों एक दूसरे की पूरक हैं।

''अगर योग कमजोर होता है तो भी उसका कारण 'मेरा' है और योग शक्तिशाली होता है तो भी उसका कारण 'मेरा' ही है। 'मेरा बाबा' है तो योग शक्तिशाली होता है और मेरा सम्बन्ध, मेरा पदार्थ, यह 'अनेक मेरा' याद आना अर्थात् योग कमजोर होना।''

अ.बापदादा 3.10.92 पार्टी 2

''बिन्दी रूप याद नहीं आता है तो उस समय प्राप्ति को याद करो, सम्बन्ध याद करो, साकार

मिलन को याद करो ... तो युद्ध में समय नहीं गँवाओ। किसी भी विधि से व्यर्थ को समाप्त करो और समर्थ को इमर्ज करो। ... विकर्म विनाश नहीं होता है तो सुकर्म तो बनाओ, सुकर्म करो। व्यर्थ आपही खत्म हो जायेगा।''

अ.बापदादा 16.3.95

''इस समय आत्म को शक्तिशाली बनाने के लिए यह रुहानी एक्सरसाइज का अभ्यास चाहिए। चारो ओर कितना भी वातावरण हो, हलचल हो लेकिन आवाज में रहते, आवाज से परे स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल से चाहिए। ... देह, देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार, व्यक्ति, वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसको ही कहते हैं - नष्टोमोहा, समर्थ स्वरूप।''

अ.बापदादा 16.3.86

''अब तुम बच्चों का इस पुरानी दुनिया से बुद्धियोग बिल्कुल हट जाना चाहिए। ... अपने को आत्मा निश्चय कर, मुझे याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी।... वह है हद का सन्यास और यह है बेहद का सन्यास। उन सन्यासियों को भी कितना मान मिलता है।''

सा.बाबा 21.6.06 रिवा.

''इसमें पूरा नष्टोमोहा होना चाहिए। इसलिए बाप शरण भी बड़ी खबरदारी से देते हैं। नहीं तो फिर यहाँ आकर तंग करते हैं। ... बच्चों को बहुत पुरुषार्थ करना है। अन्धों की लाठी बनना है।''

सा.बाबा 17.9.07 रिवा.

''जितना नष्टोमोहा बनेंगे, उतना ही स्मृति स्वरूप बनेंगे। स्मृति को सदा कायम रखने के लिए साधन है नष्टोमोहा बनना। नष्टोमोहा बनने का सहज साधन है बाप को सर्व समर्पण करना। ... हम निमित्त हैं, चलाने वाला जैसे चलावे, वैसे हमको चलना है।''

अ.बापदादा 24.1.70

समर्पित जीवन की गरिमा और प्राप्तियाँ

समर्पित जीवन की महिमा महान है, जिसके लिए भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के गीत गाते हैं, त्याग-तपस्या करते हैं। सन्यासी सन्यास करते हैं, तो उनकी कितनी महिमा, मान-प्रतिष्ठा होती है।

जो परमात्मा के प्रति समर्पित होते हैं, वे अपनी समर्पणता के आधार पर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं।

परमात्मा के महावाक्य हैं कि जो बलि चढ़ता है, उसको परमात्मा से बल प्राप्त होता है और वह महाबली बनता है।

समर्पण होने वाले को ही परमात्मा का वर्सा प्राप्त होता है अर्थात् वह यहाँ अतीन्द्रिय सुख का

अनुभव करता है और भविष्य में नई दुनिया में श्रेष्ठ पद पाता है।

जो परमात्मा के प्रति समर्पित होते हैं, उनको परमात्मा से आत्मिक शक्ति मिलती है, जिससे वे श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होते हैं और श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर सुख-शान्ति सम्पन्न श्रेष्ठ पद पाते हैं।

जैसे सन्यास मार्ग में सन्यास के कारण सन्यासियों की मान-प्रतिष्ठा होती है, ऐसे ही संगमयुग पर परमात्मा के बनने वालों की उनकी समर्पणता के आधार पर मान-प्रतिष्ठा होती है।

सर्पणता का यथार्थ ज्ञान और उस पर पूरा निश्चय - जो परमात्मा को पहचान कर उनके बनते हैं, उनको अपना जीवन सदा ही सफल अनुभव होता है।

समर्पित जीवन और विश्व-नाटक के गुण-धर्म और विशेषतायें

ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, इसके गुण-धर्म और विशेषताओं को जानने वाले ही यथार्थ रीति परमात्मा के प्रति समर्पित होते हैं और अपने समर्पित जीवन को सफल बना सकते हैं। जैसे विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है, जो कल्प-कल्प हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है - विश्व-नाटक की इस विशेषता को जानने वाला व्यक्ति ही साक्षी और निर्संकल्प होकर अपने तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में सफल कर सकता है और निर्भय-निश्चिन्त रहकर इस संगमयुगी समर्पित जीवन का सुख अनुभव कर सकता है।

ये विश्व-नाटक कर्म और फल का अनादि-अविनाशी खेल है, जो विश्व-नाटक के इस राज़ को समझ लेता है, वही श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होकर श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होता है और जो श्रेष्ठ कर्म करता है, उसको उसका श्रेष्ठ फल भी अवश्य मिलेगा।

जो विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझकर निर्भय, निर्संकल्प, निश्चिन्त होगा, उसकी बुद्धि ही परमात्मा के साथ योगयुक्त होगी अर्थात् वही समर्पित बुद्धि होगा और योगयुक्त समर्पित बुद्धि ही परमात्मा से ज्ञान, गुण, शक्तियों को धारण कर सकेगा।

समर्पणता और एकनामी-एकॉनामी स्थिति

समर्पित जीवन की सफलता और जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने के लिए एकनामी और जीवन के हर खज़ाने में एकॉनामी करना अति आवश्यक है, इसलिए बाबा सदैव हमको एकनामी और हर खजाने को एकॉनामी से उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं और उसका महत्व अर्थात् उसका राज़ समझाते हैं, जो आत्मायें उस राज़ को समझकर हर खज़ाने में एकॉनामी करते हैं और सदा एकनामी होकर रहते हैं, उनका जीवन सदा ही सुखमय और

सुखदायी रहता है। बाबा अपना जमा का खाता बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं, जो एकनामी और एकॉनामी से ही बढ़ सकता है अर्थात् एकनामी बनने से कमाई होगी और एकॉनामी करने से खज़ानों की बचत होगी।

''संकल्प में भी एकॉनामी, समय में भी एकॉनामी, तो चलन में सभी प्रकार की एकॉनामी हो। यह तीनों ही बातें अर्थात् एक मति, एक का नाम अर्थात् एकनामी और फिर एकॉनामी। यह तीनों ही बातें सदैव स्मृति में रख फिर कदम उठाना वा संकल्प को वाणी वा कर्म में लाना है।''

अ.बापदादा 10.6.71

''आज बाबा के पास संदेशी भोग लेकर आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं, बाबा की बेगरी टोली भूल गई है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं, संगम पर तो बेगरी टोली याद पड़ती है, वह ही बाप को प्यारी लगती है। बाप के लिए सुदामा के चावलों की वेल्यू है ना।''

अ.बापदादा 27.8.69

''साधारणता में महानता। जैसे बाप साकार सृष्टि में सिम्पल रहते हुए आप सभी के आगे सेम्पुल बने ना। ... जैसे देखो गाँधी को सिम्पल कहते थे लेकिन सिम्पल बनकर के एक सेम्पुल बनकर तो दिखाया ना। उसकी सिम्पल एक्टिविटी ही महानता की निशानी है।''

अ.बापदादा 19.7.71

''जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरंहकारी बनना अर्थात् सिम्पुल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पुल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्युरिटी का साधन है।''

अ.बापदादा 11.3.71

''जो पहले स्वयं करके और फिर कहता है, उसका प्रभाव अलग होता है ... एकॉनामी, एकनामी और एकान्तवासी। ज्यादा बोल में नहीं आओ। ... एक के अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्तियाँ हैं, उनमें खो जाओ।''

अ.बापदादा 25.3.95

समर्पणता और गीत-कवितायें

बाबा कहते हैं - वास्तव में इस ज्ञान मार्ग में गीत-कविताओं की कोई आवश्यकता नहीं है, इसमें तो शान्ति में रहकर बाप को याद करना है। बाबा ने ये भी कहा कुछ अच्छे-अच्छे गीत अपने पास रखने चाहिए, जो जब मन में कोई उल्झन, उदासी आदि आये तब बजाओ तो तुम उमंग में आ जायेंगे, दुख की लहर मिट जायेगी। अनेक बार हमने देखा कि साकार बाबा को कोई गीत-कविता आदि सुनाता था तो बाबा उसे प्यार से सुनते तो थे लेकिन साथ-साथ समझानी भी देते थे कि बच्चे आवाज से परे जाना है, अन्तर्मुख रहकर बाप को याद

करना है। बाबा की दोनों बातों के राज़ को समझकर हमको क्या करना चाहिए, वह हर एक समझ सकते हैं। जो बाबा का बना है, उसको बाबा ने हर बात को समझने की बुद्धि दी है परन्तु जो मन-बुद्धि से समर्पित है, उसको ही समय यथार्थ टचिंग होती है।

''आठ-दस गीत हैं, जिनको सुनने से खुशी का पारा चढ़ जाता है, वे अपने पास रखो। देखो अवस्था में कुछ गड़बड़ है तो गीत बजा लो। ये हैं खुशी के गीत। बाप युक्तियाँ बताते हैं अपने को हर्षितमुख बनाने की।''

सा.बाबा 13.10.05 रिवा.

''शान्ति में रहकर थोड़े अक्षर ही बोलने हैं, जास्ती आवाज़ नहीं। बाबा यह गीत, कवितायें आदि कुछ भी पसन्द नहीं करते। तुमको बाहर वाले मनुष्यों से रीस नहीं करनी है।''

सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

''यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है। बच्चों को सिर्फ बाप को याद करना है। नहीं तो गीत आदि याद आते रहेंगे। तुमको आवाज़ से परे जाना है। बाप का डायरेक्शन है ही - मन्मनाभव। बाप थोड़ेही कहते हैं गीत गाओ, रड़ी मारो। मेरी महिमा गायन करने की भी दरकार नहीं है।''

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

''यह साक्षात्कार आदि की सब ड्रामा में नूँध है। जो जैसी भावना रखते हैं, उसका साक्षात्कार हो जाता है। ... इन गीतों आदि की भी ड्रामा में नूँध है। कब उदास हो जाते हो तो ये अच्छे-अच्छे गीत बजाओ तो खुशी में आ जायेंगे।''

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

''यहाँ तो बाबा रिकार्ड आदि बजाना भी पसन्द नहीं करते हैं। आगे चलकर शायद यह भी बन्द हो जायें।... यह पढ़ाई है। बच्चे जानते हैं - हम राजयोग सीख रहे हैं।''

सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

''ज्ञान मार्ग में गीत आदि नहीं गाया जाता है, न बनाया जाता है और न जरूरत है क्योंकि गाया हुआ है - बाप से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है, उसमें गीत आदि की कोई बात ही नहीं।... अब तुम बच्चों को बाप मिला है तो खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बाप ने 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान भी सुनाया है।''

सा.बाबा 9.10.06 रिवा.

समर्पणता और फोटो

हम शिवबाबा के पास समर्पित हुए हैं, तो उनको ही याद करना है। उनके सिवाए अन्य किसी को याद करते हैं तो वह व्यभिचारी याद हो जाती है। बाबा ने अनेक बार कहा है

कि पतिव्रता स्त्री परपुरुष को स्वप्न में भी याद नहीं करती है। जैसे स्त्री पति को अपना जीवन समर्पित करती है, वैसे ही तुमने शिवबाबा को अपना जीवन समर्पित किया है अर्थात् परमात्मा को अपना बनाया है।

किसका फोटो रखना या याद करना भी व्यभिचारी याद है। बाबा ने स्पष्ट श्रीमत दी है कि किसी का फोटो आदि नहीं रखो क्योंकि तुमको तो एक निराकार बाप को याद करना है, उससे ही तुम्हारा कल्याण है। किसकी फोटो आदि रखते और उसे देखते रहते तो अपना टाइम वेस्ट करते हो। शिवबाबा का चित्र आदि भी किसको समझाने के लिए रखते हैं, चित्र को देखकर याद करना या चित्र पर मन-बुद्धि को एकाग्र करना यथार्थ याद नहीं है। मम्मा-बाबा का फोटो रखने के लिए भी बाबा ने मना की है और कहा है अन्त में यदि मम्मा-बाबा की याद रही तो भी दुर्गति हो जायेगी अर्थात् जो कल्याण शिवबाबा की याद से होना है, वह नहीं होगा। अनेक बार देखा कि ब्रह्मा बाबा को कोई अपने साथ फोटो निकलाने के लिए कहते थे तो बाबा बच्चों का मन रखने के लिए साथ में फोटो तो निकलवा लेते थे परन्तु साथ में समझानी भी अवश्य देते थे कि बच्चे शिवबाबा का फोटो तो निकल नहीं सकता है और याद तो शिवबाबा को ही करना है, इस तन को तो याद नहीं करना है। बाबा ने ये भी कहा है - मैं किसके पास मम्मा-बाबा का फोटो देखता हूँ तो फाड़ देता हूँ क्योंकि अन्त में मम्मा-बाबा को याद करते रहे तो दुर्गति हो जायेगी।

''बाप की छत्रछाया में रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... जो अभी छत्रछाया में रहते हैं, वे ही छत्रधारी बनते हैं। ... बाप की छत्रछाया के अन्दर हैं, यह चित्र सदा सामने रखो।''

अ.बापदादा 27.3.88

''तुम अपना फोटो निकालो, ऊपर में शिवबाबा, फिर अपना राजाई का चित्र, उसके नीचे अपना साधारण चित्र। शिवबाबा से हम राजयोग सीखकर डबल सिरताजधारी देवता बन रहे हैं। ... तुमको आप ही बाप को याद करने का उपाय ढूँढना चाहिए।''

सा.बाबा 21.9.06 रिवा.

समर्पणता और बैज

समर्पणता और हमारा कोट ऑफ आर्म्स

हम शिवबाबा के पास अपने आत्म-कल्याण और विश्व-सेवा के लिए समर्पित हुए हैं, उसके लिए बाबा जो श्रीमत दी है, नियम-संयम बताया है, उसको पालन करने में ही हमारा कल्याण है। उन नियम-संयम को कितना पालन करते वही हमारी समर्पणता की परीक्षा है।

बाबा के दिल में इस बैज का बहुत महत्व था भी और है भी, इसलिए बाबा ने सदा बैज लगाकर रखने की श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - मिलीटरी वालों को सदा बैज लगा हुआ होता है, तुम भी रुहानी मिलीटरी हो। तुमको भी सदा बैज लगा रहना चाहिए। बैज लगाने में तुमको लज्जा नहीं आनी चाहिए। यह बैज तुम्हारी सेफ्टी का साधन है और सेवा का भी साधन है। इस बैज पर तुम किसको सहज ही समझा सकते हो। बाबा ने कहा है - यदि बैज नहीं लगाते तो यह भी देहाभिमान है।

बाबा ने कहा है - जैसे गवर्मेन्ट का 'कोट ऑफ आर्म्स' होता है, वैसे ही यह त्रिमूर्ति पाण्डव गवर्मेन्ट का कोट ऑफ आर्म्स है। तुम रुहानी मिलिटरी हो और यह रुहानी पाण्डव गवर्मेन्ट है। यह स्मृति सदा तुमको रहनी चाहिए।

''यह बैज श्रीमत से ही तो बने हैं।... हर एक ब्राह्मण के पास यह बैज होना चाहिए। कोई भी मिले तो इस पर समझाना है।... बाप की याद के बल से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे, फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी।''

सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

''बाबा ने कितना समझाया है कि बैज पर सर्विस करनी है परन्तु बैज लगाते नहीं हैं। लज्जा आती है।... आफिस आदि में जाते हो तो यह बैज जरूर लगा रहना चाहिए।... शायद लज्जा आती है जो बैज पहनकर सर्विस नहीं करते हैं। एक तो बैज, सीढ़ी का चित्र, त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ का चित्र साथ में हो।''

सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

''क्लास में जाते हो तो भी बैज लगा रहे। मिलिटरी वालों को बिल्ला लगा रहता है। उनको कभी लज्जा आती है क्या ? तुम भी रुहानी मिलिटरी हो ना।... बैज लगा रहेगा तो शिवबाबा की याद भी रहेगी।'' सा.बाबा 8.9.05 रिवा.

''बैज सदा लगा रहे, लिटरेचर भी साथ हो। कोई भी अच्छा आदमी मिले तो देना चाहिए।... बोलो - गरीबों को मुफ्त दिया जाता है, बाकी जो जितना देवे, हम और छपायेंगे। रॉयलिटी होनी चाहिए। तुम्हारी रस्म-रिवाज दुनिया से बिल्कुल न्यारी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 4.6.05 रिवा.

''ऊंच से ऊंच भगवान की है श्रीमत। ... बाप कहते हैं - मन्मनाभव, देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो तो तुम कृष्ण की डायनेस्टी में आ जायेंगे।... अभी तुम बच्चों को ज्ञान है, तुमको बैज तो जरूर लगा रहना चाहिए। इसमें लज्जा की बात नहीं है, इससे बाप की याद रहेगी।'' सा.बाबा 1.9.05 रिवा.

''हमको बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब तो मिलेगा। इसलिए बैज सदा पड़ा रहे तो याद रहेगा - हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है।''

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

''कहाँ भी जाते हो तो यह बैज पड़ा रहे। बोलो - वास्तव में यह है पाण्डव गवर्मेन्ट का कोट ऑफ आर्म्स। समझाने की बड़ी रॉयलिटी चाहिए।... तुम रुहानी मिलिटरी हो। मिलीटरी को सदा निशानी रहती है। यह रहने से तुमको नशा रहेगा कि हम यह बन रहे हैं।''

सा.बाबा 15.10.05 रिवा.

''हमको बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब तो मिलेगा। इसलिए बैज सदा पड़ा रहे तो याद रहेगा - हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है।''

सा.बाबा 1.10.05 रिवा.

''सफेद साड़ी पहनी हुई हो, बैज लगा हो तो इससे स्वत: सेवा होती रहेगी।... तुमको सर्विस का शौक रहना चाहिए। सबको यह पैगाम देने की युक्तियां रचनी चाहिए।''

सा.बाबा 5.11.05 रिवा.

''तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए। ओहो! शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। यही बैठ चिन्तन करो। भगवान हमको पढ़ाते हैं, वाह मेरी तकदीर वाह। ऐसे-ऐसे विचार करते मस्ताना हो जाना चाहिए। ... बाबा तुमको राय देते हैं - चार्ट लिखो और एकान्त में बैठ ऐसे अपने साथ बातें करो। यह बैज तो छाती से लगा दो। भगवान की श्रीमत पर हम यह बन रहे हैं।''

सा.बाबा 29.11.05 रिवा.

''इन मैडल्स में कितनी नॉलेज है। इनमें सारा ज्ञान है। इन पर समझाना बहुत सहज है ... छोटी-छोटी बच्चियां भी यह ज्ञान सुना सकती हैं। बन्दर सेना भी मशहूर है। सीतायें जो रावण की जेल में फँसी हुई हैं, उनको छुड़ाना है।''

सा.बाबा 27.4.06 रिवा.

समर्पणता और चित्र एवं चित्रों की लिखत आदि

ब्रह्मा बाबा के चिन्तन से हम समझ सकते हैं कि यथार्थ समर्पणता क्या होती है। दिन रात मन-बुद्धि सेवा के प्रति समर्पित हो, चिन्तन चलता रहे कि हम कैसे बाबा की श्रीमत अनुसार सेवा करें, जिससे सर्वात्माओं का कल्याण हो।

बाबा ने इस ब्राह्मण जीवन में ज्ञान के चित्रों का महत्व भी बताया है और चित्रों पर क्या-क्या लिखत हो, उसके लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - हर एक चित्र पर

लिखा हो - त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। बाबा ने जो कहा, उसको हम कहाँ तक करते हैं, इसमें ही हमारी समर्पणता की परीक्षा है। जो समर्पण बुद्धि होते हैं, वे तो बाबा ने जो कहा और उन्होंने किया।

साथ ही बाबा ने यह भी श्रीमत दी है कि तुमको किसी भी चित्र को रखकर याद नहीं करना है। तुमको याद विचित्र को करना है, अपने चित्र को भी भूलना है।

इस प्रकार देखें तो देखते हैं बाबा ने चित्रों के विषय में दो प्रकार से श्रीमत दी अर्थात् किन चित्रों को रखना है और किन चित्रों को रखने की दरकार नहीं है। बाबा ने ये भी श्रीमत दी है कि शिव के आगे त्रिमूर्ति शब्द जरूर लिखो और संगमयुग के आगे पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखना चाहिए।

''शिव के आगे त्रिमूर्ति जरूर लिखना चाहिए। यह भी लिखना है कि डीटी सावरन्टी आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, सो भी अभी कल्प के संगम युगे।... ब्रह्मा के आगे प्रजापिता जरूर लिखना है। ... दिन प्रतिदिन लिखत चेन्ज होती रहेगी।''

सा.बाबा 14.9.05 रिवा.

''तुम लिख सकते हो कि अभी पुरानी दुनिया बदल रही है, फिर यह सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राज्य होगा। ... याद से विकर्म विनाश होते हैं और पढ़ाई से स्टेट्स मिलता है।''

सा.बाबा 5.10.05 रिवा.

''बाप ने कहा है - यह भी लिख दो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, आकर समझो।... विचार करो - कहाँ इतनी सारी दुनिया, कहाँ सिर्फ एक ही स्वर्ग होगा।''

सा.बाबा 27.9.05 रिवा.

''बाप ने यह भी समझाया है कि संगम के पहले पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखो। शिव के पहले त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है। ब्रह्मा के पहले प्रजापिता अक्षर लिखना जरूरी है।''

सा.बाबा 2.11.05 रिवा.

''कहाँ भी प्रदर्शनी, म्युजियम आदि खोलते हो तो ऊपर में त्रिमूर्ति शिव जरूर होना चाहिए। ... बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दो - अब आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बैठा है, हम प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं।''

सा.बाबा 26.11.05 रिवा.

''जब कहाँ भी तुम समझाते हो तो तो बोलो - यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, बाप आया हुआ है। ... बाबा ने कहा है - प्रदर्शनी आदि में यह जरूर लिखना है कि अब यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह मुख्य बात है। ... संगमयुग को नवयुग नहीं कहेंगे। संगमयुग को संगमयुग ही कहा

जाता है।''
सा.बाबा 25.11.05 रिवा.

''तुम्हारे बोर्ड पर भी प्रजापिता (प्रजापिता ब्रह्मा) अक्षर बहुत जरूरी है। सिर्फ ब्रह्मा लिखने से इतना जोरदार नहीं होता है। बोर्ड में भी करेक्ट अक्षर लिखना पड़े।... ऐसे-ऐसे सीधे अक्षर लिखने चाहिए जो मनुष्यों की दृष्टि पड़े।''
सा.बाबा 17.12.05 रिवा.

''कोई फिर अपनी मत पर चलते रहते हैं। बाप कितना दूर से आते हैं तुम बच्चों को डायरेक्शन देने, समझाने के लिए। ... सारा दिन यह चिन्तन चलना चाहिए - क्या लिखें, जो मनुष्य सहज समझ जायें। ... किसको भी तुम ऐसा समझाओ, जो प्रश्न पूछने की दरकार ही न पड़े।''
सा.बाबा 17.12.05 रिवा.

''बाप कहते हैं - त्रिमूर्ति का चित्र साथ में रख दो तो घड़ी-घड़ी याद आयेगी।... कमरे में त्रिमूर्ति का चित्र लगा होगा तो घड़ी-घड़ी नज़र जायेगी... ये चित्र मदद करेंगे।... यह त्रिमूर्ति का चित्र ही मुख्य है।''
सा.बाबा 12.4.06 रिवा.

''हम सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। वास्तव में इन चित्रों की भी दरकार नहीं है। जो कच्चे हैं, घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, इसलिए चित्र रखे जाते हैं।... तुमको कोई चित्र लगाने की दरकार नहीं है। तुमको तो अपने चित्र को भी भूलना है। देह सहित सब सम्बन्ध भूल जाने हैं।''
सा.बाबा 13.03.06 रिवा.

''अभी हम श्रीमत पर श्रेष्ठाचारी, सतयुगी स्वराज्य पा रहे हैं।... यहाँ लाइट का ताज किसको दे नहीं सकते। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो, वहाँ लाइट का ताज नहीं देना चाहिए। तुमको डबलसिरताज भविष्य में बनना है।'' (आत्मा और शरीर दोनों पावन हों, तब ही लाइट का ताज दे सकते हैं)
सा.बाबा 12.9.06 रिवा.

''बाप दिन-प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं तो फिर पुराने चित्रों को बदल कर दूसरा बनाना पड़े। यह तो अन्त तक होता ही रहेगा।... ये सब बातें विचार-सागर मन्थन कर बुद्धि में धारण करना चाहिए। ... देहाभिमान बहुत है, इसलिए धारणा नहीं होती है।''
सा.बाबा 30.5.06 रिवा.

''भक्ति मार्ग में भक्त लोग देवताओं के चित्र साथ में रखते हैं। अभी तुमको यह त्रिमूर्ति का चित्र पॉकेट में रखना चाहिए। याद रहेगा की शिवबाबा द्वारा हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं।''
सा.बाबा 13.5.06 रिवा.

''यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखना है... अभी सारे ड्रामा का राज़ बुद्धि में है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, 84 का चक्र कैसे फिरता है।''
सा.बाबा 10.5.06 रिवा.

''ड्रामानुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती हैं तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेन्ज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया।... बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी।''

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

समर्पित जीवन और स्थूल-सूक्ष्म दान-पुण्य

समर्पित आत्मा अर्थात् जिसने तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सब समर्पित किया हो और जिसको समर्पित किया है, उसकी आज्ञा अनुसार उपयोग करे। हमने बाबा के बने अर्थात हमने अपना सबकुछ बाबा को समर्पित कर दिया तो हमारा सबकुछ उसकी आज्ञा अनुसार उसके कार्य में ही लगना चाहिए। उसके अतिरिक्त कहाँ भी उपयोग करते हैं, तो बाबा उसे अमानत में ख्यानत कहते हैं।

बाबा के बनने के बाद हमको बाबा से ज्ञान-धन मिलता है, उसको दान करने की बाबा की हमको आज्ञा है, इसलिए हमारा तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सब उस ज्ञान धन के प्रचार-प्रसार और आत्माओं के कल्याणार्थ लगना चाहिए। जो इस सेवा में सदा लगा रहता है, वही सच्चा समर्पित है और उसका दान-पुण्य ही सफल है।

भक्ति मार्ग में भी दान-पुण्य का बहुत महत्व गाया हुआ है, इसलिए प्राय: सर्वात्माओं में दान की इच्छा रहती है और सभी यथा शक्ति करते भी हैं परन्तु उस दान का जीवन पर क्या और कैसा प्रभाव होता है, वह भी बाबा ने बताया है कि यथार्थ दान क्या है, जिससे देने वाले की भी चढ़ती कला हो और दान लेने वाले की भी चढ़ती कला हो अर्थात् दोनों जीवन सुखमय हो ? अभी कलियुग के अन्त में दुनिया में सभी मनुष्य पतित हैं, इसलिए पतित, पतित को दान करते और ही पतित बनते जाते हैं। दुनिया में तो कन्या जो पवित्र है, उसको शादी कराकर पतित बनने के रास्ते पर बढ़ाने को भी कन्या-दान कहते हैं और उसमें सहयोग करने को बहुत अच्छा मानते हैं परन्तु बाबा कहते - यदि कन्या पवित्र रहना चाहती, फिर भी उसे पतित बनने के लिए प्रेरित करते तो वह और ही बड़ा पाप का काम है। यथार्थ दान-पुण्य क्या है और किसको देना चाहिए, उसके विषय में भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने ये भी कहा है - भक्ति मार्ग की तरह दान करने की तुमको आवश्यकता नहीं है, वह तो दुनिया में बहुत करने वाले हैं। तुम यह ज्ञान रतनों का दान करो और अपना तन-मन-धन इस सेवा में लगाओ, जिससे आत्माओं का चरित्र ऊंचा हो, कर्म-संस्कार श्रेष्ठ हो, मनुष्य पवित्र बनें क्योंकि आज की दुनिया में सबसे बड़ी गरीबी है चरित्र की गरीबी, जिसको ही परमात्मा मिटाते हैं।

''दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।''
सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

''अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी धन का। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बनते जाते हो।... औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा।''
सा.बाबा 31.1.05 रिवा.

''भक्ति की रस्म-रिवाज अलग है और ज्ञान मार्ग की रस्म-रिवाज अलग है। सतयुग में दान-पुण्य होता नहीं है क्योंकि वहाँ कोई गरीब-दुखी होता नहीं है, जिसको दान-पुण्य करें।''
सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

''भक्तिमार्ग में लक्ष्मी को महादानी दिखाते हैं तो महादानी की निशानी कौनसी दिखाई है? ...सम्पति झलकती रहती है। यह शक्तियों का यादगार है। लक्ष्मी अर्थात् सम्पति की देवी। वह स्थूल सम्पति नहीं, नॉलेज की सम्पति, शक्तियों रुपी सम्पति की देवी अर्थात् देने वाली। तो यह चित्र बनाया है ऐसी सम्पति की देवी बनना है। चाहे नॉलेज देवे, चाहे शक्तियाँ देवे''।
अ.बापदादा 23.1.76

''जिन बच्चों को पुरुषोत्तम संगमयुग की स्मृति रहती है, वे ज्ञान रत्नों का दान करने बिना रह नहीं सकते। जैसे मनुष्य पुरुषोत्तम मास में दान-पुण्य करते हैं, ऐसे इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम्हें ज्ञान रत्नों का दान करना है।''
सा.बाबा 13.7.05 रिवा.

''बाबा राय देते हैं - बच्चे, गरीबों को दान देने वाले तो बहुत हैं।... दान आदि में भी बहुत खबरदारी चाहिए। ... धन को व्यर्थ नहीं गंवाना है। जो लायक ही नहीं ऐसे पतित को कभी दान नहीं देना चाहिए। नहीं तो दान देने पर भी बोझा आ जाता है।''
सा.बाबा 5.7.05 रिवा.

''बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस-किस को देते रहते हो। दान उसको देना चाहिए, जो पाप न करे। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर भी उसका असर आ जायेगा क्योंकि तुमने पैसा दिया।''
सा.बाबा 12.5.72 रिवा.

''यह ज्ञान अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है। किसको समझाने में खुशी होती है ना। यह तुम जैसे प्राण-दान देते हो।''
सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

''भारत को महादानी कहा जाता है। वह धन दान तो बहुत करते हैं परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रतनों का दान। ... मैं तो हद-बेहद से पार चला जाता हूँ क्योंकि मैं रहने वाला भी वहाँ

का हूँ। तुम भी हद-बेहद से पार चले जाओ, संकल्प-विकल्प कुछ भी न आये, इसमें मेहनत चाहिए।''
सा.बाबा 8.11.04 रिवा.

''सर्व की मनोकामनायें पूरी करने वाली कामधेनु हो। जिसकी अपनी सर्व कामनायें पूरी होंगी, वही औरों की कामनायें पूरी कर सकेंगे।... सर्व की इच्छायें पूर्ण करने वाले स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या होंगे। ऐसा अभ्यास करना है। प्राप्ति स्वरूप बनने से औरों को प्राप्ति करा सकते हो। .... महाज्ञानी बनने के बाद महादानी का कर्तव्य चलता है। महाज्ञानी की परख महादानी बनने से होती है।''
अ.बापदादा 26.6.70

''मधुवन निवासी मोस्ट लकी स्टार्स हैं। जितना लकी हो, उतना सर्व के लवली भी बनो। सिर्फ लक में खुश नहीं होना। लकी की परख लवली से होती है।... ज्ञान का दान ब्राह्मणों को तो नहीं करना है, वह तो अज्ञानियों को करेंगे। ब्राह्मण परिवार में फिर इस दान (लव) के महादानी बनो।''
अ.बापदादा 21.4.73

''मुख्य तीन दान बताये। ज्ञान का दान भी करती हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। मन्सा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा सर्वगुणों का दान।''
अ.बापदादा 15.4.71

''सिर्फ सुनने और रखने का आनन्द नहीं लो लेकिन बार-बार स्वयं के प्रति और सर्वात्माओं के प्रति काम में लगाओ। ... ईश्वरीय नियम प्रमाण जितना यूज करेंगे, उतनी वृद्धि होगी। गायन है - धन दिये धन न खुटे। देना ही बढ़ना है।''

अ.बापदादा 21.9.75

''जैसे भक्तिमार्ग में जिस वस्तु की कमी होती है उसी वस्तु का दान करते हैं - तो दान देने से उस वस्तु की कभी कमी नहीं रहेगी। तो देना अर्थात् लेना हो जाता है। ऐसे ही जिस सब्जेक्ट में, जिस विशेषता में, जिस गुण की स्वयं में कमी महसूस करते हो, उसी विशेषता व गुण का दान करो, अन्य के प्रति सेवा में लगाओ तो सेवा का रिटर्न प्रत्यक्ष फल मेवे के रुप में स्वयं अनुभव करेंगे।''
अ.बापदादा 22.1.76

''तुम जानते हो हमको इस दुनिया को पवित्र बनाना है। योग में रहकर शान्ति और सुख का दान देना है। इसलिए बाबा कहते हैं रात्रि को उठकर योग में बैठो, सृष्टि को योग का दान दो। सवेरे उठकर अशरीरी होकर बैठो, तो तुम भारत को, बल्कि सारी सृष्टि को योग से शान्ति का दान देते हो और फिर चक्र का सुमिरन करने से तुम सुख का दान देते हो। सुख होता है धन से।''
सा.बाबा 7.1.02 रिवा.

''गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के

बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।''

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

''लौकिक जीवन में सदा जो भी नामीग्रामी अच्छे कुल वाली आत्मायें होती हैं वह सदा अपने में दान पुण्य करने का लक्ष्य रखती हैं। आप सभी सबसे बड़े ते बड़े कुल, श्रेष्ठ कुल के हो। तो श्रेष्ठ कुल वाली ब्राह्मण आत्मायें अर्थात् सर्व खजानों से सम्पन्न आत्मायें।''

अ.बापदादा 14.5.83

''दाता के बच्चे बन सबके प्रति स्नेह सहयोग, शक्ति देने वाले पुण्य आत्मा होंगे। पुण्य आत्मा कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना नहीं रखते। क्योंकि पुण्य आत्मा जानते हैं कि यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है।''

अ.बापदादा 14.5.83

''अपने भाग्य को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है। जो स्वयं को प्राप्ति हुई है वह औरों को भी कराओ। खजानों को बाँटने से खज़ाना और ही बढ़ेगा ऐसे शुभ संकल्प रखने वाली आत्मा हो ना!''

अ.बापदादा 11.1.83

''चात्रक, पात्र को परखने की भी बुद्धि चाहिए। जो समझने वाला होगा, उसका चेहरा ही बदल जायेगा। ... किसको भी बहुत प्रेम से समझाना है। ... दान भी हमेशा पात्र को किया जाता है। पात्र तुमको कहाँ मिलेंगे ? शिव के, लक्ष्मी-नारायण के, राम-सीता के मन्दिरों में।''

सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

''अभी तुमको अविनाशी ज्ञान धन मिला है, वह धारण कर फिर दान करना है। यह है सोर्स ऑफ इनकम।... जैसे बाप कल्याणकारी है, वैसे तुम बच्चों को भी कल्याणकारी बनना है, सबको रास्ता बताना है।... भगवान की ही श्रेष्ठ मत है।''

सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

''निर्बल को शक्तिवान बनाना - यही श्रेष्ठ दान है वा सहयोग है।... देने में लग जाओ तो लेना स्वत: ही सम्पन्न हो जायेगा क्योंकि बाप ने सभी को सबकुछ दे दिया है।''

अ.बापदादा 09.01.93

''अपने से पूछना है - हमसे कोई पाप तो नहीं होता है, हम पुण्य का काम करते हैं, हम अन्धों की लाठी बने हैं?''

सा.बाबा 14.4.06 रिवा.

''सदा पुण्य का खाता जमा करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... तो पुण्यात्मा हो और सदा ही

पुण्यात्मा बन औरों को भी पुण्य का रास्ता बताने वाले। यह पुण्य का खाता अनेक जन्म साथ रहेगा।''

अ.बापदादा 27.3.88

''बच्चों को श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है, अपनी मत पर चलने से अपने को धोखा देते हैं। ... तुमको क्षीरसागर तरफ जाना है तो विषय सागर तरफ दिल नहीं रहनी चाहिए। जो ज्ञान नहीं लेते, उनके पिछाड़ी पड़कर अपना टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए।... ऐसे थोड़ेही तुमको गरीबों को दान देना है। गरीबों को तो वे लोग दान देते हैं। गरीब तो ढेर हैं।''

सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

''यज्ञ में समर्पण भी सम्भाल कर करना होता है। ऐसा न हो जो यज्ञ में आकर ऊधम मचावे।... जिस ईश्वरीय यज्ञ से हम अपना शरीर निर्वाह करते हैं, उसका पैसा किसको देना बड़ा पाप है। ये पैसे हैं ही उनके लिए जो कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं, ईश्वरीय सर्विस में हैं।... गरीबों आदि को देते, उतरते-उतरते पापात्मा ही बनते गये।''

सा.बाबा 16.03.06 रिवा.

''एक है दान करना और दूसरा है पुण्य करना। दान से भी पुण्य का ज्यादा महत्व है। पुण्य कर्म निस्वार्थ सेवाभाव का कर्म है। पुण्य कर्म में दिखावा नहीं होता है लेकिन दिल से होता है। दान दिखावा से भी होता है और दिल से भी होता है। पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यकता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना।''

अ.बापदादा 10.4.91

''तुम्हारे दर पर कोई भी आये, उसको ऐसी भिक्षा दो, जो उसको एकदम विश्व का मालिक बना दो। तुम्हारे पास अथाह धन है। ... तुम्हारे में साहूकार वह है, जिसके बुद्धि में बहुत ज्ञान-रत्न हैं।... बाबा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रतनों से झोली भर रहे हैं।''

सा.बाबा 9.6.06 रिवा.

समर्पित जीवन और दानी, महादानी एवं वरदानी

जो भी शिवबाबा के बनते हैं, उनको बाबा से ज्ञान, गुण, शक्तियों का अखुट खज़ाना मिलता है और बाबा ने सबको यह राज़ बताया है कि यह ज्ञान, गुण, शक्तियों का खज़ाना जितना दान करोगे, उतना ये बढ़ता जायेगा, इसलिए तुमको निरन्तर दानी, महादानी, वरदानी बनना है, तब ही तुम बाबा के फरमान बरदार, वफादार बच्चे कहलाओगे।

''तुमको ज्ञान धन का दान तो जरूर करना चाहिए। धन दिये धन ना खुटे।... शिवबाबा तुमको पढ़ाकर ऐसा बनाते हैं। शिवबाबा के पास तो हैं ही अविनाशी ज्ञान रत्न।... तुम बच्चों को तो नशा रहना चाहिए, उदारचित्त भी होना चाहिए।''

सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

''जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, उनको गिफ्ट जरूर दो। खाली हाथ नहीं भेजो। आप मास्टर दाता हो। मास्टर दाता के पास आये और खाली हाथ जाये, यह नहीं हो। अखण्ड महादानी बनो। अखण्ड कह रहे हैं। कोई न कोई सेवा करते रहो। चाहे मन्सा करो, चाहे वाणी करो, चाहे कर्म से करो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से करो।''

अ.बापदादा 31.12.05

''आप संगमयुग पर अविनाशी खज़ानों के महादानी बनते हो... मन्सा द्वारा शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा गुणों का दान।... ये दिव्य गुण सबसे श्रेष्ठ प्रभु प्रसाद है। इस प्रसाद को खूब बांटो।... यह प्रैक्टिस निरन्तर स्मृति में रखो कि मैं दाता का बच्चा अखण्ड महादानी आत्मा हूँ।''

अ.बापदादा 2.12.93

''बापदादा ने संगमयुग पर सभी बच्चों को 'अटल-अखण्ड भव' का वरदान दिया है लेकिन वरदान को जीवन में सदा धारण करने में नम्बरवार बन गये हैं। नम्बरवन बनने के लिए सबसे सहज विधि है - अखण्ड महादानी बनो। ... दाता के बच्चे हो, सर्व खज़ानों से सम्पन्न श्रेष्ठ आत्मायें हो। सम्पन्न की निशानी है - अखण्ड महादानी।''

अ.बापदादा 2.12.93

''राज़ी रहने वाले बच्चों की निशानी - सदा दाता राज़ी है, इसलिए ऐसी आत्मायें सदा अपने को ज्ञान के खज़ाने, शक्तियों के खज़ाने, गुणों के खज़ाने, सब खज़ानों से अपने को भरपूर अनुभव करेंगी। कभी भी अपने को खज़ानों से खाली नहीं समझेंगी। वह कोई भी गुण वा ज्ञान के गुह्य राज़ से वंचित नहीं होगी।''

अ.बापदादा 19.11.89

समर्पणता और विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया

परमात्मा का अवतरण होता ही है नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराना और आत्माओं को नई दुनिया के योग्य बनाना। बाबा ने श्रीमत दी है - बच्चों को नई दुनिया के योग्य बनने का पुरुषार्थ करना परन्तु वर्तमान समय की परिस्थितियों और कर्मभोग आदि के कारण परेशान होकर बाबा का बनने वाली समर्पित आत्माओं का भी संकल्प उठने लगता कि विनाश जल्दी हो। इसके लिए बाबा कहते हैं - तुमको विनाश-लीला का इन्तजार नहीं करना है लेकिन उसके लिए इन्तजाम करना है अर्थात् सम्पूर्ण बनना है और जहाँ सम्पूर्णता होगी, वहाँ सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अवश्य होगी, उनके लिए विनाश जल्दी हो का संकल्प ही नहीं उठ सकता है। बाबा ये भी कहते हैं - यदि आप चाहते हो कि

विनाश जल्दी हो तो इसका मतलब आप चाहते हो कि बाबा जल्दी चला जाये। ड्रामा की वास्तविकता को ध्यान रखकर विचार करो - क्या हमारे संकल्प करने से विनाश होगा? ड्रामा को भी समझते हुए यह स्मृति रखना चाहिए कि विनाश भी अपने समय पर ही होगा, हमारे कहने या सोचने से नहीं होगा। हमको तो सम्पूर्ण और सम्पन्न होकर संगमयुग का सुर-दुर्लभ सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख भोगना है। अभी हमारे ऊपर सर्वशक्तिवान बाप की छत्रछाया है, उसका वरदानी हाथ सदा हमारे सिर पर है, ऐसे सुखमय जीवन के अनुभव में सदा रहना ही समर्पित जीवन है।

यथार्थ पुरुषार्थी आत्मा सदा निर्भय, निर्वैर, निर्मोही, निर्संकल्प, निर्विकल्प, निश्चिन्त होगी। उसको न व्यक्ति का भय, न मृत्यु का भय होगा, आत्मा एक सेकेण्ड में अपने स्व-स्वरूप में स्थित हो, देह से न्यारी हो जायेगी। उसको न यहाँ से जाने की जल्दी होगी और न रहने की इच्छा होगी। वह सदा न्यारा और प्यारा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में होगा। इसलिए ऐसी स्थिति को धारण करो।

''बाबा ने कहा - मैं ऐसे शुरू नहीं करूँगा, मैंने कहा ना, जो कुछ होगा अचानक होगा। बाबा तो सिर्फ बताते हैं कि आने वाला समय बहुत भयानक होगा। ... उस समय हलचल नहीं चाहिए। बिल्कुल अचल, अडोल, एकरस अवस्था चाहिए क्योंकि उस समय दातापन की स्थिति चाहिए। दाता घबराता नहीं है लेकिन सबको दान देता है। ... आप अपनी स्थिति ऐसी अचल-अडोल बनाओ।''

अ.बापदादा 22.9.05 सन्देश मोहिनी बहन

''तुम जानते हो अभी खूने नाहेक खेल होना है।... नेचुरल केलेमिटीज होंगी, सबका मौत होगा। इसको देखने की बड़ी हिम्मत चाहिए। डरपोक तो झट बेहोश हो जायेंगे। इसमें निडरपना बहुत चाहिए।'' सा.बाबा 29.1.05 रिवा.

''यह है खूने नाहेक खेल, नेचुरल केलेमिटीज भी होंगी।... बहुत आफतें आयेंगी। तुम बच्चों को अभी ऐसी प्रैक्टिस करनी है, जो अन्त में एक शिवबाबा ही याद रहे।... नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा।'' सा.बाबा 13.4.05

''हाहाकार के बाद जयजयकार हो जायेगी। ... नेचुरल केलेमिटीज बहुत मदद करतीं हैं। ... ऐसी सीन को देखने के लिए हिम्मत चाहिए। मेहनत भी करना है और निर्भय भी बनना है। तुम बच्चों में अहंकार बिल्कुल नहीं होना चाहिए।''

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

''समय आपका इन्तजार कर रहा है और आपको इन्तजाम करना है, समय का इन्तजार नहीं

करना है। सर्व को सन्देश देने का और समय को सम्पन्न बनाने का इन्तजाम करना है।''

अ.बापदादा 20.12.92

''पुरुषोत्तम संगमयुग ... विनाश की बातें तो स्थापना के समय से चल रही हैं ... अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! ... बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं है... समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी, आपको नहीं।''

अ.बापदादा 15.4.92

''कब विनाश होगा ... बाप से पूछते हैं तारीख बता दो ... बापदादा बच्चों से प्रश्न पूछते हैं कि आप सब बाप समान बन गये हो?... ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक प्रैक्टिकल रूप में करके दिखाया।... बापदादा आपसे प्रश्न पूछता है - आप सभी सन्तुष्ट हो कि विश्व कल्याण का कार्य पूरा हो गया है?... पहले तो 9 लाख तैयार करो।... पहले जन्म वाली प्रजा भी तो अच्छे नम्बर वाली होगी ना।''

अ.बापदादा 31.12.05

''बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इन्तजार कर रहा है। आप समय का इन्तजार करने वाले नहीं हो, आप इन्तजाम करने वाले हो। समय आपका इन्तजार कर रहा है। सतोप्रधान प्रकृति भी आपका आवाह्न कर रही है। ... समय का आप इन्तजार नहीं करो कि कब विनाश होगा ... दो साल में होगा या दस साल में होगा।''

अ.बापदादा 31.12.05

''ड्रामा प्लॉन अनुसार तुम जागते हो, तुमको फिर औरों को जगाना है। अब तक जिसने जैसा पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था।... ड्रामा में उन्हों का पार्ट ही है मूसल बनाना क्योंकि वे विनाश के निमित्त बने हुए हैं। इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। ड्रामानुसार विनाश तो होना ही है।''

सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

''पूछते - बाबा विनाश की डेट बता दो। ... अगली सीज़न में बाबा ने पूछा था कि कम से कम सतयुग आदि के 9 लाख बने हैं? नहीं बनें हैं तो विनाश कैसे हो।... ज्योतिषियों बच्चों से पूछो। जो ज्योतिषी कर सकते हैं, वह बाप क्यों करेगा!... सतयुग की प्रजा भी रॉयल चाहिए।''

अ.बापदादा 31.12.96

''रुद्र यज्ञ रचते हैं, रुद्र ज्ञान यज्ञ कभी नहीं रचते हैं।... यहाँ तो तुमको स्वाहा होना पड़ता है।... इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई है। वे यज्ञ रचते हैं शान्ति के लिए।... स्वर्ग की स्थापना होती तो नर्क का तो जरूर विनाश होगा।''

सा.बाबा 18.9.08 रिवा.

समर्पित जीवन और प्राकृतिक आपदायें

समर्पित आत्मायें अर्थात् जो बाबा के बने हैं, जिन्होंने तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क बाबा को समर्पित किया है अर्थात् बाबा को अपना बनाया है और जिनको बाबा ने अपना बनाया है, उन आत्माओं का क्या कर्तव्य है, उसके विषय में भी बाबा ने बताया है। जैसे -

''किसी भी घटना का समाचार तो सब इन्ट्रेस्ट से सुनते हो ... अशान्ति के समय आप पूर्वज आत्माओं का और विशेष कार्य स्वत: ही हो जाता है। ... अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा-शक्ति द्वारा विशेष सेवा की ? ... ऐसे समय पर सेकेण्ड में अपनी सेवा पर अलर्ट हो जाना चाहिए।''

अ.बापदादा 10.12.92

''अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। ऐसे समय आप आत्माओं का फर्ज है उन आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन-शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। ... श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा परिस्थितियों को पार करने की शक्ति अनुभव कराओ।''

अ.बापदादा 10.12.92

समर्पणता और जीवन का अभीष्ट लक्ष्य

सम्पूर्णता - सम्पन्नता - सन्तुष्टता - प्रसन्नता

प्रसन्नता हर आत्मा का लक्ष्य है, उसका आधार है सन्तुष्टता, सन्तुष्टता का आधार है सम्पन्नता और सम्पन्नता, सम्पूर्णता से ही सम्भव है। सम्पूर्णता अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति। आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण और सम्पन्न है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, वह सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव करती है। सम्पन्नता के कारण सन्तुष्टता और सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्न रहती है। सम्पूर्णता का मूलाधार परमात्मा है क्योंकि वह सदा सम्पूर्ण, सदा पावन है, इसलिए जो आत्मा परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाती है, समर्पित भाव रखती है, वह सदा और सहज अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित होकर समपन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की अनुभूति में रहती है अर्थात् सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहती है और वह अतीन्द्रिय सुख उत्तरोत्तर वृद्धि को पता रहता है।

2-3 साल की अव्यक्त मुरलियों को देखें तो बाबा हमको हर मुरली के बाद में जो ड्रिल कराते हैं कि एक सेकण्ड में देह से न्यारे अपने बिन्दुरूप आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाओ, वही इसकी कसौटी है क्योंकि हमारा आत्मिक स्वरूप सर्व गुणों, सर्व शक्तियों, सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न है। जब हम उस स्थिति में स्थित होते हैं तो सम्पूर्णता और प्रसन्नता

अर्थात् अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द का अनुभव करते हैं। इस स्थिति के लिए किसी साधन-सम्पत्ति, व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आवश्यकता है यथार्थ ज्ञान, अटल निश्चय और दृढ़ पुरुषार्थ की।

ब्रह्मा बाबा का जीवन हमारे लिए आदर्श है। ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्णता किसी साधन-सम्पत्ति और व्यक्ति के आधार पर नहीं पायी है। उन्होंने ये स्थिति अपने दृढ़ पुरुषार्थ के आधार पर पायी है। वर्तमान में हम दादा विश्वरतन अर्थात् विजयी रतन को देखें तो भी उन्होंने ये विजय किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति के आधार पर नहीं पायी है। उन्होंने ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा को सामने रख अपने दृढ़ निश्चय, दृढ़ संकल्प, सतत पुरुषार्थ के आधार पर पायी है।

इस स्थिति को पाने में हमारा अपना ही आलस्य और अलबेलापन मुख्य बाधा है। इसके लिए हम कोई बहाना भी नहीं दे सकते हैं क्योंकि इसके लिए कोई व्यक्ति जिम्मेवार नहीं है। ब्रह्मा बाबा और दादा विश्वरतन के जीवन को देखें तो ये सिद्ध हो जाता है कि ये आत्मा की अपनी स्थिति है, इसलिए इसके लिए कोई बहाना भी नहीं दे सकते हैं क्योंकि बाबा ने हमको इस पुरुषार्थ के लिए भरपूर साधन दिये हुए हैं।

जिस लक्ष्य से समर्पित होते, वह लक्ष्य सदा ध्यान में रहता है या रखना चाहिए और उस अनुसार ही कर्तव्य करना चाहिए। हम बाबा के किस लिए बनें हैं, वह लक्ष्य सदा याद रहेगा तो पुरुषार्थ भी उस अनुसार ही होगा। बाबा सदा ही कहते हैं - भक्ति मार्ग के सतसंगों में कोई लक्ष्य नहीं होता है, यहाँ तो बाबा ने तुमको लक्ष्य दिया है कि तुमको ऐसा बनना है, इसलिए तुमको अपना लक्ष्य सदा याद रखना है।

यज्ञ में या सेवाकेन्द्र पर समर्पित होने वालों को भी समर्पित होने का लक्ष्य याद रहेगा, तो उस अनुसार कर्म होता रहेगा और बुद्धि यहाँ-वहाँ भटकेगी नहीं।

परमात्मा के प्रति समर्पित जीवन की कसौटी

परमात्मा ज्ञान का सागर सर्वशक्तिवान, सच्चिदानन्द स्वरूप है, जो आत्मा उनके प्रति या उनके पास समर्पित होती है, उसका जीवन सदा ही परमानन्दमय अर्थात् अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में होगा।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, जो आत्मा उनके पास समर्पित होगी, वह मास्टर ज्ञान सागर की स्थिति के अनुभव में होगी अर्थात् वह सदा अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी और आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए वह सदा ही परमानन्द के अनुभव में होगी।

परमात्मा विश्व-कल्याण के अर्थ इस धरा पर अवतरित होते हैं और जो आत्मा उनके पास समर्पित होगी, वह तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क से विश्व कल्याण के कर्तव्य में तत्पर होगी और उस कर्तव्य में ही परम सुख का अनुभव करेगी।

परमात्मा ज्ञान सागर है, उसने इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, इसके विधि-विधान बताये हैं और इस सत्य को स्पष्ट किया है कि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, इसलिए वह हर बात में कल्याण समझ, इसके परम सुख को अनुभव करेगा।

संगमयुग कल्याणकारी युग है, इस समय जो आत्मा परमात्मा की बनती है अर्थात् उनके पास समर्पित होती है, उसका सदा कल्याण है ही, इसलिए वह सदा परमानन्द का अनुभव करेगी।

जो परमात्मा के पास समर्पित हो जाता है, वह सदा ही परमात्मा की मदद की अनुभूति करता है क्योंकि जो परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाता है, उसको परमात्मा की मदद स्वत: मिलती है अर्थात् अनुभव होती है।

समर्पित आत्मा को सर्वात्माओं का सहयोग भी स्वत: मिलता है क्योंकि उसका कोई अपना नहीं होता और न कोई पराया होता। उसके सभी अपने होते हैं क्योंकि वह विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता होता है। उसकी सभी के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना होती है, जिससे सभी उसके स्वत: ही सहयोगी होते हैं। दुनिया में भी गायन है - जा पर कृपा राम की होई, उस पर कृपा करे सब कोई।

समर्पित आत्मा कर्मभोग में भी अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करता है क्योंकि यथार्थ ज्ञान होने के कारण, वह देह से न्यारा होता है, जिससे कर्मभोग होते भी उसकी महसूसता नहीं होती है और होती भी है तो नाम-मात्र क्योंकि उसको कर्मभोग के राज़ का भी ज्ञान होता है।

''आप समर्पण कराने आये हो वा सम्पूर्ण होने आये हो ? वतन से दर्पण लाया है, सभी का अर्पणमय का मुखड़ा देखने के लिए और दिखाने के लिए। समर्पण हो चुके हो ? सभी हो चुके हो ? इस सभा में कौन समझते हैं कि हम समर्पण हो चुके हैं ? समर्पण किसको कहा जाता है ? देहाभिमान में समर्पण हुए हो ? समर्पण अर्थात् सम्पूर्ण अर्पण हुए ? हाँ वा ना बोलो।''

अ.बापदादा 14.5.70

''देहाभिमान से अर्पण हुए हो ?... स्वभाव अर्पण का समारोह कब करेंगे ?... बापदादा वह समारोह मनाना चाहते हैं, वह कब मनायेंगे ? इसलिए कहा कि दर्पण लेकर आये हैं, उसमें तीन बातें देख रहे हैं। एक स्वभाव समर्पण, दूसरा देहाभिमान का समर्पण और तीसरा सम्बन्धों का समर्पण। देह अर्थात् कर्मेन्द्रियों के लगाव का समर्पण।'' अ.बापदादा 14.5.70

''ऐसी सर्विस करनी है, जो पूरा ही न्योछावर हो जायें। जो जितना स्वयं न्योछावर बने हैं, वे उतना ही औरों को भी बनाते हैं। अगर स्वयं ही सम्पूर्ण न्योछावर नहीं बने हैं तो औरों को भी सम्पूर्ण न्योछावर नहीं बना सकते।... इसका ही यादगार काशी कलवट है।''

अ.बापदादा 5.3.70

समर्पणता और सम्पूर्णता में सम्बन्ध

सम्पूर्णता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है क्योंकि सम्पूर्णता से ही सम्पन्नता और सम्पन्नता से सन्तुष्टता एवं सन्तुष्टता से प्रसन्नता की अनुभूति होती है, जो हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है। सम्पूर्णता और समर्पणता का गहरा सम्बन्ध है अर्थात् जो आत्मा जितना और जैसे समर्पण करते हैं, वे उसी विधि से और उतना ही सम्पूर्ण बनते हैं या वर्तमान जीवन में सम्पूर्णता का अनुभव करते हैं। ब्रह्मा बाबा ने तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से अंश और वंश सहित समर्पण किया और एक धक से समर्पण किया तो उन्होंने वैसे ही इस जीवन में भी सम्पूर्णता का अनुभव किया और उसकी झलक अपने जीवन से दिखाई और सम्पूर्णता के अन्तिम लक्ष्य फरिश्ता स्वरूप को प्राप्त किया। सारे विश्व और त्रिकाल में पहले मानव हैं, जिन्होंने सम्पूर्णता को प्राप्त कर फरिश्ता रूप धारण किया और साकार में रहते भी सम्पूर्णता को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, अनुभव कराया। इसलिए उनका जीवन ही हमारे लिए आदर्श है।

''सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है? ... एक तो हर संकल्प, दूसरा हर सेकेण्ड अर्थात् समय, तीसरा कर्म और चौथा सम्बन्ध एवं सम्पत्ति जो भी है, वह भी समर्पण।... आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का भी समर्पण।''

अ.बापदादा 29.6.70

''आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो। दर्पण जितना पॉवरफुल, उतना ही साक्षात्कार स्पष्ट।... जितना-जितना स्वयं अर्पणमय होगा, उतना ही दर्पण पॉवरफल होगा।''

अ.बापदादा 11.7.71

''दर्पण के सामने आने से न चाहते हुए भी अपना स्वरुप दिखाई देता है। इस रीति से जब सदैव एक की याद में बुद्धि को अर्पण रखेंगे तो आप चेतन्य दर्पण बन जायेंगे। जो भी सामने आयेंगे वह अपना साक्षात्कार वा अपने स्वरुप को सहज अनुभव करते जायेंगे।''

अ.बापदादा 10.6.71

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है? जितना विशाल रूप से इसको धारण करेंगे, उतना ही विशाल बुद्धि भी बनते हैं और विश्व के अधिकारी भी बनते हैं।''

अ.बापदादा 29.6.70

''समर्पण की विशालता में चार बातें हैं। एक तो अपना हर संकल्प समर्पण, दूसरा हर सेकेण्ड समर्पण अर्थात् समय समर्पण, तीसरा कर्म भी समर्पण और चौथा सम्बन्ध और सम्पत्ति भी जो है, वह भी समर्पण। ... सम्बन्ध में लौकिक सम्बन्ध तो आ ही जाता है लेकिन यह जो आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है, उसका भी समर्पण।''

अ.बापदादा 29.6.70

''जब स्वभाव समर्पण समारोह होगा, तब सम्पूर्ण मूर्त का साक्षात्कार होगा।... अपने सुहाग को कायम रखने से भाग्य भी कायम रहता है। ... सुहाग की निशानी होती है चिन्दी और बिन्दी। ... अगर यह बिन्दी रूप की स्थिति सदा साथ है तो वही सदा सुहागिन है। तो अपने सुहाग से भाग्य को देखो।''

अ.बापदादा 14.5.70

''अभी न्योछावर होने वालों की क्यू लगनी है। अभी नहीं लग रही है, इसका कारण है कि बच्चों के पास ही अभी व्यर्थ संकल्पों की क्यू लगी हुई है।... व्यर्थ संकल्पों की क्यू का मुख्य कारण है एक शब्द 'क्यों' अर्थात् यह क्यों हुआ?... इस क्यू की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी।''

अ.बापदादा 5.3.70

सम्पूर्णता का राज़ समर्पणता

आत्मा को समर्पणता से ही सम्पूर्णता की प्राप्ति होती है अर्थात् समर्पणता में सम्पूर्णता का राज़ समाया हुआ है अथवा ऐसे कहें कि समर्पणता ही सम्पूर्णता रूपी वृक्ष का बीज है, जिसका फल-फूल पवित्रता, सुख-शान्ति हैं। सच्ची समर्पणता क्या है, उससे क्या प्राप्ति होती है, उसकी स्थिति क्या होगी, यह राज़ भी अभी ही परमात्मा ने बताया है। परमात्मा के प्रति समर्पणता का बहुत महत्व है और उसका बड़ा फल मिलता है परन्तु समर्पण कैसे हों, सच्ची समर्पणता क्या होती है, उसका ज्ञान भी अति आवश्यक है। सच्ची समर्पणता क्या है, उसका स्वरूप भी ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, जिससे हम बच्चों को उसका अनुसरण करना सहज हो जाये। जो जितना समर्पण होता है, वह उतना ही सम्पूर्णता का अनुभव करता है और सम्पूर्णता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है क्योंकि सम्पूर्णता में ही सुख-शान्ति समाई हुई है।

''तन-मन-धन, समय और सम्बन्ध सब अर्पण। ... मुख्य बात है ही मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों को समर्पण करना। ... जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, जो बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे वह श्रीमत के बिना नहीं करेंगे।''

अ.बापदादा 3.10.69

''जो बलि चढ़ जाता है, उसको रिटर्न में क्या मिलता है? बलि चढ़ने वालों को ईश्वरीय बल बहुत मिलता है।... खुद को बदलकर औरों को बदलना है, यह है निश्चय की छाप।''

अ.बापदादा 28.9.69

''अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए।... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता।... अव्यक्त मिलन का अनुभव भी वही कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।''

अ.बापदादा 17.5.69

''आज वतन से दर्पण लाया है, सभी का अर्पणमय मुखड़ा देखने के लिए और दिखाने के लिए। ... समर्पण किसको कहा जाता है?... उसमें तीन बातें देख रहे हैं। एक स्वभाव समर्पण, दूसरा देह अभिमान का समर्पण और तीसरा सम्बन्धों का समर्पण।''

अ.बापदादा 14.5.70

''समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बने तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। समय पर सम्पूर्ण बने तो सम्पूर्णता क्या चीज है, उसका अनुभव कब करेंगे? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है।... अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे। फिर कब हो न सकेगा।''

अ.बापदादा 18.6.70

''बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं। ... पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है। ... साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न (स्पष्ट) देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था!... इस स्थिति को कहा जाता है उपराम। उपराम और साक्षीदृष्टा।''

अ.बापदादा 26.3.70

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण।... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।''

अ.बापदादा 29.6.70

''सम्पन्नता, सम्पूर्णता की निशानी है। सम्पूर्णता की चेकिंग अपनी सम्पन्नता से कर सकते हो। ... ज्ञान, योग, धारणा, सेवा सभी में सम्पन्न।... तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि समीप हैं, सम्पन्न हैं।'' अ.बापदादा 11.11.89 पार्टी 1

समर्पणता, सम्पूर्णता और समानता

समर्पणता से ही जीवन में सम्पूर्णता आती है और सम्पूर्णता ही समानता है अर्थात् बाप समान स्थिति है क्योंकि बाप सदा सम्पूर्ण है और ब्रह्मा बाबा ने समर्पणता से बाप समान स्थिति को प्राप्त किया। समर्पणता ही सम्पूर्णता और बाप समान स्थिति की आधार शिला है।

''विनाशी सम्पत्ति तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन जो अविनाशी सम्पत्ति सुख-शान्ति, पवित्रता, प्रेम, आनन्द की प्राप्ति जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में होती है, उसको भी और आत्माओं की सेवा में समर्पण कर दिया। बच्चों की शान्ति में स्वयं की शान्ति समझी।... ऐसे विशाल रूप से समर्पण शब्द को धारण करने वाले सम्पूर्णमूर्त और सफलतामूर्त बनेंगे।''

अ.बापदादा 29.6.70

''स्वमान कैसे मिलता है?'' जितना निर्मान, उतना स्वमान। जितना-जितना बापदादा के समान, उतना ही स्वमान। ... साक्षात्कार किसमें होता है? दर्पण में। ... सम्पूर्ण दर्पण तब बनेंगे, जब सम्पूर्ण अर्पण होंगे। ... सम्पूर्ण अर्पण अर्थात् स्वयं के भान से भी अर्पण।''

अ.बापदादा 5.4.70

समर्पणता और सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता में सम्बन्ध

समर्पणता से ही सम्पूर्णता आती है और सम्पूर्ण आत्मा ही अपने को सम्पन्न अनुभव करेगी। सम्पन्नता सन्तुष्टता की जननी है, सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्न रहती है। ये पाँचो बातें एक-दूसरे का आधार हैं।

''प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा,वह किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर,.. न ड्रामा के ऊपर,.. न व्यक्ति पर,.. न प्रकृति के ऊपर,.. न शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।''

अ.बापदादा 5.10.87

''संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता की निशानी प्रसन्नता है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति।... ब्राह्मण जीवन का वर्सा एवं प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है।''

अ.बापदादा 5.10.87

''ब्रह्मा बाप में समर्पणता से समानता सेकण्ड में आई। ... जो सोच-सोचकर समर्पण होते हैं, उनकी रिजल्ट अब भी पुरुषार्थ में वही सोच अर्थात् व्यर्थ संकल्प विघ्न रूप बनते हैं।''

अ.बापदादा 1.11.70

''तूफान तोहफा बन जाये, समस्या उड़ती कला का अनुभवी मूर्त बनाने का आधार बन जाये। समस्या, समस्या के रूप में नहीं रहे, परिवर्तन हो जाये। ... जहाँ अर्पणमय जीवन है, वहाँ समस्या क्या है ? मरी हुई चींटी के समान है। ... समस्या अनुभवी मूर्त बनाने का साधन है।''

अ.बापदादा 22.04.09

''जब दूसरों को कहते हो कमल पुष्प समान रहो तो आप कौन हो ? कमल अर्थात् अमल करने वाले।... बापदादा हर प्यारे ते प्यारे बच्चे में तीन विशेषतायें देखते हैं। कौन सी ? एक तो सदा फरमानबरदार। ... जो श्रीमत मिली, फरमान मिला, वह मेरे लिए पर्सनल है।... दूसरी वफादार। वृत्ति, दृष्टि और वायुमण्डल के कारण कहाँ भी ऑख डूबे नहीं। स्वप्न मात्र भी वफादार।... और मधुबन के वायुमण्डल को बनाकर रखना।''

अ.बापदादा 22.04.09

''अगर माननीय बनना है तो मान माँगो नहीं। मान देने वाला माननीय बनता है। ... लास्ट जन्म तक माननीय हो क्योंकि बाप के साथ आपने मान दिया है। ... विशेष आपके यादगार मूर्तियों के आगे कहते क्षमा करना।... शिक्षा देने से पहले खीमियाँ भाव (क्षमाभाव) धारण करो, फिर शिक्षा दो।''

अ.बापदादा 22.04.09

समर्पणता और सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता एवं बाप समान स्थिति

सभी आत्माओं को शिवबाबा के समान सम्पूर्ण बनना है परन्तु बनेंगे तब जब ब्रह्मा बाप के समान पुरुषार्थ करेंगे। 'बापदादा' कहते हैं तो ब्रह्मा बाप शिव बाप के समान कैसे बना, वह भी हमारी बुद्धि में रहना अति आवश्यक है, तब ही हम समान बनने का पुरुषार्थ कर सकेंगे। शिवबाबा ने बताया है कि ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्णता को समर्पणता के द्वारा ही पाया है और ये सिद्धान्त भी बताया है कि जो जितना और जैसे समर्पण होता है, वह उतना और वैसी ही सम्पूर्णता की स्थिति को पाता है। जब आत्मायें सम्पूर्ण बनती हैं, तब ही सम्पन्नता को अनुभव करती हैं और सम्पूर्णता एवं सम्पन्नता ही पुरानी दुनिया की समाप्ति को लाती है अर्थात् समाप्ति की निशानी है क्योंकि जब आत्मायें सम्पूर्ण और सम्पन्न बन गई तो उनके लिए नई दुनिया चाहिए और जब नई दुनिया आयेगी तो पुरानी दुनिया का विनाश अवश्य होगा।

''अभी साथ उड़ना है और साथ रहना है। यह स्मृति में रखो तब अपने को जल्दी समान बना सकेंगे। ... समान बनने से ही साथ रहेंगे। समानता कैसे लायेंगे ? साकार बाप के समान बनने से। अभी बापदादा कहते हो ना। उनमें समानता कैसे आई ? समर्पणता से समानता सेकण्ड में आई। ऐसे समर्पण करने की शक्ति चाहिए।''

अ.बापदादा 1.11.70

''ड्रामा प्लॉन अनुसार आप श्रेष्ठ आत्माओं के साथ पश्चाताप का सम्बन्ध है। जब तक पश्चाताप न किया है तब तक मुक्तिधाम जाने का वर्सा भी नहीं पा सकते।... अभी अपने ही आगे अपनी सम्पूर्णता प्रत्यक्ष नहीं है तो औरों के आगे कैसे प्रत्यक्ष होंगे।... इतनी ही देरी है, विनाश के आने में, जब तक आप निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपने सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार हो जाये।''

अ.बापदादा 19.4.73

''क्यामत का समय भी इसको कहा जाता है। आसुरी बन्धन का सब हिसाब-किताब चुक्तू कर फिर वापस चले जाते हैं। ... तुम ही इस चक्र में आते हो। बुद्धि में यह नॉलेज सदैव रहनी चाहिए और फिर समझाना भी है। धन दिये धन न खुटे।... जो कुछ होता है, कल्प पहले मुआफिक। ऐसे समझ शान्त रहना होता है।''

सा.बाबा 13.11.05 रिवा.

समर्पणता और आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख

अतीन्द्रिय सुख या आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है। सुख और सुख के स्थूल साधन तो सतयुग में अपार होंगे परन्तु अतीन्द्रिय सुख या आनन्द पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही मिलता है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - तुम सतयुग का इन्तजार नहीं करो लेकिन वर्तमान के आनन्द या अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो। वर्तमान का सुख ही भविष्य सुख का आधार है। जिसने वर्तमान के अतीन्द्रिय सुख का अनुभव न किया तो वह भविष्य के भौतिक सुखों का अनुभव क्या करेगा क्योंकि वर्तमान के अतीन्द्रिय सुख का भविष्य के भौतिक सुखों से घनिष्ट सम्बन्ध है। वास्तव में वर्तमान का अतीन्द्रिय सुख ही शिवबाबा का यथार्थ वर्सा है क्योंकि बाबा अभी आया है तो वर्सा भी अभी ही मिलेगा। इसलिए भविष्य के इन्तजार में न जियो लेकिन वर्तमान के आनन्द का अनुभव करो। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुम आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर ज्ञान का चिन्तन कर बाबा की अव्यभिचारी याद में रह सदा इस जीवन के परमानन्द का अनुभव करो और कराओ। लेकिन अतीन्द्रिय सुख का यथार्थ रीति अनुभव वही कर सकता है, जो संकल्पों और विकल्पों से मुक्त होगा और संकल्प-विकल्प से मुक्त वही होगा, जो तन-मन-धन-जन सब शिवबाबा को समर्पण कर ट्रस्टी बनकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजायेगा और इसके हर दृष्य को साक्षी होकर देखेगा।

''अब तुमको यथार्थ रीति बाप का परिचय सबको देना है। तुमको भी बाप ने दिया है। ... तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। तब तो गायन भी है - अतीन्दिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो।''

सा.बाबा 7.11.05 रिवा.

''कभी सोचा था कि इतना विशेष पार्ट इस ड्रामा में हमारा नूँधा हुआ है! ... जब त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होते हो तो कितना मज़ा आता है... यह संगमयुग टॉप प्वाइन्ट है। तो इस पर खड़े होकर देखो तो मज़ा आयेगा।''

अ.बापदादा 18.11.93 पार्टी 6

''तो चेक करो - सुख-शान्ति, सम्पत्ति अर्थात् सदा हद की प्राप्तियों के आधार पर सुख है या आत्मिक अतीन्द्रिय सुख परमात्म सुखमय राज्य है?... स्वराज्य की सम्पत्ति ज्ञान-गुण, शक्तियां हैं। ... सम्पन्नता की निशानी है - सदा सन्तुष्ट, अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। हद की इच्छाओं की अविद्या।''

अ.बापदादा 18.11.93

समर्पणता और हिसाब-किताब

जैसे आत्माओं के कर्मों का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब बनता है, वैसे ही हम साकार में आये परमात्मा के प्रति जो समर्पित करते हैं, उसका पूरा हिसाब है, उस अनुसार ही हमको भविष्य में स्थूल धन-सम्पत्ति के रूप में मिलता है और उस अनुसार ही हमको अभी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है। इस हिसाब-किताब के विषय में बाबा ने अनेक मुरलियों में विस्तार से बताया है। बाबा ने कहा है - यह शिवबाबा की बैंक है, इसमें जो जितना तन-मन-धन से जमा करता है अर्थात् समर्पित करता है, जिस भावना से करता है, उस अनुसार ही उसका हिसाब-किताब बनता है और उसका फल मिलता है।

समर्पणता और महारथी एवं आदि रतन

समर्पणता और बाप की शिक्षा का स्वरूप

विशेष पुरुषार्थी, ईश्वरीय सेवा में अग्रणी आत्माओं को बापदादा महारथी कहते हैं और जो यज्ञ की स्थापना की आदि से ही यज्ञ में समर्पित हुए हैं, उनको आदि रतन कहते हैं और उनके लिए समय समय पर विशेष श्रीमत देते हैं, जिससे वे सबके सामने उदाहरण स्वरूप बन सकें।

''आदि रत्न अर्थात् हर श्रीमत को जीवन में लाने की आदि करने वाले। सिर्फ सुनने वाले नहीं लेकिन करने वाले।... यह रुहानी नशा माया के नशों से छुड़ा देता है। यह रुहानी नशा सेफ्टी का साधन है।... करने में पहले मैं। जो करेगा वह पायेगा।''

अ.बापदादा 13.12.90 पार्टी 1

''अपने को सदा स्व-स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेशी समझने से, इस स्थिति में स्थित रहने से एक सेकेण्ड में किसी भी आत्मा को नजर से निहाल कर सकेंगे। ... अभी सभी सिद्धि चाहते हैं न कि साधना। तो सिद्धि अर्थात् सद्गति। तो ऐसी तड़फती हुई थकी हुई आत्माओं वा प्यासी आत्माओं की प्यास आप श्रेष्ठ आत्माओं के सिवाए कौन बुझायेंगे।''

अ.बापदादा 24.10.71

''तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपनी तरफ खींच लेती है, इस पर ही यह खेल बना हुआ है। ... बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान आना चाहिए। बाप की बुद्धि में भी नॉलेज है ना। तुमको भी सारी नॉलेज दे आप समान बना रहे हैं।''

सा.बाबा 29.11.04 रिवा.

''एक 'मैं आत्मा विश्व-कल्याण के श्रेष्ठ कर्तव्य के प्रति सर्वशक्तिवान बाप द्वारा निमित्त बनी हुई हूँ' - यह स्लोगन स्मृति में रहे। ... दूसरा स्लोगन 'मैं आत्मा महादानी और वरदानी हूँ' ... तीसरी बात मुझ आत्मा को अपने चरित्र, बोल व संकल्प द्वारा अपने मूर्त में सभी आत्माओं को बापदादा की सूरत और सीरत का साक्षात्कार कराना है।''

अ.बापदादा 25.5.73

''जिस सेवा-स्थान पर सेवा की वृद्धि होती है और निर्विघ्न रहते हैं, उसका कारण क्या होता है? जानते हो? पालना।... दिल से पालना करो, एक-एक की कमजोरी को हटाने की मेहनत करो।''

अ.बापदादा 21.10.05

बाबा ने यह भी कहा है कि तुम सभी टीचर्स हो क्योंकि तुम सभी भी दूसरों को ज्ञान देते हो, शिक्षा-सावधानी देते हो परन्तु शिक्षा-सावधानी का स्वरूप क्या होना चाहिए, उसके लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है कि किसी को शिक्षा देते हो तो शिक्षा का स्वरूप बनकर शिक्षा दो, क्षमा के सागर बनकर शिक्षा-सावधानी दो। इसी गुण के कारण परमात्मा को परम शिक्षक और क्षमा के सागर कहा जाता है।

''अगर कोई असफल करता है तो बोल द्वारा शिक्षा नहीं दो, अपने शुभ भावना, शुभ कामना और सदा शुभ सम्मान देने की विधि द्वारा सफल कराओ।... क्षमा और शिक्षा अर्थात् क्षमा रूप बनकर शिक्षा दो। मर्सीफुल बनो, रहमदिल बनो। आपका मर्सीफुल रूप अवश्य ही शिक्षा का फल दिखायेगा।''

अ.बापदादा 15.11.05

''यह ईश्वरीय सर्विस है। यह बहुत ऊंच सर्विस है। जो इस सर्विस में बिजी रहते, उनको और कुछ भी मीठा नहीं लगता। कहेंगे हम यह मकान आदि लेकर भी क्या करेंगे। हमको तो पढ़ाना है, यही सर्विस करनी है। मिल्कियत आदि में खिटपिट देखेंगे तो कहेंगे ऐसा सोना ही किस

काम का जो कान कटें।... कोई मकान दे और बन्धन डाले तो ऐसे लेंगे ही नहीं।''

सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

''बाप टीचर है, बच्चे भी टीचर चाहिए। ऐसे नहीं कि टीचर और कोई काम नहीं कर सकते हैं। सब काम करना चाहिए।''

सा.बाबा 3.12.05 रिवा.

''क्लास में जब तुम ब्राह्मणियां बैठती हो तो तुम्हारा काम है पहले-पहले सबको सावधान करना। भाइयो-बहनों अपने को आत्मा समझ कर बैठो।''

सा.बाबा 27.11.05 रिवा.

''जो होना नहीं चाहिए, जो करना नहीं चाहते, वह न होना चाहिए और न करना चाहिए - यह है पुण्यात्मा की निशानी।... तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प, बोल, कर्म द्वारा पुण्यात्मा बन पुण्य करेंगे।... मधुबन की लहर, निमित्त टीचर्स की लहर प्रवृत्ति वालों तक, गॉडली स्टूडेण्ट्स तक सहज पहुँचती है।''

अ.बापदादा 10.4.91

''क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो। ... क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है, सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है। ... अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता है? बाप की दुआयें मिलती हैं ना।''

अ.बापदादा 30.11.92

''क्षमा करना ही शिक्षा देना हो जायेगा। शिक्षा देते हो तो क्षमा भूल जाते हो। ... क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है, सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है। ... अगर श्रीमत प्रमाण कोई भी कदम उठाते हो तो क्या अनुभव होता है? बाप की दुआयें मिलती हैं ना।''

अ.बापदादा 30.11.92

''अकल्याण करने वाले के ऊपर भी कल्याण की भावना, कल्याण की दृष्टि-वृत्ति-कृत्ति। इसको कहा जाता है - कल्याणकारी आत्मा। ... अभी शिक्षा देने का समय चला गया। अभी स्नेह दो, सम्मान दो, क्षमा करो, शुभ भावना रखो, शुभ कामना रखो - यही शिक्षा देने की विधि है। अभी वह विधि पुरानी हो गई।''

अ.बापदादा 13.2.91

''अगर महारथी भी मिक्स करता है, चतुराई से चलता है तो उस समय वह महारथी, महारथी नहीं है ... इसलिए बाप ने क्या स्लोगन दिया है - फॉलो फादर या सिस्टर-ब्रदर? साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को आगे रखो, फॉलो करो और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फॉलो करो।''

अ.बापदादा 27.2.96

समर्पणता और आपघात - महापाप

समर्पणता और जीवघात

आपघात क्या है और आपघात और जीवघात में क्या अन्तर है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है। दुनिया में भी आपघात महापाप कहा जाता है। बाबा ने आपघात की वास्तविकता को भी बताया है और आपघात न हो, उसके लिए श्रीमत भी दी है। दुनिया वाले तो जीवघात को आपघात कहते हैं परन्तु बाबा ने बताया है कि आत्मा तो अजर-अमर है, उसका घात तो कब होता नहीं है, जीवघात होता है और आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा ले लेती है। बाबा का बनकर, बाबा का हाथ छोड़ देना वास्तव में आपघात महापाप है क्योंकि उससे आत्मा का अपना भी अकल्याण होता है और बाप का नाम भी बदनाम होता है। ज्ञान की यथार्थता को जानने वाला कब आपघात कर नहीं सकता अर्थात् बाप को यथार्थ रीति जानकर बाप का बनने वाला कभी भी बाप का हाथ नहीं छोड़ सकता है।

दूसरों को दुख देना तो पाप है ही परन्तु बाबा ने कहा है - अपने को दुख देना भी पाप है। कोई तंग होकर अपना जीवघात कर लेते हैं, वह भी पाप-कर्म है क्योंकि वह भी अपने कर्मों के फल भोगने से विमुख होना है। जबकि विधान है कि हर आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा, वह चाहे इस जन्म में भोगें या अगले जन्म में भोगें। कोई दुख न होते भी भक्ति मार्ग में भावना से बलि चढ़ जाते हैं, उसको भी बाबा ने महापाप कहा है। मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए कोई जीवित समाधि ले लेते, वह भी पाप कर्म है क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा भी आत्मा को इस जगत के दुख को देख कर ही जाग्रत होती है।

'आपघात महापाप' कहा गया है। आपघात क्या है और जीवघात क्या है और दोनों में क्या अन्तर है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है। आपघात तथा जीवघात दोनों ही महापाप हैं। जो ज्ञान की वास्तविकता को और परमात्मा को यथार्थ रीति जानकर उनका बनते हैं, वे कभी भी आपघात या जीवघात नहीं कर सकते हैं। यदि करते हैं तो उन्होंने ने ज्ञान को और परमात्मा को यथार्थ रीति नहीं समझा है, इसलिए उन पर उनको पूरा निश्चय नहीं है।

''तीसरे प्रकार की महसूसता है - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज़ भी देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकिन बाहर से ... यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे ही यह भी पाप के खाते में जमा होता है।''

अ.बापदादा 2.11.87

''आत्मा के असली गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना - यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए कहा जाता है आत्मघाती महापापी। ... माया के

वश, परमत के वश, कुसंग के वश या परिस्थिति के वश अपने ईश्वरीय विवेक को दबाते हो तो समझो ईश्वरीय विवेक का खून करते हो।''

अ.बापदादा 15.10.75

''सबसे बढ़ा धोखा स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित कर देते हो। ... अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना, कोई भी गलती करके छिपाना - यह भी स्वयं को धोखा देना है वा ठगी करना है।''

अ.बापदादा 15.10.75

''शरीर को खत्म करने के लिए जीवघात करते हैं, समझते हैं शरीर छोड़ने से दुखों से छूट जायेंगे। परन्तु यह भी महापाप है, और भी अधिक दुख भोगने पड़ते हैं।''

सा.बाबा 11.01.06 रिवा.

Q. क्या ज्ञान को यथार्थ रीति समझने वाला और परमात्मा को जानकर उनका बनने वाला अर्थात् उनके प्रति समर्पित होने वाला आपघात या जीवघात कर सकता है ?

नहीं, क्योंकि ये भी मानसिक कमजोरी है और अज्ञानता है। परमात्मा का बनने वाले के ऊपर उनकी सदा छत्रछाया रहती है और परमात्मा की छत्रछाया में रहने वाले को ऐसा करना तो दूर की बात है, उसको ऐसा संकल्प भी नहीं आ सकता है।

समर्पणता और मरजीवा जीवन

समर्पणता और जीते जी मरना

मरजीवा बनना अर्थात् जीते जी पुरानी दुनिया से मरकर परमात्मा का बन जाना और जीते जी मरना अर्थात् पुरानी देह और पुरानी दुनिया को भूल जाना। जो परमात्मा के बनते हैं अर्थात् परमात्मा के प्रति समर्पित होते हैं, उनको बाबा जीते जी मरने का विधि-विधान बताकर, उसका अभ्यास कराकर अमरत्व प्रदान करते हैं अर्थात् मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त करते हैं।

''अभी तुमको जीते जी मरना है। सारी दुनिया को भूल जाना है। अपने को आत्म समझ शिवबाबा का बच्चा बन जाना है। ...बाप के बने हैं तो बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न रहे।'' सा.बाबा 26.8.05 रिवा.

''तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनकर बाप की याद में रहना है।... अपने को शरीर से अलग समझना चाहिए। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो, देह को भूलते जाओ।... जीते जी मौत की अवस्था में रहना है।'' सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

''बाबा भी ऐसे-ऐसे प्रैक्टिस करते हैं, फिर बतलाते हैं, तुम भी ऐसे-ऐसे करो। जितना तुम बाप की याद में रहेंगे तो स्वत: ही नींद फिट जायेगी। कमाई में आत्मा को बहुत मज़ा आयेगा।... यह अविनाशी धन आधा कल्प के लिए इकट्ठा करना है। विचार सागर मन्थन करके रत्न निकालने हैं।''

सा.बाबा 29.10.05 रिवा.

''जीते जी मरना अर्थात् पुराने संस्कारों से मरना। पुराने संस्कार, पुराने संसार की आकर्षण से मरना - यह है जीते जी मरना। ... संकल्प और स्वप्न में भी पुराने संसार और पुराने संस्कार से मरना।''

अ.बापदादा 3.11.92

''ऐसे ही शरीर से परे होने का भी अभ्यास चाहिए और बहुत समय का अभ्यास चाहिए। ... बार-बार यह प्रैक्टिस करो - अभी-अभी शरीर में आयें और अभी-अभी शरीर से न्यारे अशरीरी हो जायें।''

अ.बापदादा 18.01.93 पार्टी 5

''मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, यह समझना गोया जीते जी मरना। ... अपनी आपेही जाँच करनी है कि हमारे ऊपर विकर्मों का जो बोझा है, वह कैसे उतरे।''

सा.बाबा 17.4.06 रिवा.

''तुमको सफेद कपड़ों का बन्धन नहीं है परन्तु सफेद अच्छा है। ... मनुष्य मरते हैं तो भी सफेद चादर डालते हैं। तुम भी अभी मरजीवा बने हो तो सफेद ड्रेस पहनना अच्छा है।''

सा.बाबा 3.01.06 रिवा.

''तुम तन-मन-धन सब बेहद के बाप के अर्थ देते हो, जिसको बलिहार जाना कहा जाता है। ... बाप कहते हैं - पहले तुम बलिहार जाते हो, तब फिर 21 जन्मों के लिए बाप की बलिहारी मिलेगी अर्थात् बाप बलिहार जायेंगे।''

सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

समर्पणता और आशुक-माशुक

आत्मा परमात्मा को याद करती है, उस याद की तुलना बाबा ने आशुक-माशुक की याद से की है। हमारी याद सदा ऐसी रहे, जैसे आशुक-माशुक एक-दूसरे को याद करते हैं। आशुक-माशुक भी एक-दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं, इसलिए उनको एक-दूसरे के अतिरिक्त दुनिया में और कुछ दिखाई नहीं पड़ता है, एक-दूसरे के लिए कुछ भी कुर्बान करने को तैयार होते हैं।

''सारे कल्प में इस समय ही रुहानी माशुक और आशिकों का मिलन होता है। ... सदैव सोचो - हम किसके आशिक हैं! जो सदा सम्पन्न है, ऐसे माशुक के हम आशिक हैं।''

अ.बापदादा 13.3.87

''सच्चे आशिक की विशेषतायें जानते हो ? एक माशुक द्वारा सर्व सम्बन्धों की समय प्रमाण अनुभूति करना। ... दूसरा सच्चे आशिक हर परिस्थिति में, हर कर्म में सदा प्राप्ति की खुशी में होते, ... जिस आशिक को अनुभूति है, प्राप्ति है, वह सदा तृप्त रहेंगे। ... तृप्ति आशिक की विशेष विशेषता है। ... सन्तुष्टता तृप्ति की निशानी है।... सच्चे आशिक हद की चाहना से परे, सदा सम्पन्न और समान होंगे।''

अ.बापदादा 13.3.87

''सदा हाथ और साथ ही सच्चे आशिक-माशुक की निशानी है। ... सदा बुद्धि का साथ हो और बाप के हर कार्य में सहयोग का हाथ हो।''

अ.बापदादा 13.3.87

''आत्मा अपने माशुक को आधा कल्प से याद करती आई है। अब वह माशूक आया हुआ है। कहते हैं - तुम काम चिता पर बैठ काले बन गये हो, अभी हम सुन्दर बनाने आये हैं। उसके लिए है यह योग-अग्नि। ज्ञान को चिता नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

''आशिक-माशुक एक दो को याद करते हैं तो याद करते ही वह सामने खड़ा हो जाता है।... ऐसे सदा बाप सामने रहे।''

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

''यहाँ तो घमसान की बात नहीं, न गीत गाने, न तालियां बजाने की बात है। यहाँ तो तुम बच्चों को सिर्फ याद करना है। ... तुम कभी हे राम वा हाय भगवान भी नहीं कह सकते ... तुमको और कुछ भी नहीं करना है, सिर्फ आशिक-माशुक के समान बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 11.8.06 रिवा.

''जो सम्पूर्ण समर्पण होते हैं, उनकी दृष्टि-वृत्ति शुद्ध हो जाती है। एक ही शब्द में कहेंगे कि दृष्टि-वृत्ति में रुहानियत आ जाती है अर्थात् दृष्टि-वृत्ति शुद्ध हो जाती है लेकिन किस युक्ति से वह शुद्ध हो जाती है। क्योंकि वे जिस्म को नहीं देखते हैं तो शुद्ध-पवित्र हो जाती है।''

अ.बापदादा 28.11.69

''जिस्म को देखते हुए भी नहीं देखना है। ऐसी प्रैक्टिस होनी चाहिए।... जैसे कोई गूढ़ विचार में होते हैं तो खाते-पीते, चलते ... मालूम नहीं पड़ता कि क्या खाया, कहाँ तक पहुँचा। ... लेकिन वह तब होगी जब जिस्मानी चीज़ को देखते भी जिस्मानी को अलौकिक रूप में परिवर्तन करेंगे।''

अ. बापदादा 28.11.69

समर्पणता और शमा-परवाने

बाबा ने आत्मा और परमात्मा की शमा और परवाने से तुलना की है, जिसका गायन भक्ति मार्ग में भी होता है। परमात्मा रुहानी शमा है, आत्मायें परवाने बन उस पर फिदा होकर जल मरते हैं अर्थात् उसके बन जाते हैं। तो सच्चा परवाना किसको कहा जाता है और वह गुण हमारे में कहाँ तक आये हैं और कैसे हम सच्चे परवाने बनें, उसके लिए भी श्रीमत दी है।

''आज रुहानी शमा रुहानी परवानों को देख रही है। ... जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट-माइट स्वरूप है, वैसे स्वयं भी शमा के समान लाइट-माइट स्वरूप बने हो ?... फर्स्ट नम्बर हैं लव-लीन परवाने अर्थात् बाप के स्वरूप और शक्तियाँ धारण करने वाले ... समा जाने अर्थात् मर मिटने वाले।''

अ.बापदादा 1.2.76

''यह रुहानी शमा और रुहानी परवानों की अलौकिक महफिल है।... इस रुहानी आकर्षण के आगे माया की अनेक प्रकार की आकर्षण तुच्छ लगती है।... यह आकर्षण अनेक प्रकार की दुख-अशान्ति की लहरों से किनारा कराने वाली है।''

अ.बापदादा 14.11.87

''जो सम्पूर्ण परवाने होते हैं, उनके लक्षण क्या हैं और परख क्या है ?... परवाने शमा के स्नेही होंगे, समीप होंगे, सर्व सम्बन्ध उस एक के साथ होंगे और उनमें साहस होगा (साहस वाले ही शमा पर फिदा हो सकते हैं) ... चारों ही बातें अपने सम्पूर्ण परसेन्टेज में धारण करनी हैं।''

अ.बापदादा 3.10.69

समर्पणता और सेवा

तन से समर्पित होकर यज्ञ में रहने का अपना महत्व है परन्तु समर्पणता की सफलता आधार सेवा है। जो भी आत्मायें बाबा की बनती हैं, वे उसके प्रति समर्पित तो होती है परन्तु जो यज्ञ में रहते, सेवाकेन्द्रों पर रहते हैं, उनकी पालना भी यज्ञ से होती है और यज्ञ में धन, साधन-सम्पत्ति बाबा के उन बच्चों के द्वारा आती है, जो बाहर गृहस्थ व्यवहार में रहते समर्पित जीवन में रहते हैं अर्थात् गृहस्थ व्यवहार में रहते स्थूल कमाई भी करते हैं ये अविनाशी कमाई भी करते हैं अर्थात् अपना सब कुछ बाबा समझकर यज्ञ सेवा में लगाते हैं। पद का आधार सेवा है।

''नष्टोमोहा बनना है। पिछाड़ी में तुम इस देह और दुनिया को ही भूल जायेंगे। ... गरीब जो हैं, वे अच्छी सर्विस करते रहते हैं। यह तो पता है ना कि कौन-कौन खाली हाथ आये हैं परन्तु वे

अच्छी सर्विस कर रहे हैं। बहुत कुछ ले आने वाले आज हैं नहीं और गरीब बहुत ऊंच मर्तबा पा रहे हैं।''

सा.बाबा 12.02.09 रिवा.

''मधुबन निवासी अर्थात् जितना बाप से प्यार है, उतना ही सेवा से प्यार। मधुबन निवासी हर सेकेण्ड सेवा की स्टेज पर रहते हैं। ... मधुबन बाप की कर्मभूमि, चरित्रभूमि सो तपस्वी भूमि है। ... मधुवन निवासी हैं मॉडल। ... मधुवन में जिसको देखें, जब देखें, जहाँ देखें गुणमूर्त, शक्तिमूर्त, ज्ञानमूर्त देखें, साधारण नहीं। ... जो भी कर्म करो पहले यह स्लोगन याद रखो कि जो कर्म हम करेंगे, वह सब करेंगे। तो स्वत: ही विशेष कर्म होगा।''

अ.बापदादा 1.2.94 मधुबन निवासी

समर्पणता, सुख और साधन-सम्पत्ति

समर्पणता, परमात्मा का वर्सा, परमात्मा की छत्रछाया, परमात्मा का सहयोग

जो भी बाबा का बनता है अर्थात् उनके प्रति समर्पित होता है, उसको परमात्मा का पवित्रता-सुख-शान्ति, आनन्द का वर्सा मिलता ही है। उस पर उसकी छत्रछाया रहती ही है, उसको उसका सहयोग मिलता ही है फिर भी साधन-सम्पत्ति हर आत्मा को उसके पार्ट अनुसार, उसकी इच्छा-आकांक्षा और पुरुषार्थ अनुसार मिलती है परन्तु विचारणीय है कि सुख-साधनों की प्राप्ति अलग बात है और उससे सुख-शान्ति-आनन्द की अनुभूति अलग बात है। वैरायटी ड्रामा है, उसमें सबका वैरायटी पार्ट है, इसलिए उसके अनुसार साधन-सम्पत्ति में भिन्नता अवश्य होगी। लेकिन जो दिल से समर्पित होता है, उसको सुख-शान्ति-आनन्द की सदा ही अनुभूति होती है।

सत्यता को विचार करें तो समय पर कोई व्यक्ति या सम्पत्ति काम नहीं आती है परन्तु यदि सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा के साथ सही सम्बन्ध होता, उनकी याद होती है, निश्चय होता है तो वह समय अवश्य मदद करता है या कोई को निमित्त अवश्य बना देता है।

समर्पणता का दर्पण

वह सदा अपने को निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प और सुरक्षित अनुभव करेगा।

परमात्मा का बनना माना परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाना। परमात्मा ने अनेक समय पर इस सम्बन्ध में महावाक्य उच्चारे हैं। सृष्टि के विधि-विधान बताये हैं, उनके आधार

पर हम अपनी समर्पणता और सम्पूर्णता की स्थिति को परख सकते हैं।
समर्पणता के आधार पर ही हमारी वर्तमान की प्राप्तियाँ और भविष्य की प्राप्तियाँ होगी।
समर्पित आत्मा की प्राप्तियाँ और अनुभव
समर्पणता और सफलता
समर्पणता एवं यम-नियम
समर्पणता का विधि-विधान
समर्पणता के विधि-विधान को समझकर जो समर्पित होते हैं, उनका ही समर्पित जीवन सफल होता है।
समर्पणता का लौकिक विधि-विधान
समर्पणता का अलौकिक विधि-विधान अर्थात् यज्ञ के नियम-संयम
समर्पणता का यथार्थ ज्ञान और उस पर पूरा निश्चय - जो परमात्मा को पहचान कर उनके बनते हैं, उनको अपना जीवन सदा ही सफल अनुभव होता है।

प्रश्नोत्तरी अर्थात समर्पणता और विचारणीय प्रश्न

Q. क्या यज्ञ में तन से समर्पित होने वाली सभी आत्माओं के लिए यज्ञ उत्तरदायी है ? यदि है तो कहाँ तक और कैसे ?

वास्तव में किसी आत्मा के लिए न यज्ञ उत्तरदायी है और न ही कोई व्यक्ति। सभी तन से समर्पित होने वाली आत्मायें स्वयं ही स्वयं के लिए उत्तरदायी हैं। जिसने जितना अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति यज्ञ में सफल किया होगा, उसको उस अनुसार ही यज्ञ से सहयोग ड्रामा अनुसार मिलेगा। यदि कहाँ सहयोग नहीं मिल रहा है तो हमको निश्चित ही समझ लेना है कि हमने अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति श्रीमत अनुसार सफल नहीं किया है। हमने या तो इनको वेस्ट किया है या इनका दुरुपयोग किया है। क्योंकि परमात्मा का बनकर, ज्ञान की सत्यता को जानकर वेस्ट करने वाले या दुरुपयोग करने वाले को पश्चाताप अवश्य करना होता है। विधि के विधान अनुसार जिस आत्मा का जितना यज्ञ में संचित है या भविष्य में उससे इतनी सेवा होने वाली है, उस अनुसार यज्ञ से उसको सहयोग अवश्य मिलेगा। देह धारण करने और देह के त्याग का भी अविनाशी विधि-विधान है, उसका कोई न कोई कारण अवश्य बनता है, उसको भी भूलना नहीं चाहिए।

Q. सर्वशक्तिवान परमात्मा के प्रति समर्पित होकर भी जीवन में असुरक्षा की भावना क्यों ?

दुनिया में भी अनेक प्रकार का समर्पण होता है - जैसे स्त्री-पुरुष एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं या कहें कि स्त्री, पुरुष के पास समर्पित होती है तो दोनों के समर्पित होने के लिए कोई साक्षी होता है। यथा - अग्नि, ब्राह्मण, कोई देवता, दिशायें और उनको साक्षी करके एक-दूसरे को समर्पित होते हैं और जो सच्चे दिल से समर्पित होते हैं, वे एक-दूसरे का जीवन पर्यन्त ईमानदारी, वफादारी से साथ निभाते हैं। एक-दूसरे के लिए अपना जीवन भी बलिदान कर देते हैं, एक-दूसरे के साथ ही अपने जीवन को सुरक्षित समझते हैं, अच्छा समझते हैं। इसलिए बाबा कई बार मुरलियों में इनके उदाहरण भी देते हैं। परमात्मा सर्व समर्थ है, हमने उनको समर्पण किया है, फिर भी हमारे जीवन में ये असुरक्षा की भावना क्यों ? ये विचारणीय प्रश्न है और विचार करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि जरूर निश्चय की कमी है और हमारे कर्मों का फल और आत्माओं के साथ सम्बन्ध का हिसाब-किताब भी हमको धोखा देता है अर्थात् ऐसे कर्म करने के लिए बाध्य करता है और समर्पित जीवन का सच्चा सुख अनुभव करने नहीं देता है। हमको परमात्मा पर श्रृद्धा और विश्वास दृढ़ निश्चय से अपने कर्तव्य पथ पर सच्चाई और ईमानदारी तत्पर रहना चाहिए। यदि सच्चाई और ईमानदारी से परमात्मा पर श्रृद्धा-भावना रखकर अपने कर्तव्य पथ चलते रहेंगे तो वह हमारी रक्षा अवश्य करेगा परन्तु उस

रक्षा का स्वरूप क्या होगा, कैसा होगा, वह विचारणीय विषय है क्योंकि ये वैराइटी विश्व-नाटक है, आत्माओं का वैराइटी पार्ट है। इस सत्य को भी सदा ध्यान में रखना ही होगा।

Q. वर्तमान में जो मधुवन यज्ञ में तन समर्पित हैं और जो सेवाकेन्द्रों पर तन से समर्पित है, उनकी सुरक्षा की गॉरण्टी क्या है, उसके लिए कौन उत्तरदायी है, वर्तमान परिस्थितियों में तन से समर्पित आत्माओं का क्या कर्तव्य है ?

वर्तमान समय अनेक घटनायें अर्थात् उदाहरण सामने आ रहे हैं, जिनके विषय में विचार करना अति आवश्यक है और इन सभी तन से समर्पित आत्माओं को विचार करके आवश्यक पुरुषार्थ करना ही चाहिए और करना ही होगा। मधुबन यज्ञ में समर्पित होने वालों की देखभाल, बीमारी आदि का प्रबन्ध तो यज्ञ व्यक्ति, उसकी आवश्यकता और स्थिति के अनुसार करता ही है और हमको उसे वैराइटी विश्व-नाटक की नूँध अनुसार स्वीकार करके निश्चिन्त रहकर यथोचित पुरुषार्थ करते रहना है।

सेवाकेन्द्रों पर समर्पित भाई-बहनों के लिए कौन उत्तरदायी है अर्थात् क्या यज्ञ या जोन या सेवाकेन्द्र ? कई भाई-बहनों के ऐसे उदाहरण हैं, जो अपने को समर्पित समझते हैं, परन्तु कोई ऐसी बीमारी आ जाती है, जिसके उपचार का खर्च न वे स्वयं उठाने में समर्थ हैं, न सेवाकेन्द्र समर्थ होता है और न ही जोन या सब-जोन उसको उठाने के लिए समर्थ होता है या उठाना नहीं चाहता है और मधुबन भी ऐसे केसों में जाना नहीं चाहता है क्योंकि यज्ञ का इतना विस्तार हो गया है, जो सम्भव भी नहीं है। इसलिए ऐसे केसों में क्या किया जाये अथवा ऐसे केसों के लिए क्या पूर्व प्रबन्ध किया जाये ?

वास्तविकता ये है कि ऐसी समर्पित आत्माओं को भी हतोत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु सच्चे दिल से पुरुषार्थ करने और सेवा करने की आवश्यकता है क्योंकि जो सच्ची दिल से सेवा करेंगे, उनको परमात्मा की मदद अवश्य मिलेगी, इसमें कोई संशय नहीं है। परन्तु जैसी परिस्थितियाँ हैं या बनती जा रही हैं, उनको देखते हुए हर आत्मा को अपनी शक्ति, स्थिति को समझकर विचार करना चाहिए। सेवा के विस्तार के साथ-साथ उनके पास समर्पित होने वाले भाई-बहनों के लिए ऐसी परिस्थिति को पार करने के लिए या तो जहाँ समर्पित हैं, वे सेवाकेन्द्र, जोन, सब-जोन अपने पास मेडिकल फण्ड रखें या मेडिकल के लिए इन्श्योरेन्स करायें, तब ही इन परिस्थितियों का निदान हो सकता है। इस सबके साथ कर्म और फल का विधि-विधान और विश्व-नाटक की अविनाशी नूँध को अवश्य ध्यान में रखकर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए अर्थात् जो बाबा की श्रीमत अनुसार अपना अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति सफल करता है, उसको परमात्मा की यज्ञ की मदद अवश्य

मिलती है अर्थात् कोई न कोई सहयोगी अवश्य बनता है।

यदि हमारा कर्म-फल संचित है तो हमको यथा योग्य सहयोग अवश्य मिलेगा परन्तु हमको यज्ञ से या किसी व्यक्ति से आशा-आपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। हम परमपिता परमात्मा के प्रति समर्पित हुए हैं, यज्ञ के किसी व्यक्ति के पास नहीं। यज्ञ तो एक बैंक है, उसमें जिसने जितना जमा किया है, उतना या उस अनुसार ही उसको मिलेगा। यज्ञ तो एक माध्यम है, हमको श्रेष्ठ कर्म करने में सहयोग देने के लिए और अपने कर्म का फल देने के लिए। फल तो हर आत्मा को परमात्मा से अपने कर्मों अनुसार मिलन है, जो अवश्य मिलता है।

वास्तविक सुरक्षा आत्मा का अपने श्रेष्ठ कर्मों का संचित फल और परमपिता परमात्मा की छत्रछाया ही है, जो सदा, सर्वदा और सर्वत्र आत्मा की सुरक्षा करती है। उसके लिए पहले से योग का अर्थात् देह से न्यारे होकर परमात्मा की मधुर याद का सफल अभ्यास और सच्चाई-सफाई से दिल से ईश्वरीय सेवा करना अति आवश्यक है। जो अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प, शक्ति ईश्वरीय सेवा में सफल करता है, उस पर परमात्मा की छत्रछाया है ही है अर्थात् उस छत्रछाया में वह सदा सुरक्षित है। उसको किसी अन्य प्रकार की सुरक्षा का संकल्प भी नहीं आ सकता है या आता है।

रोग-शोक, जरा-मृत्यु इस कलियुगी दुनिया में देह के धर्म हैं, जो हर आत्मा के साथ हैं। जरा-मृत्यु तो सतयुगी दुनिया में भी होगी परन्तु वहाँ रोग-शोक नहीं होंगे।

Q. यज्ञ, सेवाकेन्द्र किसी भी आत्मा पर कितना खर्च करेगा या कर सकता है?

इसके लिए कोई निश्चित सीमा नहीं है और न ही एक-दूसरे से तुलना की जा सकती है। सत्यता ये है कि जिस आत्मा का तन-मन-धन से जितना खाता जमा होगा या भविष्य में जमा करने की उसकी उपयोगिता होगी, उतना ही यज्ञ या सेवाकेन्द्र या कोई व्यक्ति खर्च कर सकता है, ये इस विश्व-नाटक का अनादि-अवनिशी नियम है, इसलिए किसी को कोई दोष नहीं दिया जा सकता है। जरा-मृत्य इस देह के धर्म हैं, जो हर आत्मा को समय पर पार करने ही हैं। इस कलियुग में समय का कोई मापदण्ड नहीं है अर्थात् वे कभी भी आ सकते हैं।

Q. विचार करना है कि क्या हमको बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उस पर और उपर्युक्त सभी बातों का ज्ञान, अनुभव और उन पर पूरा निश्चय है?

Q. हम स्वेच्छा से जानकर समर्पित हुए हैं या किसी साधन-सम्पत्ति, व्यक्ति को देखकर या कहने पर समर्पित हुए हैं?

Q. हमारा समर्पण स्वेच्छिक है या किसी शर्त (Voluntary or Conditional) पर आधारित है?

Q. हमको परमात्म की ब्लिस और सहयोग प्राप्त है ? यदि हाँ तो हमारा कर्तव्य क्या है और यदि नहीं तो हम उसको कब और कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

Q. समर्पित जीवन या ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य कब और कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

Q. क्या जिसका सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ परमात्मा साथी हो, जिस पर उसकी छत्रछाया हो, वह असुरक्षित हो सकता है या वह अपने को असुरक्षित अनुभव करेगा ? क्या उसको कोई निकाल सकता है ? फिर भी हम ऐसा अनुभव करते हैं तो उसका कारण क्या है ?

Q. समर्पित जीवन और गृहस्थ में रहते हुए समर्पित अर्थात् ट्रस्टी जीवन में क्या अन्तर है ? दोनों की प्राप्तियों में क्या अन्तर है ?

Q. क्या हम असुरक्षा की भावना को रखकर जिस साधन-सम्पत्ति या व्यक्तियों को हम अपना सहारा समझते हैं, क्या वे समय पर हमारा सहारा बनेंगी ? क्या ये परमात्मा की निन्दा कराना नहीं है ?

Q. क्या समर्पित होना कोई दासता या भिखारीपन है या समर्पित माना सन्यासी अर्थात् शान और सम्मानयुक्त (Graceful) जीवन है ?

Q. समर्पित जीवन में अहंकार-हीनता का क्या स्थान है ?

''कुमारियों को मधुवन अच्छा लगता है, बाप से प्यार भी है लेकिन समर्पण होने में सोचती हैं। जो स्वयं ऑफर करता है, वह निर्विघ्न चलता है और जो कहने से चलता है, वह रुकता है, फिर चलता है।... सोचती हैं - इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है।''

अ.बापदादा 5.12.89

''कुमारियाँ सोचती हैं इससे तो बाहर रहकर सेवा करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रहकर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना, इसमें अन्तर जरूर है। जो समर्पण के महत्व को जानते हैं, वे सदा ही अपने को कई बातों से किनारे होकर आराम से यज्ञ में आ गये हैं।... टीचर्स अपने महत्व को अच्छी रीति जानती हो ना!'' अ.बापदादा 5.12.89

Q. क्या हमारे से कहाँ कोई ऐसा कृत्य तो नहीं हो रहा है, जिसको देखकर दूसरे सन्मार्ग से पथभ्रष्ट हो जायें या सीखकर अपने श्रेष्ठ भाग्य से वंचित हो जायें ?

Q. क्या हम अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कर रहे हैं, जो आध्यात्मिकता की मूल और वर्तमान प्राप्ति है या साधन और सत्ता के आधार पर सुख का अनुभव कर रहे हैं ?

आध्यात्मिकता की मूल प्राप्ति है अतीन्द्रिय सुख, जिसके लिए किसी साधन-सुविधा की आवश्यकता नहीं है, उसके लिए तो सत्य ईश्वरीय ज्ञान और उसकी धारणा की आवश्यकता

है, जो सभी ब्राह्मण आत्माओं को बाबा ने समान रूप से दिया है और उसको अनुभव करने में सभी स्वतन्त्र हैं। साधन-सुविधायें हर आत्मा को उसके किन्ही कर्मों के आधार पर प्राप्त होती है और उन प्राप्त हुई साधन-सुविधाओं का कैसे उपयोग कर रहा है, वह उसके ऊपर निर्भर है। बाबा ने कहा है साधन तो यज्ञ में आयेंगे परन्तु साधना को भूलना नहीं चाहिए। जो साधना और सेवा के लिए साधनों का उपयोग करेगा, वही उनका यथार्थ सुख अनुभव करेगा। यदि साधन-सुविधाओं के उपयोग से यज्ञ में कोई व्यवधान पैदा होता है तो उसके लिए वे ही उत्तरदायी हैं अर्थात् उसका फल भी उनको जाने-अन्जाने भोगना ही पड़ेगा।

Q. यज्ञ में देने वाले धन विश्व-कल्याण की सेवार्थ देते हैं, यदि कोई उसको अपने व्यक्तिगत साधन-सुविधाओं में उपयोग करता है, विलासितापूर्ण साधनों में प्रयोग करता है, जिससे यज्ञ में असमानता, असन्तुष्टता, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्दता, परस्पर सम्बन्धों में कटुता आदि को बढ़ावा मिलता है या पैदा होती है, तो उसके लिए उत्तरदायी कौन? क्या वे जो असमानता, असन्तुष्टता, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वन्दता, परस्पर सम्बन्धों में कटुता से प्रभावित हो रहे हैं या जो अपने को ऐसा अनुभव कर रहे हैं, अपने हीनता महसूस कर रहे हैं या जो निमित्त बने हैं?

वास्तव में दोनों ही उत्तरदायी हैं क्योंकि प्रभावित होने वालों के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और निमित्त बनने वालों के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है और बाबा ने कर्म और फल का विधि-विधान भी बताया है। कर्म और फल के विधि-विधान पर विचार करें तो जिनको यज्ञ में पद या अधिकार मिला है, वह उनके भूतकाल के कर्मों के फलस्वरूप मिला है परन्तु वर्तमान कर्मों से भी कोई बच नहीं सकता है, उसका फल जाने अन्जाने समय पर भोगना ही होगा। जो प्रभावित हो रहे हैं और अपने में हीनता अनुभव कर रहे हैं या हीनता के कारण अकृत्यों में प्रवृत्त हो रहे हैं, उनको भी कर्म का विधि-विधान बुद्धि में रखना ही चाहिए और रखकर श्रेष्ठ कर्मों से कभी विमुख नहीं होना चाहिए। हमारा आदर्श तो प्यारे ब्रह्मा बाबा ही हैं, जिनके लिए शिवबाबा ने भी कहा है फॉलो उनको ही करना है, जो सम्पूर्णता में प्रत्यक्ष हो गये हैं और उन्होंने जो श्रीमत दी है या यज्ञ के पुराने भाई-बहनों के जीवन से जो आदर्श प्रस्थापित किये हैं, उनको ही ध्यान में रखना है। कर्म और फल का विधि-विधान हर आत्मा पर प्रभावित होता है, उससे कोई बचता नहीं है।

Q. बाबा ने मधुबन को विश्व का शोकेस कहा है और मधुबन निवासियों एवं टीचर्स को शोपीस के रूप में बताया है, तो क्या हमारा जीवन ऐसा है, हमारे कर्तव्य ऐसे हैं?

Q. क्या समर्पण आत्मा को संग्रह करना चाहिए या भविष्य की सुरक्षा के साधन इन्श्योरेन्स आदि करना चाहिए?

वास्तव में सबसे बड़ी सुरक्षा तो है परमात्मा पर भरोसा रख, सदा अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति श्रीमत अनुसार ईश्वरीय सेवा में सफल करना चाहिए। जो परमात्मा की श्रीमत अनुसार अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति सफल करता है, उसको ड्रामा अनुसार परमात्मा समय पर अवश्य मदद करता है अर्थात् कोई न कोई निमित्त अवश्य बनता है। अपना तन-मन-धन, समय-संकल्प और शक्ति श्रीमत अनुसार ईश्वरीय सेवा में सफल करना और परमात्मा पर निश्चय और विश्वास रखना ही सबसे अच्छी सुरक्षा है। परन्तु इसके लिए हमको सहनशक्ति, धैर्य भी अवश्य रखना होता है और वैरायटी विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी नूँध को भी बुद्धि में रखना होता है।

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा की अपनी शक्ति और स्थिति है, उस पर विचार करके कर्म करना चाहिए, जिससे बाद में या समय पर कोई संकल्प न चले।

Q. समर्पित होकर यज्ञ में रहकर निजी स्वार्थ के लिए या लौकिक सम्बन्धियों के लिए धन्धा करना या यज्ञ का पैसा उसके प्रयोग करते, वह यथार्थ है, उसका परिणाम क्या होगा?

Q. जो यज्ञ में रहकर अपने को असुरक्षित अनुभव करके यज्ञ का पैसा निकालकर बाहर जमा करते, उनकी स्थिति क्या होगी? सर्वशक्तिवान परमात्मा का बनकर भी अपने असुरक्षित महसूस करे, तो उसको निश्चयबुद्धि कहा जायेगा, उसके ऐसे कर्तव्यों से परमात्मा का नाम बाला होता है या बदनाम होता है?

Q. यज्ञ में एक-दूसरे की या बाहर के व्यक्तियों की साधन-सम्पत्ति देखकर लालायित होते, अपने में हीनता महसूस करते ... उनकी स्थिति क्या है और उसका फल क्या होगा?

वास्तव में देखा जाये तो ये तीनों ही प्रकार के व्यक्ति समर्पित कहलाने के अधिकारी नहीं हैं क्योंकि जो सर्वशक्तिवान परमात्मा को यथार्थ रीति जानकर समर्पित होगा, उससे ऐसे कृत्य हो नहीं सकते। एक बार किसी ने जगदीश भाई के किसी सम्बन्धी ने उनको कहा कि भले तुम यज्ञ में रहो परन्तु आप कुछ ट्रान्सलेशन का कार्य करते रहो तो आपको कुछ आमदनी होती रहेगी। तो जगदीश भाई ने उनको कहा कि ये जीवन सर्वशक्तिवान परमात्मा का हो गया है, अब ये हाथ कोई भी ऐसा लौकिक कर्म कर नहीं सकते। ब्रह्मा बाबा ने भी बाबा का बनने के बाद पैसे को हाथ भी नहीं लगाया।

Q. यज्ञ में समर्पित होकर भी विकार में जाते या विकार की इच्छा रखते, क्या वे सच्चे समर्पित हैं?

परमात्मा के प्रति समर्पित आत्मा कब विकार में जा नहीं सकती। जो बाबा का बनकर विकार में जाते हैं, वे वास्तव में ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहलाने के भी अधिकारी नहीं हैं। बाबा ने अनेक

बार कहा है कि वे शूद्र सम्प्रदाय के हैं। तो शूद्र सम्प्रदाय वाला यज्ञ में समर्पित कैसे हो सकता है।

समर्पित जीवन के लिए बाबा के विविध महावाक्य

''सदैव यह स्मृति में रखना कि मैं विजयी माला का विजयी रतन हूँ। इस स्मृति में रहने से फिर कभी हार नहीं होगी। ... सभी बलि चढ़े ? तो महाबलि बनकर जा रहे हो या अभी भी कुछ मरना है ? महाबली के आगे माया का बल चल नहीं सकता, ऐसा निश्चय अपने में धारण करके जा रहे हो ना।''

अ.बापदादा 5.12.70

''समस्यायें तो आयेंगी लेकिन मुझे पहाड़ को रुई बनाना है।... सभी ने बाप को प्यार से बुलाया... उतना ही बाप भी प्यार से आये। प्यार की निशानी है कि स्नेही की कोई छोटी सी गलती देखी नहीं जाती।''

अ.बापदादा 22.4.09

''अव्यक्त स्थिति आठ घण्टा बनाना बड़ी बात नहीं है। अव्यक्त की स्मृति अर्थात् अव्यक्त स्थिति। ... सर्विस करते भी अव्यक्त के स्नेह को, सम्पर्क को न छोड़ो। सम्पूर्ण स्टेज तो नजदीक रहने की है।''

अ.बापदादा 18.6.70

''हटना कमजोरों का काम है। शिवशक्तियाँ अपने को मिटाती हैं, न कि हटती हैं।... इस ग्रुप से देखेंगे कितनों का सम्पूर्ण समर्पण का समारोह होता है।... जितना बापदादा के स्नेही हो, उतना फिर सहयोगी भी बनना है। सहयोगी तब बनेंगे, जब अपने में सर्वशक्तियों को धारण करेंगे।... सर्व शक्तियाँ अपने में भरकर जायेंगे तब हिसाब-किताब चुक्तू कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 11.06.70

''निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति ... बाप शमा है। उस पर फिदा होने वाले बच्चे जानते हैं - बरोबर बेहद के बाप से हमको बेहद का वर्सा मिलता है। ... जो फिदा होते हैं, वे वर्सा पाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। पुरुषार्थ से ही प्रॉलब्ध मिलती है।''

सा.बाबा 10.11.08 रिवा.

''बाबा खास समझा रहे हैं, जो पिछाड़ी को ऐसे नहीं कहे कि हमारा पद ऐसा क्यों हुआ ? ... इसलिए बाबा सावधान करते हैं। समझना चाहिए कल्प-कल्पान्तर के लिए हमारा पद भ्रष्ट हो जायेगा। बाबा को तो रहम पड़ता है, इसलिए हर बात की रोशनी देते हैं।''

सा.बाबा 22.10.08 रिवा.

''अगर यह पक्का याद रखेंगे कि हम तो सम्पूर्ण समर्पण हो ही गये तो यह अविनाशी याद आपको अविनाशी बनाकर रखेगी। अगर आप कुछ डगमग हुए तो फिर समस्या डगमग

करेगी।''

अ.बापदादा 28.11.69

''ऊंच ते ऊंच सेवा है, बाप का परिचय देना। ... बच्चों को यह बनना है तो सेवा भी करनी चाहिए ना। इनको देखो, यह भी लौकिक परिवार वाला था ना। इनसे बाबा ने कराया। इनमें प्रवेश कर इनको भी कहते हैं, तो तुमको भी कहते हैं कि यह करो।... बैठे-बैठे कहा - यह छोड़ो, यह तो छी-छी दुनिया है, चलो वैकुण्ठ।''

सा.बाबा 24.06.09 रिवा.

''बाबा ने कहा - अब वैकुण्ठ का मालिक बनना है। बस, वैराग्य आ गया। सब समझते थे, इनको क्या हुआ है। इतना अच्छा जबरदस्त फायदे वाला व्यापारी यह क्या करते हैं। पता थोड़ेही था कि यह क्या जाकर करेंगे। छोड़ना कोई बड़ी बात थोड़ेही है। बस, सब कुछ त्याग दिया, और सबको भी त्याग कराया। बच्ची को भी त्याग कराया। अब यह रुहानी सेवा करनी है, सबको पवित्र बनाना है।''

सा.बाबा 24.06.09 रिवा.

अमृत-धारा

''जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।'' अ.बापदादा 15.4.92

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501

राजस्थान, भारत

मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org